भक्ति में भगवन्त, जैसे गंध फूलों में,
करोड़ों में एक ही, समझे सन्त महंत,
कल्पित निकाल मन से, 'सामी' हो बलवन्त
जिसका आदि न अन्त, वह दीपक देखे देह में।

सामी के श्लोक

अनुवादक : खीमन यू. मूलाणी

सामी के श्लोक

अनुवादक

खीमन यू० मूलाणी

प्रकाशक

लक्ष्मी पब्लिकेशन

न्यू – ए. 14/134

बैरागढ़ , भोपाल – 462 030

सामी के श्लोक

अनुवादक : खीमन यू. मूलाणी

वर्षः : 2005 ई.

प्रथम संस्करण

मूल्य : रू0 350/– (रू0 तीन सौ पचास केवल)

प्रकाशक : लक्ष्मी पब्लिकेशन,
न्यू ए–14/134, बैरागढ़, भोपाल 462 030
मोबाईल : 09827343735

मुद्रक : शुभम इण्डस्ट्रीज
गल्लामण्डी रोड, भोपाल–462 008
फोन : 0755 – 2765042

सामी 1743—1850



अर्पित

ईश्वर, ख़ुदा, गाड को

—खीमन यू0 मूलाणी

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ
संख्या अनुवादक की ओर से : खीमन यू. मूलाणी	–	6
सामी के श्लोकों की एतिहासिक पृष्ठि भूमि एक दृष्टिपात : मोहन गेहाणी	–	8
सामी के श्लोकों का तात्पर्य : ऋषि डयाराम गिदूमल	–	14
भाग – 1		
माया (अ)	–	17
माया (ब)	–	25
अविद्या (अ)	–	40
अविद्या (ब)	–	49
मूर्ख (अ)	–	54
मूर्ख (ब)	–	63
अज्ञानी (अ)	–	68
अज्ञानी (ब)	–	76
विश्वासी (अ)	–	104
विश्वासी (ब)	–	112
भावना (अ)	–	118
भावना (ब)	–	119
भाग – 2		
साधु महिमा (अ)	–	122
साधु महिमा (ब)	–	129
सत्संग महिमा	–	134
साधु संगति महिमा (अ)	–	154
साधु संगति महिमा (ब)	–	158

		पृष्ठ
गुरूमुख (अ)	–	163
गुरूमुख (ब)	–	186
ईश्वर महिमा (अ)	–	193
ईश्वर महिमा (ब)	–	198
उपदेश (अ)	–	204
उपदेश (ब)	–	217
भाग – 3		
भक्ति (अ)	–	227
भक्ति (ब)	–	230
ललक (अ)	–	234
ललक (ब)	–	237
प्रेम	–	240
स्नेही	–	247
मुहब्बत	–	255
अनुराग	–	265
अनुरागी	–	269
सुहागिन	–	286
छह अठारह चार	–	291
लक्षण	–	297
फ़कीर	–	315
दर्दमंद	–	317
अवधूत	–	324
साधुजन	–	329
सन्त	–	333

अनुवादक की ओर से.........

सिन्ध का शिकारपुर नगर मध्य एशिया में व्यापार का प्रमुख केन्द्र रहा है। इसी नगर में वर्ष 1743 ई0 में सेठ बच्चोमल के घर एक पुत्र रत्न का जन्म हुआ था, जिसका नाम चैनराय रखा गया थ। ये लोग लुंड जाति के थे। इनका उपनाम (Surname) डातारामाणी था।

चयनराय बचपन से ही एकांत प्रिय तथा धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति थे। वे जैसे जैसे बड़े होते गये। उन्हें बच्चे गुरू की तलाश सताने लगी। अन्त में 30 वर्ष की आयु में उन्हे बहावलपुर राज्य के अहमदपुर गांव के स्वामी मेघराज नामक बच्चे सन्त मिल गये। उन दिनों वे शिकारपुर नगर के हाथी दर नामक स्थान पर महाराज हेमनदास ब्रह्मण की मढी में रह रहे थे। स्वामी मेघराज ब्रह्मण जाति के थे। चैनराय धीरे धीरे अपने गुरू के रंग में रंगते चले गये। उन्होंने अपने गुरू के नाम से भक्ति रस से परिपूर्ण कविताए लिखना प्रारम्भ किया, जिन्हें बाद में **'सामी के श्लोक'** कहा गया। श्री चैनराय ने श्लोकों में अपने गुरू के तीन नाम 'सामी' 'बाभन' तथा मेंघो का उपयोग किया है।

चैनराय किराने की दुकान चलाते थे। कागज़ वे छोटे छोटे टुकडों पर श्लोक लिख कर मटके में डालते जाते थे। उनके जीवन काल में ये श्लोक मटके में ही पडे रहे। वर्ष 1850 ई0 में उनके देहावसान के पश्चात् ये श्लोक प्रकाश में आये। सर्वप्रथम दीवान कोडोमल चंदन मल खिलनाणी' को वर्ष को लगभग 1885 ई0 के आसपास ये श्लोक मिले।

शिकारपुर के नंदी बाजार में जुगल प्यारी थांव के सामने चैनराय का घर था, जहां उनका 40 वर्षीय पुत्र घनश्यामदास रहता था। दीवान कौड़ोमल चंदनमल खिलनाणी ने ये श्लोक उन्हीं से क्रय किये।

सामी के सम कालीन कवि सचल सरमस्त (वर्ष 1739 ई0 से 1829 ई0 तक) दलपत (वर्ष 1749 ई0 से 1832 ई0 तक) बेदिल (वर्ष 1814 ई0 से 1872 ई0 तक) तथा गुल (वर्ष 1810 ई0 से 1857 ई0 तक) थे। परन्तु सामी, शाह अब्दुल लतीफ भिटाई के काव्य से भी प्रभावित हुए थे।

गुरू के देहान्त के पश्चात् वे कुछ वर्षों तक अमृतसर में स्वर्ण मन्दिर के आसपास किराये के मकान में जा कर रहे, जहां उन्होंने कई श्लोक लिखे, परन्तु उन्होने अन्तिम समय अपने गृह नगर शिकारपुर में ही बिताया। उनके निवास स्थान पर स्थित एक कुएं को आज भी ''सामी का कुआं'' नाम से पुकारा जाता है।

चैनराय को जब स्वामी मेंघराज जैसा पूर्ण सतगुरू मिला था, कहते हैं तब उनके मुख से स्वतः एक श्लोक निकल गया था, जो इस प्रकार थाः-

''सतगुरू जैसा शाह, **कहीं भी देखा** नहीं,

जिसने दे दिया पूरबी, आत्म **धन अथाह**,

पूछी नहीं जात पात, और न **पूछी राह**,

कर दिया मन अचाह, 'सामी' उसने क्षण में''।

'सामी' ने कहा है कि ''**वेदों की वाणी, मैं सिंधी में सुना रहा**।''

इसलिये मेरे मन में यह इच्छा उत्पन्न हुई थी कि 'सामी' के इस अमूल्य ख़ज़ाने वेदों की वाणी से हिन्दी भाषी भारतीयों तथा सिंधियों की नई पीढ़ी जो अपनी मातृभाषा लिख पढ़ नहीं सकती, को भी परिचित करवाया जावे।

छंद बद्ध कविता का अन्य भाषा की छन्द बद्ध कविता में अनुवाद करना कितना कठिन कार्य है, यह बात मुझे तब महसूस हुई, ब मैंने 'सामी के श्लोक' अनुवाद करना प्रारम्भ किया, तब मैंने पाया कि 'सामी' की अपनी एक अलग विशुद्ध सिन्धी लेखन शैली है। उन्होंने श्लोक लिखने में मात्रिक छंद का प्रयोग किया है, परन्तु श्लोकों में मात्राओं की संख्या अलग अलग है। संभवतः इसी कारण पारखियों ने इन्हें दोहा, सोरठा अथवा कोई अन्य नाम न देकर श्लोक कहा है। इसलिये मैंने प्रत्येक श्लोक में उतनी ही मात्राओं का प्रयोग किया है, जितना 'सामी' ने सिंधी भाषा में लिखित मूल श्लोकों में किया है। युति भी उसी स्थान पर लगाई गई है। 'सामी' के श्लोक तो हज़ारों की संख्या में और भी हैं। परन्तु मैं जितने भी श्लोक अनुवाद कर पाया हू, वे यहां प्रस्तुत कर रहा हू। मैं उन सभी सज्जनों विशेषकर सर्व **श्री घनश्यामदास दयारामाणी '' गैबी '', तथा उधमदाम कटेजा**, का आभारी हू, जिन्होंने इस पुस्तक को आप तक पहूँचाने में मेरी तन मन से मदद की हैं। मैं अनुवाद के इस कार्य में कितना सफल हुआ हू, इसका निर्णय तो पाठक ही कर सकते हैं।

इस प्रकाशन की सार्थकता तभी सिद्ध होगी, जब सिन्धी समाज की नई पीढ़ी इस पुस्तक को पढकर लाभ उठायेगीं तथा भारतीय जन मानस में सिन्धी समाज की छवि बदलेगी।

– खीमन यू0 मूलाणी

सामी के श्लोकों की एतिहासिक पृष्ठ भूमि

– एक दृष्टिपात

सिंधी कवियों की त्रमूर्ति, शाह अब्दुल लतीफ भिटाई, सचल सरमस्त और सामी, सिंधी जाति, सिंधी भाषा, सिंधी साहित्य, सिंधी संस्कृति अथवा सिन्धयत के अमरत्व की प्रतिभूति हैं। इन तीनों कवियों में सामी अन्तिम कड़ी है। यहां मैं सामी के जीवन के विवरण से बचकर इन तीनों कवियों की तत्कालीन कविता के प्रमुख तत्वों की बात करूंगा, जिसने इन तीनों कवियों को अमरत्व प्रदान किया है।

शाह और सचल सिंध के इतिहास में कल्होड़ों के शासन काल में जन्में और सामी काफ़ी समय मीरों के शासन काल में भी जीवित रहे। यह वही समय था जब मुग़ल सल्तनत समाप्त हो रही थी। स्वदेशी शासन अपने पैर जमाने का प्रयत्न कर रहा था। आन्तरिक रूप से अमीर लोगों की साज़िशों का बाज़ार गर्म था। एक दूसरे पर चढ़त और रस्साकशी चरम सीमा पर थी। विदेशियों नें प्रत्येक कमज़ोरी का लाभ उठाने का प्रयत्न क़िया। नादर शाह और अहमद शाह अब्दाली ने सिंध पर आक्रमण किये और सम्पूर्ण भारत में अंग्रेज़ों ने अपना खेल खेलना प्रारम्भ कर दिया था। सिंध के लिये यह उठा पटक का समय था। यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि संकट काल की दो उलटी प्रतिक्रियाएं होती हैं। मानव, या समाज टूट जाते हैं और व्यक्तिगत तौर पर सामूहिक मूल्य पाश्विक सतह – निम्नतम सतह तक पहुंचते हैं, जहां कायरता, बाहुबल के रूप में प्रकट होती है, अत्याचार और असहिष्णुता, शंका और तीव्र प्रवृति, घृणा और मन मुटाव हावी हो जाते हैं। दूसरी ओर भाईचारा, सहानभूति, सहिष्णुता, ईमानदारी , सच्चाई और समाज के जो शक्तिशाली एवं मानवीय मूल्य हैं वे अपनी जड़ें जमाना प्रारम्भ कर देते हैं। ये आपातकाल में सहायक होते हैं। यह विरोधाभास समाज के निर्माण में भी प्रकट होता रहा है। युद्धों, आक्रमणों, शक्ति के युद्ध का प्रभाव, शासक वर्ग पर पड़ता रहा है, इस सतह पर शक्ति के मापदंड और आंकड़े बदल जाते हैं और जनता तो धरती की घास की तरह रही है जिसे सदैव कुचला गया है। वह समाप्त होता है फिर अपने आप कुचलने के लिये उत्पन्न हो जाता है। पृथ्वी के इस घास के सुख, दुख, अकाल, बाढ़, भूख, बीमारियां, मृत्यु सब एक जैसे होते हैं और सामूहिक होते हैं। उनकी एतिहासिक परम्पराएं, उनके अनुभव एक जैसे होते हैं। उनके मूल्य भी·एक जैसे होते हैं। शक्ति, शुष्क भाईचारे की क्या आवश्यकता? शक्तिशाली को न्याय और दया की क्या आवश्यकता? इन मूल्यों की आवश्यकता तो जनता को होती है। उसे ही परमेश्वर के नाम पर दया की आवश्यकता पड़ती है। इस प्रकार एक संस्कृति राज दरबार की होती है। जिसमें ठाठ बाठ और दबदबा होता है। राजाओं के सफल युद्धों का प्रभावशाली और सुन्दर शब्दों में वर्णन होता है।

नख शिख वर्णन वाली व्याभीचारी कविताएं होती हैं। दूसरी ओर जनता की संस्कृति होती है जिसमें झरने के संगीत का प्रवाह होता है। टहनियों और फूलों के झूलने का नृत्य

होता है, प्रेम का जादू और दर्द की कराह होती है और होते हैं सपने, किस्से कहानिया, दत कथाए, जिनमे दुर्बल परन्तु ईमानदार अकेला राजकुमार झूठ और अत्याचार का दुर्ग जीतकर मनमानी राजकुमारी प्राप्त करता है।

जिस समय शाह, सचल और सामी लिख रहे थे, उस समय कल्होडों के राज दरबार मे पचास से अधिक कवि अपने रचना कर्म में व्यस्त थे। सभी फारसी भाषा में कविता करते थे, जो दरबारी भाषा थी। वे दरबारी कवि थे। उनका क्या मान सम्मान और दबदबा रहा होगा यह सरलता से समझा जा सकता है। ऐसे समय में शाह और सचल जनता की भाषा मे जनता के बीच रहकर लोक कथाओं के चरित्रों पर आधारित कविता कर रहे थे। ये लोग जनता की उम्मीदों, आकाक्षाओं, भय शंकाओं और सपनों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। वे सिन्ध की धरती की घास बन कर घास से मिल कर एक हो गये थे, और इस प्रकार स्वयं तो अमर हुए परन्तु सम्पूर्ण कौम को अमरत्व प्रदान किया।

इन कवियों ने अपने समय के लोगों की सामान्य प्रकृति अर्थात् लोक भाव को युगबोध से मिला कर एक कर दिया।

युगबोध की बात से एतिहासिक क्रम का एक दूसरा सूत्र भी लागू होता है, जिसका सक्षिप्त में उल्लेख करना आवश्यक है। आदि काल से मानव अपने से प्रश्न पूछता रहा है कि वह स्वयं क्या है? क्यों है? प्रकृति, जो कभी उसकी साथी है, कभी शत्रु है, उससे उसका क्या सम्बध है? मानव उत्पन्न होता है और मर जाता है, यह जन्म और मरण की क्रिया अटूट है। मृत्यु के बाद मानव कहा जाता है? आखिर इस प्रकृति का कोई अर्थ कोई दिशा है। इस सृष्टि के पीछे कोई शक्ति है जो इसे सचालित करती है। वह कौन सी शक्ति है? उसका कोई रूप, कोई आकार ....इस प्रकार मानव एक तलाश में चलना प्रारम्भ करता है। तलाश एक वास्तविकता की, तलाश एक सत्य की। तब मानव के सामने आँती है जन्मदाता, ब्रह्म, भगवान की कल्पना। यह कल्पना केवल मानव ही कर सकता है। कोई पशु या पछी नही कर सकता। फिर उसे समझना, परखना, उससे निकटता का अनुभव, उस ईश्वर, उस सत्य तक कैसे पहूंचा जाय? वह देखता है, यदि कोई किसी अधिकारी के निकट है, किसी जमींदार का कर्मचारी है तो वह शक्तिशाली है। यदि कोई जमींदार किसी मंत्री के निकट है तो वह भी उसकी शक्ति की छाया में शक्तिशाली है और यह इस निकटता के कारण कईयो पर शासन कर सकता है। इसलिये ईश्वर ब्रह्म भगवान की निकटता से कितनी न शक्ति प्राप्त होगी। इस प्रकार जीवन को अन्तिम उद्देश्य मिल जाता है – ईश्वर प्राप्ति।

इस ईश्वर प्राप्ति की राह में भी दो पृथक मार्ग प्रकट हुए। एक दिल का मार्ग और दूसरा मस्तिष्क का। जिस मार्ग पर मस्तिष्क चला उसे कहा गया ज्ञान मार्ग और जो मार्ग दिल से चला उसे कहा गया भक्ति मार्ग। मस्तिष्क को प्रत्येक बात सीखनी, समझनी और परखनी होती है, परन्तु दिल प्यार करना किस से सीखती है? प्यार तो अपने आप हो जाता है।

उपरोक्त दोनो वर्गो/गिरोहो ने अलग अलग रास्ते अपनाये। शासक वर्ग और उससे सबधित पुरोहितो ऋषियो मुनियो ने ज्ञान मार्ग अपनाया और इस धरती की गरीब जनता, अर्थात् इस धरती की घास ने भक्ति मार्ग अपनाया। एक वर्ग ने मस्तिष्क से समझने का प्रयत्न किया और दूसरे वर्ग ने दिल और सूझी से अनुभव करने का प्रयत्न किया। परन्तु यह कदापि नही समझना चाहिये कि इन दोनो मार्गो का कभी भी कहीं मिलाप नही हुआ और दोनों मार्ग विपरीत दिशा मे चलते रहे। दोनो मार्गो का आपस मे रेल मेल और समय समय पर एक दूसरे पर प्रभावशील होने के जीवन के सामान्य प्रवाह की क्रिया ज्या स्वाभाविक ही रहा और रहेगा। हा, इतिहास मे कभी कुछ ज्यादती के उदाहरण अवश्य मिलेंगे।

मैं क्या हूं? क्यो हूं? इस सृष्टि की क्या वास्तविकता है? क्या सच है? इस जिज्ञासा वश वेद उत्पन्न हुए। उपनिषद् उत्पन्न हुए। मेरा मेरे भाई से, मा बाप से ,पडोसी से कैसा संबंध होना चाहिये। समाज को चलाने के लिये कौन सा कार्य करना चाहिये। आपसी रिश्ते किस बुनियाद पर चलें। इन पम्पराओ को एक स्थान पर इकट्ठा किया, मनु नामक ऋषि ने। तैयार हुई मनुस्मृति। राजाओ और सम्राटो को किस प्रकार राज कारोबार चलाना चाहिये, इन पम्पराओ के ज्ञान को कौटल्य ने अपने अर्थशास्त्र मे लिपिबद्ध किया। शारीरिक आनन्द लेने और शक्तिशाली देह बनाने का वर्णन वात्सायन ने किया कामसूत्र मे। योग की क्रियाओ का वर्णन किया पातंजली ने। कल्पनाओ को पख लगा कर रगीन चित्रो से चित्रित किया प्राचीन काल के ऋषियो मुनियो ने। उन्होने राजाओ महाराजाओ की बातो को पौराणिक कथाए बनाया, जिनका आनन्द हर समय आमो खास ने लिया।

समय के चलते हर प्रकार के व्यवहार हेतु यथार्थता (Legitimacy) को ध्यान मे रखकर राजाओ और पुरोहितो की साझेदारी धर्म के आवरण को आगे लायी ,जिसके कारण धर्म के आतकवाद और कट्टरपन्न का शिकार हुई निरीह जनता। समय रहते दर्शन शास्त्र ने चरित्र का स्थान लिया। अध विश्वास सभरे रीति–रिवाजों में ही शासक वर्ग को जनता को अशिक्षित रखने का लाभ मिलता रहा। ऐसी स्थिति मे भारत की हिन्दू जनता ने भक्ति मार्ग तथा मुस्लिम जगत की जनता ने सूफी मत को जन्म दिया। यहा मेरा उद्देश्य भारत के सूफी मत तथा भक्ति आदोलन के इतिहास का वर्णन करना नही है, अपितु उद्देश्य यह हैं कि सक्षिप्त मे यह बताऊ कि सिंध मे शाह सचल सामी किस पृष्ठ भूमि मे उत्पन्न हुए।

वास्तव मे ये लोग निर्धन बेबस और बेसहारा लोगो को ढाढस और हिम्मत बढ़ाने की लहर जो भारत के अन्य भागो मे पहले ही प्रारम्भ हो चुकी थी, उसी श्रखला का भाग थे। ये लोग इस भारतीय लोक कहावत के हिस्से थे कि–

"जनता की काटेंगे पीर, तुलसी, मीरा, सूर कबीर ".।

[illegible] भिटाई सिंध के सर्व श्रेष्ठ कवि तो है ही परन्तु उन्हे ससार के चन्द महान [illegible] जा सकता है। वे स्वय मुसलमान परिवार मे जन्मे थे परन्तु वे वर्षो तक हिन्दू [illegible] सन्यासियो के सग मे रहे। उन्होने सिंध,कच्छ, थार रेगिस्तान का [illegible] जहा सिन्धी भाषा बोली जाती है।

उसने जीवन के असख्य रग परखे, जाचे और वे अनुभव अपनी कविता मे उडेलकर एक अद्वितीय सृष्टि का निर्माण किया। शाह की कविता अपने आप मे एक सुन्दर प्रकृति का अस्तित्व है। उनकी कविता प्रेम, सौंदर्य, विरह, तलाश, खुशी, दुख और अन्त मे उम्मीद मे कटु सत्य से एकत्व का महाकाव्य है। ध्यान देने योग्य विशेष बात यह है कि सूफी कवियों की भाति और भक्ति काल के कवियो की तरह इन की कविता में गुरू का कोई उल्लेख नही है। कवल अपन प्रियतम से एक हो जाने की यात्रा, बिछोह और तलाश की है बात है। वे कोई सीख नही देते परन्तु अन्त मे कहते है कि :–

"घुस ज्यों अपने आप में, रूह से की पहचान,
न थे पहाड देस में और न केची विद्यमान,
पुन्हू बनी स्वय जान, ससुई थी तो दर्द थे।"

फिर सोचता है, क्या यह अन्तिम लक्ष्य है। यदि हा तो फिर आश्चर्य किस बात का ? फिर घोषणा करता है।:–

"मेहर वही सोहनी,, घुमक्कड़ भी वही,,
है यह पूरी ही,, बात बड़ी रहस्य मयी,"।

इस प्रकार अन्वेषण, तलाश, ब्रह्म के विचार, की भांति पूर्ण नहीं है। शाह को मानवता का कवि कहा जा सकता है। शाह सूफी मत, सन्त कवि इत्यादि लेबलों से बहुत ऊंचे हैं।

सचल सरमस्त मूलतः सूफी कवि हैं। परन्तु अनकी विद्रोह की विशेषता, इन्हे सूफी कवियों से अलग खडा करती है, और इस प्रकार सिध में सुफी मत एक कदम आगे बढा और अपनी विशेष पहचान उत्पन्न की । हां लेकिन सचल किसी सीमा तक गुरू के रोल से इन्कार नहीं करते है। कहते हैं

" सचल मैं न्योच्छावर सतगुरू पर,
जिसने प्रभु का जोश जगाया।"

परन्त सचल तो प्रसिद्ध इस बात के लिये हैं किः–

" कोई कुछ भी कहे, कोई कुछ भी कहे,
मैं जो भी हूं, मैं वो ही हूं। "

और

" न मैं पानी, न आकाश न सूर्य ...."

सामी को इन कवियो की अन्तिम कडी माना जाता है। जिसने हिन्दू दर्शन शास्त्र ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग का अनोखा मेल प्रस्तुत किया।

सामी के रहते ही, सिध में एक विचित्र लहर उठी, जिसका रूप और प्रभाव ६ र्मिक था परन्तु कारण राजनैतिक था।

गुरूनानक देव भारत के बडे सन्तो में से एक है, जिन्होन इतिहास पर एक अमिट प छोडी हैं। उनके अनुयाइयों ने दलित जनता की ओर से मुगल शासको से खूब टक्कर

ली। कुर्बानियां दी। इस प्रकार पंजाब के सामान्य लोग किसान, लुहार सुतार और अन्य दलित व कुचले हुए लोग एक होकर अत्याचार के विरूद्ध लडते रहे। दसवे गुरू, गोबिद सिंह ने दो क्रन्तिकारी निर्णय लिये। एक यह कि उसने दलितों को शेर की उपाधि ''सिंह'' देकर उनकी अलग पहचान बनाई, और दूसरा सदियों से प्रचलित प्रसिद्ध लोक कवियों की रचनाओं को गुरूनानक और अन्य गुरूओं की बानी के साथ मिला कर आदि ग्रन्थ तैयार किया और किसी व्यक्ति के स्थान पर उस ग्रन्थ को गद्दी पर विराजमान किया।

सामी के समय में पंजाब पर राजा रंजीत सिंह का शासन था, और सिन्ध में मीरों का शासन था। अंग्रेजों ने राजा रंजीतसिंह को निर्देश दे रखा था कि वह सिन्ध के अमीरों को आंख दिखाया करे। उद्देश्य यह था कि मीर लोग सदैव भयभीत रहें और इस प्रकार वे अंग्रेजों के मोहताज बने रहें। इस स्थिति में दीवान गिदूमल ने मीरों से राजा रंजीतसिंह को प्रसन्न करने हेतु हैदराबाद नगर की एक मुख्य गली और हर गली में एक गुरूद्वारा स्थापित करने की अनुमति मांगी। मीरों को यह अनुमति प्रदान करनी पड़ी। और फिर देखते ही देखते प्रत्येक गांव और बस्ती में जहां हिन्दू बसे थे, वहां गुरूद्वारा स्थापित हो गया। सिंध में गुरूनानक और अन्य संन्तो की शिक्षाओं को स्वीकार करने की ज़मीन पहले से ही उपलब्ध थी। शाह और सचल ने कट्टरपन्न के विरूद्ध भाईचारे, एकता की हवा चला रखी थी। हिन्दू अल्पसंख्यक थे। गुरू ग्रंथ साहब की शिक्षा सूफ़ी मत के अनुरूप थी। अतः लोगों को भी चारित्रिक सहारा मिला और पंजाब के बाद गुरू ऩानाक देवजी को भी अधिक से अधिक मान्यता सिंध में ही मिली।

इस वातावरण में सामी ने अपने जीवन का अधिकतर भाग अमृतसर में बिताया। वह गुरू ग्रंथ साहब से बहुत प्रभावित हुआ। परन्तु यह मानना पड़ेगा कि उसका रूझान दर्शन शास्त्र की ओर अधिक था। क्योंकि उसने स्वयं कहा है– '' **वेदों की वाणी, मैं सिंधी में सुना रहा।** '' उसकी कविता के मुख्य विषय है, माया, सत्सग और प्यार।

गीता में एक बात कही गई है। अर्जुन को ज्ञान देते समय भगवान कृष्ण अपना मुख खोलकर सम्पूर्ण ब्रह्मांड की लीला उसे दिखाते हैं। उसके अनुसार हम लोग यह जो कुछ देखते हैं, अनुभव करते हैं, उसका कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं हैं। यह है माया/ एक दिखावा है। एक बार यह बात मान भी ली जावे तो एक आवश्यक प्रश्न उठ खडा होता है कि यदि सब माया है, तो क्यों है ? ऐसी स्थिति में मानव को क्या करना चाहिये ? क्या फिर कोल्हू के बैल की तरह जहां से निकले थे, वहीं पहुच जायें ? परन्तु जीवन का एक प्रवाह है। प्रवाह में तीव्रता है। सूर्य, चंद्रमा एव तारे चल रहे हैं। कोई एक जगह खडा नही है। इसलिये मानव को भी चलना है, और इस चलने को उद्देश्य प्रदान करना हैं । यह उद्देश्य है इस सम्पूर्ण माया के पीछे छिपी वास्तविकता, सत्य, शक्ति की खोज, ईश्वर की खोज..............और अन्त मे मिलाप। यह एक उद्देश्य बन जावे और अन्त में मंजिले तय करते करते, चलते चलते, अलग मार्ग अपनाते, मानव ऐसी ऊची मजिल पर पहुचे कि अन्त मे उसे अनुभव हो कि वह जिसे ढूढ रहा था, वह खुद ही है। वह ईश्वर उसके अदर है। उसे ये सब कष्ट सहने के बाद यह सब समझ कर निराशा होगी या उसे आनन्द की प्राप्ति होगी ?..................

नही , वह तो खुशी और गम में सभी प्रकार की मनोवृतियों से ऊपर उठ जायेगा , और यात्रा के अलग अलग पडावों पर पहुंचते हुए समस्त मूल्यों, सही, गलत, सत्य, असत्य सफेद, काला इत्यादि के प्रश्न तो उठेंगे ही................और यह यात्रा प्रत्येक व्यक्ति की की अपनी निजी एवं व्यक्तिगत हैं। मूल्यों और आत्मिकता की बात का किसी समाज या धर्म से दूर का भी कोई सम्बंध नहीं है।

सिधी जाति भारत में इतिहास के चक्कर में आ गई है और उसने अपनी पभी तक दो पीढियों को अपनी अनमोल विरासत से वंचित कर रखा है, अथवा यूं कहा जाय कि वे अनाथ हो गये हैं। अपनी सर्वगुण सम्पन्न मातृभाषा को गंवा बैठे है। यह अति आवश्यक है कि इन लोगों को राष्ट्र भाषा में ही सही अपनी विरासत से अवगत कराये जावे ताकि उनकी प्यास बढ़े। कुछ अधिक जानने की इच्छा उनके मन में उत्पन्न हो और इस प्रकार अपनी मातृभाषा और साहित्य के प्रति उनका रूझान बढ़े और वे लौट कर उससे जुड़े। की अपनी निजी है व्यक्तिगत हैं। मूल्यों और आत्मिकता की बात का किसी समाज या धम्र से दूर का भी सम्बंध नहीं है।

सिंधी जाति भारत में इतिहास के चक्कर में आ गई है और उसने अपनी दो पीढ़ियों को अपनी अनमोल विरासत से वंचित कर रखा है, अथवा यूं कहा जाय कि वे अनाथ हो गये हैं। अपनी सर्वगुण सम्पन्न मातृभाषा को गंवा बैठे है। यह अति आवश्यक है कि इन लोगों को राष्ट्र भाषा में ही सही अपनी विरासत से अवगत कराये जावे ताकि उनकी प्यास बढ़े। कुछ अधिक जानने की इच्छा उनके मन में उत्पन्न हो और इस उनका अपनी मातृभाषा और साहित्य के प्रति प्रकार रूझान बढ़े और वे लौट कर उससे जुडें।

श्री खीमन यू0 मूलाणी ने सामी के श्लोकों का हिन्दी अनुवाद कर अपना ऐतिहासिक कर्तव्य निभाया है। मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं। पाठक सामी के श्लोकों का आस्वादन लेंगे क्योंकि मिश्री और शहद का मजा उसके स्वाद में ही समाया रहता हैं।

भोपाल

दिनांक 28/09/2004

—मोहन गेहाणी

सामी के श्लोको पंर एक मत

मेरी दृष्टि में 'सामी' के काव्य में सबसे बड़ी विशेषता है, सादगी और दृढ़ता के साथ एक शक्ति जिसे जादू भी कहा जा सकता है। वह एक ही बात अविद्या माया, सतगुरू की कृपा, सुहागिन का सतीत्व इत्यादि अनेक श्लोंको में दोहरता हैं। इसके बावजूद पाठक के दिल पर कवि का राज कायम रहता है।

मैंने 'सामी के श्लोक' तुलसी,, मीरा, सूर , कबीर और गुंरवाणी के साथ सुने है और मुझे लगा है कि सब एक ही हार के फूल हैं। एक ही माला के मोती है। अलबत्ता हर फूल के रंग, खुश्बू, बनावट और सजावट में अन्तर है, और मोतियों की चमक और आकार में अनतर है, परन्तु अलग—अलग फूल एक ही सुगंधित हार में पिरोये हुए है। तरह—तरह के मोती एक ही माला को सौंदर्य प्रदान कर रहे हैं।

प्रो0 लालसिंघ अजवाणी

सामी के श्लोकों का तात्पर्य

इस ससार में हम लोगो के पाच शत्रु हैं, इनके जैसा शक्तिशाली शत्रु अन्य कोई नही हैं। इनके नाम प्रसिद्ध हैं, परन्तु उनके चिन्ह कुछ थोडे से लोगों को ही मालूम हैं। कोई आदमी नहीं,, जो इनको प्रकट रूप से धिकारता नहीं हो, परन्तु ऐसा कोई बिरला हैं, जो उन में से एक न एक को अन्दर में न रखता हो। इन शत्रुओ से प्रायः हम लोगों का जितना प्यार है उतना अपने बच्चों से नहीं हैं। फिर भी यदि हमसे कोई पूछे कि " वे तुम्हारे शत्रु हैं या नहीं,? " तो संभवतः हम लोग कभी नहीं कहेगे, नही ! उन शत्रुओं के संबंध में हमे लोग जानते भी हैं, फिर भी हम अनजान हैं।

इन शत्रुओं के पास न सेना हैं, न तोपखाना, परन्तु फिर भी वे शासकों से अधिक शक्तिशाली हैं, और शासक स्वयं उनके वश में है। वे ऐसे शत्रु है, जिनका दमन हेतु, श्रुतियां और स्मृतियां, कुरान और देवदूत (फरिश्ते), सभी प्रकट हुए। व्यास और वाल्मीकी, बुद्ध और ज़रदश्त, मूसा और ईसा, कान्फयूशस और हज़रत मोहम्मद, पेगम्बर और कवि इन शत्रुओं का दमन करने के लिये जागे। परन्तु ये शत्रु आज तक हम लोगों पर हावी हैं। ये न केवल हम लोगों के मन में पलथी मार कर बैठे हैं, अपितु हमारे शुभ चिंतको और देवताओं का रूप धारण कर, सब सेवा और पूजा अपनी ओर खींच लेते है। इन प्रेतों को निकालने हेतु कई मंत्र पडे हैं, परन्तु इन शत्रुओं से हम लोगो को ऐसा प्यार हो गया हैं कि मंत्र साधने का कोई भी निश्चय हम लोग बिल्कुल ही नहीं कर पाते। मनुष्य तन का अर्थ अब बचा हैं इन शत्रुओ की दासता और न जैसे सामी कहते है–" काल को काट कर अकाल बनना। " काल का तो स्वस्थता की स्थिति में हमें विचार तक नहीं आता और केवल जब कभी बडी आपदा अथवा पीडा हम पर आती है, तब शत्रुओं की शत्रुता का हमें ज्ञान होता है। ऐसे समय मे काम का नशा उतर जाता है, ऐसे समय में क्रोध का खतरनाक विष कम हो जाता हैं, ऐसे समय मे लोभ मधु समान मीठा नहीं लगता, ऐसे समय में ससार के मोह की निरर्थकता मालूम हो जाती है, और ऐसे समय में अहंकार का अंधेरा हट जाता है। ऐसे समय में ये पाच भूत हम लोगों के सामने सच्चे शत्रु के रूप में प्रकट हो जाते है और हम लोगों के मुख पर भगवान का नाम आ जाता है और सतगुरू की मोहताजी होती है। ऐसा रोग ही अच्छा, जिसमे हम लोगों का सच्चा हमदर्द मित्र हमारे निकट हो। वह स्वस्थता किस काम की जिसमे वह दूर रहे। ऐसा रोग वास्तव में असाध्य है। इस असाध्य रोग की औषधि सामी के कथनानुसार साधु सगति है और साधु सगति का अर्थ यह नही है कि उन लोगों की सगति की जाय जो अपने को साधु कहलाते हैं अथवा धन मागते फिरते हैं। परन्तु उन लोगों से है जिनके पास सत्कर्म, शील, सतोष, निर्बरता, सेवा, दया और धर्म हैं। साधु वे हैं, जो प्रभु इच्छा मे रत रहे, जो जगत् को झूठ समझे, काया और माया के मोह में लुढकते न रहे, और जो कल्पित को काट कर नष्ट कर दें। साधु वे हैं, जिनके मन में रमता राम सदैव रहता है। जिनके लिये विषपान, उत्तार चढाव, दुख सुख सब समान हैं, और जो स्वरूप पर इस प्रकार जान दें जैसे चकोर चन्द्र पर और पतंग दीपक पर।

तात्पर्य यह है कि साधु वे है जिनका धन आत्मधन और जिनका ज्ञान आत्म ज्ञान है। कोई भी इस बात से इन्कार नही करेगा कि वही धन उत्तम है, वही ज्ञान उत्तम है।

परन्तु शत्रुओ का विनाश एक बात है, और हमदर्द मित्र प्राप्त करना दूसरी बात। साधु सगति करना एक बात है, साधु होना दूसरी बात। साधु संगति में जाकर मन से भूत निकाले जा सकते हैं, परन्तु साधु होने के सिवाय प्रभु नहीं मिलता। कुछ लोग ऐसा समझते हैं कि साधु वे हैं, जिन्होने संसार को छोडकर सन्यास लिया है। परन्तु वास्तविकता यह है कि संसार के गड्डों, दलदल और फिसलन का जिसे अनुभव नहीं होगा, उसे सच्ची लग्न कभी नहीं लगेगी। जो व्यक्ति लहरों की चिन्ता करेगा वह तैरना कभी नहीं सीख पायेगा। जो संसार की तृष्णाओं से नहीं लडेगा, उसे शूरवीर कौन कहेगा? जो दुखों और तकलीफों से कायर की भॉति भागेगा, उसे आकाशीय सहायता की जानकारी कैसे प्राप्त होगी। हर किसी की आत्मा पर भारी ऋण है और वह ऋण अदा करना उसका कर्त्तव्य है। अवसरों के पीछे अवसर, इशारों के पीछे इशारे , हम लोगों को मिलते रहते हैं, परन्तु कर्ज़ (ऋण) और फर्ज (कर्त्तव्य) की हमें याद तक नहीं आती है। धनवान नहीं समझता कि ऋणी हूं। विद्वान नहीं समझता कि ऋणी हूं। दोनों अऋणी , निरूद्धेश्य और कर्तव्य विमूढ़ हैं। दोनों नहीं समझते कि वे नौकर हैं, मालिक नहीं। उनको धन अच्छे कार्य करने के लिये दिया गया है , न कि अपने निजी उपयोग और मान – सम्मान बढाने के लिये। सामी के श्लोक ममत्व को नष्ट करने को प्राथमिकता देते हैं, परन्तु ममत्व नष्ट कैसे होगा, यदि हम लोग अपने को बडी चीज समझेंगे और जो कुछ हमारे पास है – इन्द्रियां और अंग, धन और सम्पदा, बुद्धि और शिक्षा, कला और होश, उन सबको अपना समझ लेंगे न कि प्रभु का, तो ममत्व नष्ट नहीं होगा। यदि हम लोग सदैव अपने साथ ऐसा विश्वास घात करेंगे, तो फिर हमारा अन्त कैसा होगा ? अभी तो सर्वोत्तम योनि पाई हैं, यदि इस योनि में अपने मालिक को भुला देंगे और नास्तिक बनेंगे तो हमारा अन्त कैसा होगा?

कई लोगों ने मानव के सौंदर्य पर मोहित होकर, शतकों बार जीवन का अन्त ला दिया है, परन्तु जिस प्रभु ने ऐसा मानव सौंदर्य बनाया है, उसकी सुन्दरता पर हम लोग कभी ध्यान नहीं देते। यदि हम लोग अपने प्रभु के सौंदर्य की थोड़ी सी भी कल्पना करें, तो संभवतः उसकी सेवा से कभी विमुख न हों और दुविधा के बंधन एक दम टूट जावें। मैने और मेरा हमारे मुख से ही कभी नहीं निकले। सिन्ध के महा कवि शाह अब्दुल लतीफ़ ने कहा है कि ''फांसी जिनके लिये पलंग के समान है, उनके लिये मृत्यु अवलोकन के समान है।'' सामी ने भी इसी प्रकार के श्लोक कहे हैं। उनका अर्थ भी यही है कि दुख और कष्टों से घबराना नहीं चाहिये। अपने अभिमान, भ्रमों, भुलावों और संशयों को फांसी देना चाहिये। अहंकार से मुक्त रहना चाहिये और अपना मन, तन और धन तलुवे पर रख कर, प्रभु की सेवा में त्याग करना चाहिये। यही है सच्ची विद्या, जिसकी सामी इतनी प्रशंसा करते हैं। काश हम सब लोगों का चित्त ऐसी विद्या की ओर आकर्षित हो। इस विद्या के अनुसार फांसी पलंग है, विष अमृत है, रोग आरोग्य है, दुख सुख है, निर्धनता सम्पन्नता और मृत्यु जीवन है। इस विद्या के अनुसार कोई भी वस्तु व्यर्थ नहीं है और कोई भी घटना,

और कोई भी घटना, कोई भी अनहोनी घटित होना नियम के प्रतिकूल नहीं है। इस विद्या के अनुसार दूसरों का हित अपना हित है। दूसरों की सेवा अपनी सेवा है।
और भगवान की नौकरी राजा के राजपाट से बड़ी हैं। ये है पाठ, जो हमे वेदात सिखाता है। ये ही पाठ इन श्लोकों में से समझे जा सकते हैं।

काश हम सब लोग इन पाठों को समझें और तदनुसार आचरण करें। काश हम लोगों की नसें रबाब (वाद्ययंत्र का एक प्रकार) की भान्ति इन श्लोकों से बजने लगें और हमारी आत्मा को आनन्द की प्राप्ति हो।

—ऋषि डयाराम गिदूमल

भूल सुधार (Erratta)

आदरणीय, कृपया निम्नानुसार त्रुटियों का सुधार करने के पश्चात् ही यह पुस्तक पढ़ने का कष्ट करें ।

पृष्ठ क्र.	श्लोक क्र.	श्लोक की पंक्ति क्र.	गलत	सही
6	–	7 एवं 8	बच्चे	सच्चे
6	–	13	कागज वे	कागज के
20	15	3	पाले	पा ले
22	24	4	लगे	जगे
33	33	3	प्रेम	प्रेमी
40	1	1	डायन से	डायन जीव से
44	17	3	कर	करे
48	35	4	में के तल्लीन	में तल्लीन
52	16	2	'सामी' सभ	'सामी' सम
56	10	2	ओर	और
58	18	4	कोड़ी	कौड़ी
66	13	1	मुर्ख	मूर्ख
72	20	4	मांग रहा ।	मांगी थी ।
73	23	1	झुठे	झूठे
78	9	2	मया	माया
80	17	2	द्दढ़ता	दृढ़ता
85	40	1	नहीं	है नहीं
86	41	2	बैठा है घर	बैठा घर
86	42	1	का	को
87	47	4	मोज	मौज
91	64	4	प्रमुकी	प्रभु की
92	62	2	घरे	धरे
93	71	1	बताया	बताता
111	33	4	का आकाश का	आकाश का
111	34	3	अद्दष्य	अदृष्य
112	1	2	'सामी' विश्वासी	'सामी' कहे विश्वासी
117	23	2	अद्दष्य	अदृष्य
119	4	1	घ्यान	ध्यान

पृष्ठ क्र.	श्लोक क्र.	श्लोक की पंक्ति क्र.	गलत	सही
121	9	3	अविधा	अविद्या
131	10	1	सो	से
131	11	2	सुख	सुखी
137	17	1	घरू	धरूं
145	53	3	दुविाा	दुविधा
161	14	1	सामी	जिसे
166	14	4	ले गया	लिया
166	15	1	के	की
167	21	4	दिखता	दिखाता
167	22	3	दिखाता	दिखता
168	24	1	रोक	रोग
173	47	1	धर	घर
193	2	2	जागत्	जगत्
203	24	1	कर प्रभु	कर तू प्रभु
225	36	1	मले	मिले
235	6	3	जन	सदा
237	4	2	साध	साधु
240	1	3	इस	दस
249	12	1	द्दष्टि	दृष्टि
268	17	3	द्दष्टि	दृष्टि
275	29	4	चढ़ अद्दष्य	चढ़े अदृष्य
278	40	1	आंखे में	आंखों में
284	67	1	दिये मार	मार दिये
289	16	1	बियाहता	ब्याहता
311	62	1	मर को	मर कर
319	9	1	बैरानी	बौरानी
323	25	4	मीठा	मीठी
325	7	2	'मैं' नहीं	'मैं' है नहीं
326	12	3	आभेद	अभेद

भाग—1

माया (अ)

(1)

अस्तित्वहीन बाज़ी,[1] तेरे कारण सिद्ध हुई,
'सामी' भ्रम कलंक से, तू ने ही साजी,[2]
करता अपने आप ही, विनती मोहताजी,[3]
रहता तू राज़ी,[4] यदि पट लगाता स्वयं को।

(2)

क्यों करता है प्यार, 'सामी' माया मोह से?
है यह अविद्या का सकल, अस्तित्वहीन चमत्कार,
ज्यों रस्सी में सांप दिखे, स्वप्न में संसार,
कर न स्वयं को ख़्वार,[5] मृगतृष्णा के जल में।

(3)

माया भुलाये, डाले जीव को भ्रम में,
अस्तित्वहीन तालाब में, डुबकियां नित खाये,
'सामी' अन्दर झांक कर, देख नहीं पाये,
सतगुरू जगाये, तो जग कर जुड़े स्वयं से।

(4)

माया भुलाये, डाले जीव को भ्रम में,
अपना आप स्वयं में, बैठा गंवाये,
स्वप्न में 'सामी' कहे, कोटि[6] जन्म पाये,
अविद्या हटाये, देखे नहीं जाग कर।

---

1 दांववाला खेल, 2 सजाई, 3 दूसरों पर आश्रयता, 4 प्रसन्न, सहमत
5 तिरस्कृत, 6 करोड़ों

(5)

माया भुलाये, 'सामी' जोड़कर जीव को,
सांप दिखाकर रस्सी में, दूर से डराये,
चिन्ता, पीड़ा, दुख के, भ्रम में फंसाये,
सतगुरू समझाये, तब समझ सुलझे स्वयं में।

(6)

माया भुलाये, 'सामी' जीव स्वरूप से,
देह मान कर स्वयं को, संशय में आये,
नारी जैसे नींद में, बालक गंवाये,
सतगुरू जगाये, तब भ्रम रती भर न रहे।

(7)

है यह छल प्रबल, माया परमेश्वर की,
जिसने है कल्पित रचा,[1] नाना भांति ख़लल,[2]
'सामी' करते हैं सभी, अविद्या भरा अमल,[3]
बिरला जन अचल, रहे गुरू के ज्ञान से।

(8)

अति प्रबल माया, पार न कर सकता कोई,
साधक सिद्ध, योगी, यति, सब को भुलाया,
मान बैठे स्वयं को, भ्रम वश काया,
गुरू ने छुड़वाया, वे 'सामी' छूटे दुख से।

---

1 बनाया, 2 रूकावट, बाधा 3 आचरण, व्यवहार

(9)

माया छल करती, वश में कर संसार को,
'सामी' राम मिलन के, पथ रोके रखती,
हार चुके बलवान सब, किसी की न चलती,
जिसे सत्य शक्ति, करे दंडवत उस को।

(10)

अति प्रबल जान, माया परमेश्वर की,
भूल गये 'सामी' सभी, अपनी ही पहचान,
दिखे नहीं भगवान, जो साक्षी है साथ में।

(11)

सारा जग अंधा, है माया के मोह में,
डाले बैठा गल में, बिना समझ फंदा,
बिरला चढ़े नभ पर, समझे धूल धंधा,
छोड़े भ्रम गंदा, 'सामी' मिले स्वरूप से।

(12)

दुनिया है दुखती, माया कारण मन में
सब को डायन फिक्र[1] दे, निश दिन लूटती,
बिरला प्रेमी प्रभु से, करे दरस[2] विनती,
प्रेम पुरे बस्ती, 'सामी' बसाये सम[3] बन।

---

1 चिन्ता, 2 दर्शन 3 तटस्थ, निष्पक्ष, बराबर

(13)

माया कर मोहित, जीवों को वश में करे,
गड्डे में छल बल से, डाले अंधे सतत,[1]
पीठ दिखाकर स्वयं को, हो हो करें मदमत,[2]
आत्म की दौलत, खोकर बैठे बुद्धि बिन।

(14)

माया कर मोहित, जीवों को वश में करे,
'सामी' सन्त अचाह[3] को, कर न सके पराजित,
पांचों पंख विक्षत,[4] जिसने किये पक्षी के।

(15)

मोहित करके जग,[5] माया डाले धार में,
बिरला होत करोड़ में, कोई पुरूष अलग
पलट, पद अवाच्य का, जो लग्न से पाले मग,
'सामी' बन सर्वग,[6] चाह मिटाता चित की।

(16)

त्यागी, वैरागी, माया ने उन्मत[7] किये,
'सामी' बिरला ही बचा, गुरूमुख[8] बड़ भागी,
देखे अनुरागी, जगकर अपने आप को।

---

1 लगातार, 2 मस्त, मतवाले, 3 जिसे इच्छा या चाह न हो, 4 घायल, 5 ससार, 6 सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, 7 पागल, बावला, 8 दीक्षित

(17)

माया का मस्तान, 'सामी' सारा विश्व है,
रहे कोटि में एक को, आत्म[1] की पहचान,
जिसने साधु संग से, प्रभु को लिया जान,
वहीं पुरुष सुजान, भ्रम जाल से मुक्त हो।

(18)

लेती छीन मति, 'सामी' माया सब की,
स्वप्न के संसार को, सच समझे मूढ़[2] मति,
करोड़ों में एक ही, प्रेमी ले उपरति,[3]
पहुंचे वहां यति,[4] जहां 'तू' 'मैं' है नहीं।

(19)

भुलवाती माया, जीव भटके भ्रम में,
मान बैठे स्वयं को, भ्रम वश काया,
बिरला प्रेमी लौट कर, अपने घर आया,
जिसको जगाया, 'सामी' पूर्ण गुरू ने।

(20)

माया ने गुलाम, 'सामी' सब को कर दिया,
निकल कोई बिरला भगे, निर्विकल्प[5] निष्काम,[6]
पावे जो गुरू ज्ञान से, अनुभवी आदि धाम,
जिसमें रमता राम, सूरज ज्यों साक्षी रहे।

---

1 जीव, निज, 2 मूर्ख, 3 बैराग्य, विरति, 4 सन्यासी, 5 एकाग्र, 6 कामना रहित

(21)

ख़लक[1] अंधी करती, माया मोह ममत्व से,
मृग तृष्णा के जल में, जाती है बहती,
पाता है प्रभु कृपा से, तट बिरला व्यक्ति,
पांचों आराती,[2] जिसने वश में कर रखे।

(22)

यह सारा संसार, माया ने वश में किया,
छोड़े युवा न बाल वृद्ध, या कोई लाचार,[3]
जाल भ्रम का डाल कर, करती जग में ख़्वार,[4]
बिरला पुरूष सचियार,[5] जगकर छूटे जिन्न से।

(23)

माया सदा हंसे, बुद्धि छीन कर जीव की,
दौड़े अपने आप ही, फांसी में फंसे,
उसको नहीं देखता, जो प्रत्यक्ष हरि बसे,
'सामी' वह हरसे,[6] सतगुरू जिसको मार्ग दे।

(24)

माया जगत ठगे, 'सामी' करे वश में,
जिन पर छाया सन्त की, उनको नहीं लगे,
वर श्राप को लांघ कर, पहुंचे वे आगे,
जहां ज्योति लगे, आठों प्रहर ज्ञान की।

---

1 जनता, लोग, 2 शत्रु, 3 मजबूर, 4 तिरस्कृत, 5 सच्चा, सत्यवादी,
6 प्रसन्न हो,

(25)

छल प्रबल अति, माया परमेश्वर की,
जो न सुने देखे वही, करतब करवाती,
जाल भ्रम का डाल कर, भुलक्कड़ भटकाती,
सब कुछ खा जाती, चले न वश किसी का।

(26)

दुनिया है लुटती, माया मोह ममत्व से,
दुराचारणी, बेढंगी, सब को लपेटती,
भ्रम कुटि को छोड़ कर, भागे सच्चा यति,
'सामी' वह मुक्ति, पावे जन्म मरण से।

(27)

माया भुलाये, डाले जीव को भ्रम में,
धर कर नाना रूप वह, खुद को सजाये,
अपनी बुद्धि हर कोई, सही बतलाये,
देख नहीं पाये, 'सामी' अन्दर झांक कर।

(28)

माया अति प्रबल, जीती जाये न जीव से,
डाला जिसने जगत् में,कल्पित डर ख़ालल,,[1]
उठत बैठत नींद में, 'सामी' तजे न छल,
बिरला रहे अटल,[2] जो जगकर देखे स्वयं को।

---

1 बाधा, रोक, 2 स्थिर

(29)

सारी ख़लक,[1] ख़्वार,[2] रहती माया मोह में,
उठत बैठत नींद में, करती नहीं करार,[3]
बिरला ही गुरूमुख बचा, 'सामी' कहे सचियार,[4]
करता जो दीदार[5], अपना अपनी आंख से।

(30)

माया करे जड़मति, 'सामी' जीव जगत् को,
बातें करते बेतुकी, ऊट पटांग अति,
जो न योग्य व्यक्ति , तर्क करते उससे।

(31)

माया हेतु गिरे, सारा जगत् महल से,
चतुराई से खींचकर, माया लोभ भरे,
बैठा मुख फेरे, 'सामी' कहे स्वरूप से।

(32)

जीवों को लूटे, माया यहां मर्म बिन,
रस्सी लेकर द्वैत[6] की, बांध ले खूंटे,
डंडों से संदेह के, रातों दिन कूटे,
बिरला जन छूटे, 'सामी' जिसे मिले गुरू।

---

1 जनता, लोग, 2 बदनाम, तिरस्कृत, 3 आराम, 4 सच्चा, सत्यावादी
5 दर्शन, 6 दुविधा

माया (ब)

(1)

बांध जीव के अंग, माया डाले ममत्व से,
नहीं निभाती डाकिनी, कभी किसी का संग,
युक्ति से भागे निकल, बिरला मस्त मलंग,
मल कर समता रंग, लांघे तीनों लोक वह।

(2)

परे से परे, माया परमेश्वर की,
अन्त न पावे चाहे कोई, कितने यत्न करे,
करें इसे गुम ज्ञान से, कोई ज्ञानी गहरे,
'सामी' देख ठरे, आंखों से वह स्वयं को।

(3)

भारी भव सागर, लहरें मारे लोभ की,
डुबा बहा संसार को, डाले बीच भंवर,
मोह छोड़ बिरला करे, प्रेमी पार डगर,[1]
पूर्ण परमेश्वर, 'सामी' देख कर शांत हो।

(4)

अस्तित्वहीन हरकत,[2] माया करती काल्पिनिक,
कई फंसते जाल में, मूर्ख रख ममत्व,
जन्में मरें समझ बिन, भटकें वे इत उत,[3]
'सामी' सहें दिक्कत, जगकर देखें न ज्योति को।

मार्ग, 2 यहां वहां, 3 बुरी चाल

(5)

रांड झंझट निश दिन,करे विरह का जग[1] में,
सब को यह भ्रमित करे,रूप धरे भिन्न भन्न,
मारे समता का डंडा, जगकर बिरला जन,
समझे वेद वचन, 'सामी' चढ़े गगन पर।

(6)

माया है रचती, सभी स्वांग कपट के,
मूर्खों को यह पीट कर, डायन दुख देती,
बिरले ही गुरुमुख को, बात विदित होती,
पहुंचे वह व्यक्ति, लांघ लोक परलोक को।

(7)

माया भटकाये, मूर्ख बना लोगों को,
बैठे अपने आपको, निज में गंवाये,
'सामी' लहे[2] वीर, जो साधु शरण जाये,
मन को चमकाये, आनन्द ले स्वरूप का।

(8)

माया मिठाई, खाकर जीव ख़्वार[3] हुए,
भव सागर में भटकते, 'सामी' सदा ही,
बिरले ही सतगुरू को, अन्तर[4] मति आई,
अपनी पराई, का चिंतन तज तद्‌रूप हुआ।

---

1 जगत. 2 प्राप्त करे. ढूढ ले , 3 तिरस्कृत, 4 अन्दर की सूझी,, बुद्धि

(9)

माया मित्र बन कर, मोहित कर मारे,
भटकाये स्वराज में, साथ सदा चल कर,
'सामी' वीर बचा कोई, साधु शरण जाकर,
घर का मालिक घर, में देखे आदि देव को।

(10)

माया मां बन कर, मोहे[1] बिंगाड़े सब को,
'सामी' छीने सार धन, देत कुएं में धर,
उसे करे गुम ज्ञान से, हरिजन कोई चतुर,
घर का मालिक घर, में देखे जो अभेद बन।

(11)

माया महतारी,[2] मोहित कर के मारती,
नहीं किसी को छोड़ती, जो शरीर धारी,
रहे अलेप आकाश ज्यों, विचारक भारी,
'सामी' तैयारी, जो करे ज्ञान से अपने।

(12)

मोहित कर मारे, 'सामी' माया सब को,
भटक भव सागर में, वीर कई हारे,
पार होता प्रेमी जन, जो धीरज धारे,
अनन्त दीप न्यारे, रहे देखता जगत् में।

---

1 मोहित कर, 2 मा

(13)

माया मुंह काला, मोहित कर सब का करे,
भटका अपने आप ही, फंद गले डाला,
'सामी' बिरला वीर ही, नभ ज्यों निराला,
देखे मतवाला, लीन जगत् को लक्ष्य में।

(14)

अंधों की ओर आई, माया बन कर मोहनी,
लूट पीट नंगा किया, देकर बड़ाई,
'सामी' जागृतों से, दूर भगे माई,
गुरूमुख सदा ही, ख़ुश रहते गुरू ज्ञान से।

(15)

मोहित कर के मन, माया सब को जड़ करे,
सदा करे 'सामी' कहे बिना ज्ञान गमन,
बिरला विश्वासी लहे,[1] अपना मूल वतन,
मिटा जन्म मरण, स्थित हो आकाश ज्यों।

(16)

माया डसे अंग, नारी, काली, सर्पिणी,
बिगड़े हैं मूर्ख कई, 'सामी' इसके संग,
नभ ज्यों निराला रहे, बिरला मस्त मलंग,[2]
जल में जल तरंग[3], लय देखे जो लक्ष्य में।

---

1 प्राप्त करे, ढूंढ ले, 2 एक प्रकार का मुसलमान साधु, 3 लहर

(17)

माया डसे अंग, नारी, काली, सर्पिणी,
मुनि ऋषि बिगड़े कई, 'सामी' इसके संग,
बिरला ही गुरूमुख[1] बचा, निराश्रित निहंग,[2]
रंग हीन का रंग, देखे जो अभेद बन।

(18)

बुद्धि छीन लेती, सब की माया छल से,
'सामी' अन्तर आत्मा, देखे दूर अति,
मारे कसाइनि को, दर्दमंद[3] व्यक्ति,
हंसता रहे यति, देख स्वयं को स्वयं में।

(19)

माया ने ठगी, दुनिया मोह ममत्व से,
नहीं किसी को छोड़ती, रहे साथ लगी,
'सामी' पहचाने उसे, कोई जागृत योगी,
उससे दूर भगी, जो बुद्धि करे गुम ज्ञान में।

(20)

ख़्वाब में सौदाई,[4] ख़्वाब में ही दाता[5] बने,
बने सुमेरू[6] ख़्वाब में, ख़्वाब मै ही राई,[7]
स्वप्न में 'सामी' कहे, सब रचना रचाई,
जग कर जुदाई, स्वप्न सहित नहीं रही।

---

1 दीक्षित, 2 एकाकी, फक्कड,अकेला, 3 दुखी, पीडित, दर्दवाला,
4 बावला, 5 देने वाला, 6 पर्वत का नाम, 7 राई के दाने जितना छोटा

(21)

हास्य विस्मय ख़ासा, लगता है इस बात पर
मालिक खोजे आत्मा, शक्कर बतासा,
गहना खोजे स्वर्ण को, मिटी को कासा,[1]
पानी प्यासा, 'सामी' रहे नित नीर का।

(22)

विस्मय और हंसी, आती है इस बात पर,
अविनाशी है मानता, अपने को नासी,[2]
भटक रहा 'सामी' कहे, ले चित चोरासी,
ख़ुद बिन ख़ुलासी,[3] बात न होती प्रभु की।

(23)

विस्मय और हंसी, आती है इस बात पर,
'सामी' अक्षय समझता, अपने को नासी,
मटकी में जा नभ फंसा, बिना फंद फांसी,
पानी में प्यासी, मरे बुदबुदा समझ बिन।

(24)

विस्मय और हंसी, आती है इस बात पर,
खाविंद[4] डाले गल में, फंद रहित फांसी,
भटके नित भुलक्कड़ ज्यों, गंगा, गया, कासी,
ख़ुद[5] बिन ख़ुलासी, बात न होती प्रभु की।

---

1 मिट्टी का बरतन, 2 नश्वर, 3 स्पष्ट 4 पति मालिक, 5 स्वय

(25)

सब के साथ लगी, रहती माया मोहनी,
'सामी' हर क्षण वह करे, बातें थोक ठगी,
मारे समता का डंडा, जाग कोई जोगी,
डर कर तभी भगी, कऊं कऊं कर कुतिया ज्यों।

(26)

माया में मस्तान, मूर्ख रहते बहुत से,
काल न देखें तान कर, बैठा तीर कमान,
करें वेद सम आचरण, प्रेमी तज अभिमान,
भक्ति दे भगवान, जिनको अपनी कृपा कर।

(27)

माया सब गुलाम, करती जीव जगत् को,
पेट के कारण पिट कर, वीर कहें त्रिहिमाम,[1]
'सामी' बिरला सूरमा, निर्विकल्प निष्काम,
जिसको रमता राम, देता दर्शन देह में।

(28)

चोदह लोक खाती, माया चबा मोह से,
वश उस पर है जीव का, चलता नहीं रती,
मारे उस मनहूस को, दर्दमन्द[2] व्यक्ति,
देखे पूर्ण पत्ति, 'सामी' दायें बायें वह।

---

1 मेरी रक्षा करो, 2 दयावान, दर्दवाला

(29)

माया सब संसार, मोहित करे ख़्याल[1] से,
भुलवा दे भगवान को, धोखा दे हर बार,
'सामी' बिरला साधु संग, अपना करे उद्धार,
बोध रूपी वह यार, बोता खेती चुप्पी से।

(30)

माया भटकाये, फेंके वह प्रवाह में,
'सामी' सब को रहस्य की, डुबकी लगवाये,
बिरला प्रेमी पार हो, मन को मनाये,
दीपक जलाये, जो अनुभव का देह में।

(31)

दुखी करे चोट्टी,[2] माया मुग्ध कर सब को,
नहीं किसी को छोड़ती, खटपट कर खोटी,
'सामी' लगाये सम की, साधु जन सोंटी[3],
दृष्टि हटा मोटी, तके न उस तद्‌रूप को।

(32)

निकालने वाली, दिवाला माया दंतुरी,[4]
दे दी जिसने सब को, 'सामी' कंगाली,
बिरला ही गुरूमुख[5] रहे, खट पट से खाली,
नस नस में लाली, लखे[6] प्रत्यक्ष पिया की।

---

1 विचार. 2 चोर. 3 मोटी डंडी 4जिसके दांत आगे बाहर निकले हो,
5 दीक्षित. 6 देखो

(33)

निकालने वाली, दिवाला माया मोहनी,
करे सब का लूट कर, ख़ज़ाना ख़ाली,
'सामी' शूर बचा कोई, प्रेम मवाली,
गुरू ने कर डाली, जिस पर दया दरस की।

(34)

माया कर मक्कर,[1] मोहित कर के मारती,
रखे न तिल मात्र कभी, डायन कोई डर,
'सामी' शूर बचा कोई, जागृत जन सुभर,[2]
पूर्ण परमेश्वर, देखा जिसने नभ ज्यों।

(35)

माया कर मक्कर, मोहित कर के मारती,
रहे अलेप आकाश ज्यों, कोई निराश निडर,
प्रसन्न हो कर पावे जो, ज्ञान का आदि घर,
'सामी' बने अजर,[3] पावे मौज मुक्ति की।

(36)

सब को है डसती, मोहित कर माया बली,
भटकाती भव सिन्धु में, नाना रूप रचती,
'सामी' सतगुरू शरण में, बिरला बचा यति,[4]
अनन्त की ज्योति, जला लखें[5] जो पिया को।

1 छल, कपट, 2 शुभ्र, श्वेत, उज्जवल,3 जरा रहित, जो बूढा न हो, जो जले नहीं, 4 सन्यासी, त्यागी, योगी, 5 देखे

(37)

माया बना मर्कट,[1] मोहित करती जीव को,
भवसागर में भटकता, देकर ख़ुद को कष्ट,
सारा कल्पित छोड़कर, समझे कोई सुभट,[2]
बिछा क्षमा की खट,[3] 'सामी' सोवे सराय में।

(38)

देती माया मार, पटक पटक कर जीव को,
भवसागर में भटकता, बहा अश्रु धार,
करता है गुम ज्ञान से, बिरला जन होश्यार,
जिसकी सुरति संभार,[4] 'सामी' लेता सतगुरू।

(39)

कलेजा डायन, सब का माया निकालती,
किसी का करती नहीं, लिहाज[5] यह पापिन,
'सामी' भाला सत्य का, मारे बिरला जन,
आत्मा का दर्शन, जो अर्न्तमुख हो करे।

(40)

माया छीन मति, मूढ़ करे हर जीव को,
भोगे भोग भ्रम के, समझ सत्य अति,[6]
बिरला जागृत सूरमा, पलट ले उपरति,[7]
वहां बैठे यत्ति,[8] जहां 'हां' 'ना' है नहीं।

---

1 बदर, 2 शूरवीर, 3 खाट, 4 सम्हाल, लेता, 5 इज्जत, 6 बहुत, 7 विरक्ति, सन्यास, 8 संयासी, योगी

(41.)

माया लुभा मति, मूढ़ करे हर जीव को,
अपने आप है भटकता, लेकर ख़ब्त[1] अति,
'सामी' रहे सम सदा, जिसके मन विरक्ति,
जगकर शिव शक्ति, देखे स्वयं जहान में।

(42)

माया ने मारी, मति लुभा हर जीव की,
खुश होकर ढोता फिरे, बदनामी भारी,
सदा रखता समझ बिन, यत्न विनय जारी,
'सामी' कहे सारी, जाय गंवा कर आयु वह।

(43)

बुद्धि छीन लेती, सब की माया मोह से,
'सामी' छवि राम की, कोसों दूर दिखती,
समझे इसी सत्य को, कोई चतुर व्यक्ति,
हंसता सदा यति, देख स्वयं में स्वयं को।

(44)

मूढ़ मति रोगी, मोहित कर माया करे,
सीमित समझे स्वयं को, सदा फिरे सोगी,[2]
पावे सुख स्वरूप का, कोई जागृत योगी,
बन कर अरोगी, 'सामी' रहे स्वभाव में।

सनक, 2 शोकग्रस्त.

(45)

मूढ़ मति रोगी, मोहित कर माया करे,
भुलक्कड़ भव सागर में, भटके बन भोगी,[1]
'सामी' मिला स्वरूप से, कोई जागृत योगी,
अनुभव ~~ज्ञानी~~ अरोगी,[2] पाता घुस कर घर में।

(46)

माया ने हैं खेल, अस्तित्वहीन रचे सभी,
मूर्ख उन को बुद्धि बिन, निश दिन रहते खेल,
बिरला नभ अलेप ज्यों, पाता मुक्ति छैल,[3]
प्रभु से कर मेल,[4] 'सामी' नित प्रसन्न रहे।

(47)

द्वैत में डुबा ली, माया ने मति सबकी,
'सामी' छीन बुद्धि बना, देती सवाली,[5]
बिरला ज्ञानी जन रहे, खट पट से खाली,
नस नस में लाली, प्रत्यक्ष देख प्रभु की।

(48)

द्वैत में डुबाती, माया सब संसार को,
मरते हैं मस्तक झुका, बिना मर्म मत्ति,
'सामी' मुंह को फेर कर, जाये पार यत्ति,
बैठक है जमती, उसकी आदि घर में।

---

1 भोग भोगने वाला, 2 रोग रहित, प्रभु 3 छैला, बाका, 4 मिलाप,
5 प्रश्नकर्ता, विनती करने वाला, मागने वाला, भिक्षुक

(49)

दुनिया सब छली, माया ने ममत्व से,
बिरला विश्वासी बचा, 'बाभन' कहे बली,[1]
जिसको दे दी है समझ, सतगुरू ने भली,
रम कर रामकली,[2] गाता फिरे वह गांव में।

(50)

माया रंग रचे, अद्‌भुत मोह ममत्व का,
उस में जग तद्‌रूप हो, नाना भान्ति नचे,[3]
बिरला साधु सूरमा, बला से बचे,
आत्मिक सुख सच्चे, 'सामी' भोगे सब तरह।

(51)

माया रंग रचे, भारी भेद भ्रम का,
मोहित कर है मारती, कहकर वचन कच्चे,
बिरला जागृत सूरमा, बला से बचे,
'सामी' सुख सच्चे, पावे साधु संग वह।

(52)

माया मोह मयी , नहीं किसी को छोड़ती,
भ्रम जाल में फांस कर, वश में किये कई,
'सामी' साधु शरण में, वीर बचा कोई,
लोक परलोक दोई,[4] लांघ[5] पहुंचा लक्ष्य पर।

1 बलवान, 2 राग का नाम, 3 नाच, 4 दोनों, 5 पार कर

(53)

माया मवासी,[1] जीव बनाती जगत् के,
भ्रम वश भटकें रखें, चित में चोरासी,
'सामी' काटे शूर कोई, संशय की फांसी,
अलख अविनासी, देखा जिसने ज्योति में।

(54)

सबको दिलासे, देती माया मोहनी,
दूर न हो क्षण भर कभी, संशय में फांसे,
करें उसे गुम ज्ञान से, प्रेमी निरासे,
'सामी' सम भासे, जिन्हें ज्ञान मय आत्मा।

(55)

माया कर मक्कर,[2] मूढ़ मोहती मोह से,
पीठ दिखा कर स्वयं को, भटके भवसागर,
'सामी' बिरला साधु संग, लांघे तट दुष्कर,[3]
पूर्ण परमेश्वर, देखा जिसने नभ ज्यों।

(56)

करे जीव अधीन, माया भ्रमित बुद्धि से,
नाचें सब नर्तक ज्यों,परिच्छन्न[4] पायल पहन,
बिरला चढ़े सुमेरू[5] पर, बचकर साधु जन,
देखे दिक्कत[6] बिन, 'साम्मी' सिद्ध स्वरूप को।

---

1 गढपति. 2 छल, कपट. 3 कठिन, 4 ढ़की हुई, छिपी हुई. 5 एक पर्वत,
6 कठिनाई

(57)

कभी न निभाती, रिश्ता माया कलमुंही,
दर्शन देकर सब को, जूते पड़वाती,
'सामी' बला से बचा, भाग्यवान व्यक्ति,
सतगुरू ने सुरति,[1] जिसे दिलायी सत्य की।

(58)

माया रचाये, झूठा खेल भ्रम का,
वह खेले तद्रूप बन, मूर्ख मन भाये,
बिरले ही सत्पुरूष को, ज्ञान मति आये,
'सामी' समाये, जल बुदबुदा जल में।

(59)

माया रचाई, झूठी क्रीड़ा भ्रम की,
हर कोई सच मान कर, छाने नित छाई,[2]
बिरले ही सत्पुरूष को, ज्ञान मति आई,
'सामी' सदा ही, स्थित रहे आकाश ज्यों।

(60)

माया मवासी,[3] जीव बनाती जगत् के,
भटक रहे ख़ुद[4] भ्रम की, डाल गले फांसी,
बिरला ही गुरूमुख बचा, उत्तम अभ्यासी,
अलख[5] अविनासी[6], 'सामी' जो सम बन लखें[7]।

---

1 याद, स्मरण, 2 राख, भस्म, 3 गढपति, 4 स्वय, 5 अदृष्य, 6 अविनाशी, 7 देखे

अविद्या (अ)

(1)

किसने मिलवाई, अविद्या डायन से,
बातें सेवक समझ कर, गुरू ने समझाई,
सांप दिखता रस्सी में, भुलक्कड को भाई,
शीतलता पाई, 'सामी' मन में झांक कर।

(2)

'सामी' क्यों अड़े, तू अविद्या के अभिमान में,
सुखी नहीं दिखता कोई, जिसको ज्वर चढ़े,
रातों दिन सड़े,[1] अग्नि बिन वह मन में।

(3)

रांड ने झमेला, किया विरह का जगत् में,
'सामी' डसती सब को, बनाती पोला,
बिरला गुरूमुख मारता, ज्ञान का गुलेला,[2]
कल्पित भ्रम भुला, 'सामी' बैठा मन के।

(4)

हाय हाय करता, मूर्ख तू मन की तरह,
चाहे कितना भी भरो, पेट नहीं भरता,
संशय में 'सामी' कहे, व्यर्थ तू मरता,
क्यों नहीं झुकता, आगे परमेश्वर के।

---

1 जले, 2 गुलेल

(5)

सब के घर रहता, प्रेम पदार्थ राम धन,
अविद्या ने अंधा किया, सब कुछ गंवाता,
जैसे राजा नींद में, भीख मांग खाता,
सतगुरू जगाता, तब सुखी हो 'सामी' कहे।

(6)

अविद्या मन रचे,[1] वही लपेटे मन को,
जैसे मकड़ी जाल में, मरे स्वयं पचे,[2]
बिरले ही विश्वास रख, बला से बचे,
देते गुरू सच्चे, 'सामी' समझ जिनको।

(7)

भारी एक बला, लेती लपेट सब को,
जूते मारे रात दिन, जीवों को बुला,
मुख मोड़े इस नीचे से, सन्त कोई बिरला,
जिसको ज्ञान कला, 'सामी' देता सतगुरू।

(8)

अविद्या है चांडाल, लेती लपेट जीव को,
बातों का देती बना, अस्तित्वहीन इक जाल,
निर्भय शासन छीनकर, कर देती कंगाल,
'सामी' छाया डाल, सके न कोई उस पर।

---

1 रचना करे, बनाये, 2 पकती हैं

(9)

अविद्या में आता, मूर्ख मान स्वयं को,
भूत भ्रम का पीठ पर, 'सामी' बिठाता,
जैसे वानर स्वयं को, फंद बिन फंसाता,
दूर से डर जाता, सांप रस्सी को समझ कर।

(10)

भ्रम ने सिद्ध किया, अस्तित्वहीन संसार को,
स्वप्न में बहु रूप धर, 'सामी' सदा जिया,[1]
भूला अपने आप को, शक से घिर गया,
मिटा भ्रम दिया, जग कर मिला स्वरूप से।

(11)

अस्तित्व हीन संसार, भ्रम वश है सिद्ध हुआ,
स्वप्न में दिखता ज्यों, नाना विधि व्यवहार,
समझ देख 'सामी' कहे, करके शुद्ध विचार,
अविद्या का अहंकार, मिट जायेगा मन से।

(12)

अविद्या अनाड़ी, बनाती करोड़ों को,
मुंडवा कर सब मस्त हैं, 'सामी' सिर दाढ़ी,
लगा बैठे लोभ की, चटकनी कबाड़ी,
भ्रम की कुल्हाड़ी, मारें अपने आप को।

---

1 जीता रहा

(13)

सदैव जीव जले, अविद्या के अभिमान में,
आत्म धन को छोड़कर, लेकर खोट चले,
चतुर जान कर स्वयं को, भेद नहीं खोले,
'सामी' स्वयं मले, मिट्टी अपने मुख पर।

(14)

अविद्या का अभिमान, मिटे न कर्म कांड से,
चाहे सब साधन करे, केवल कथे[1] ज्ञान,
तभी मिले निरवान,[2] जब 'सामी' जुड़े स्वरूप से।

(15)

अविद्या का अहंकार, भारी लगा जीव को,
माने अपने आप ही, अस्तित्वहीन संसार,
मिलकर साधु संग से, करे न शुद्ध विचार,
साक्षी सृजनहार, 'सामी' देखे वह नहीं।

(16)

'सामी' नहीं टूटे, अविद्या फांस कर्म से,
मृग तृष्णा का जल कभी, हाथों से न खुटे,
तभी जान छूटे, जब जगकर देखे प्रभु को।

---

1 कहे, 2 मुक्ति

(17)

जिसने कर्म किया, अविद्या के अहंकार से,
उतम समझ स्वयं को, फंद में फंस गया,
दया न कर जीव पर, कर्म का फल दिया,
उलट अंधा हुआ, समझ बिना 'सामी' कहे।

(18)

सब को नचाये, अविद्या भूत[1] भ्रम का,
बिन फंदे और फांस के, पल पल भुलाये,
किसी की माने नहीं, निज बल[2] लगाये,
सतगुरू छुड़वाये तो 'सामी' छूटे दुख से।

(19)

भारी नशा चढ़ा, अविद्या का इस जीव पर,
पल में शाह[3] भिक्षु[4] बना, पल में गुरू बड़ा,
रहे अपने हाल में आठों प्रहर अड़ा,
'सामी' अनगढ़[5], बातें गढ़े गगन की।

(20)

अविद्या भुलाये, डाले जीव को भ्रम में
अपने में ही स्वयं को, बैठा गंवाये,
'सामी' पूछे सबसे, कोई लाकर मिलवाये,
सतगुरू समझाये, लाकर दे दे हाथ में।

---

1 प्रेत, 2 अपनी शक्ति 3 उदार दिल वाला धनवान 4 भिखारी 5 [illegible]

(21)

अविद्या भुलाये डाले जीव को भ्रम में
सर्प देखकर रस्सी में डर बिन डर जाये,
अस्तित्वहीन तालाब में डुबकियां खाये,
देख नहीं पाये, मन मन्दिर में झांक कर।

(22)

अविद्या घुमाये, जन्मों में इस जीव को,
ज्यों मदारी कपि[1] को, दर दर भटकाये,
मूर्ख मन में झांक कर, देख नहीं पाये,
सतगुरू जगाये, तो 'सामी' छूटे दुख से।

(23)

अविद्या रांड लूटे, कोष अमूल्य सबका,
सब जीवों को बांधती, मूर्छित कई टूटे,
पांच प्यादे संग दे, रातों दिन कूटे,
'सामी' वे छूटे, जो करें स्मरण हरि का।

(24)

संशय सांप डसे, 'सामी' सब संसार को,
चिन्ता चाह रस्सी से, बंध जाता कसके,
पार न कर सके, मृग तृष्णा के जल को।

---

1 बंदर

(25)

किसी से न खुले अविद्या ताला अन्दर का,
चाहे तप तीर्थ करे दुख सुख सभी सहे,
बाल बच्चों का त्याग कर, गुफ़ा में रहे,
साधु शरण गहे, तो सुखी हो 'सामी' कहे।

(26)

भ्रम ने क्रोधी, किये जीव जगत् के,
शीतल रहे स्वभाव में 'बामन' कोई बोधी,[1]
गुरु गम्य शोधी,[2] जिसने काया अपनी।

(27)

स्वतः भटकें जलें चोरासी में जीव सब,
मृग तृष्णा का जल ज्यों देख मृग मचलें
तभी गांठ खुले जब 'सामी' मिले सतगुरु।

(28)

'सामी' नहीं छूटे, अविद्या फांस कर्म से
मृगतृष्णा का जल कभी, हाथों से न खुटे,
अन्न न भूसे से मिले जितना कोई कूटे,
सहज फांस टूटे, जब समझे जुड़े स्वरूप से।

---

1 ज्ञानी, 2 शोध करने वाला

(29)

अविद्या का उपाव,[1] नाहीं आत्म ज्ञान बिन,
पूछ करो विश्वास से, 'सामी' शीघ्र उपाव,
जागे ईश्वर जीव का, तज तू दुविधा भाव,
ऐसा अच्छा दांव, मूढ़ मिलेगा फिर नहीं।

(30)

विद्या मिटाये, अविद्या दुख अंदर का,
जैसे पानी आग को, 'बाभन'[2] बुझाये,
सूरज दिखाये, सभी पदार्थ प्रकट कर।

(31)

विद्या मिटाये, अविद्या सब अन्दर की,
सूरज उग हर वस्तु को, स्वतः दिखलाये,
जगने पर स्वप्न जगत, जैसे छिप जाये,
'सामी' मिल जाये, सर[3] में जल की बूंद ज्यों।

(32)

अविद्या से आयी, नाव मुहाने तट के,
आकर मर्द मल्लाह हुआ, 'सामी' सहायी,[4]
देकर डांड़ विश्वास की, पार है लगायी,
चिन्ता मिटायी, अन्तर्मन की पूर्णतया।

उपाय, 2 ब्रह्मण, (यह कवि का उप नाम है) 3 तालाब, 4 सहायक, मददगार,

(33)

स्वप्न में इक सूत,[1] गुरू ने दिया ज्ञान से,
दीप जलाया घर में, भागा अविद्या भूत,
सब लोगों में रम रहा, परमेश्वर मज़बूत,
धार दिखी साबूत,[2] संशय बिन 'सामी' कहे।

(34)

हिम्मत से हरिजन, दर्शन करता ईश का,
साजन का मुख देखकर, खुले सभी बंधन,
क्षण भर में पूर्ण हुए, सम्पूर्ण साधन,
मन रचित अनबन, लीन हुई सब मन में।

(35)

मारे गुरू छींटा, भागे भूत भ्रम का,
तिल मात्र भी न रहे, 'सामी' भ्रम टंटा,
पाकर सुख स्वरूप का, मन का अहं मिटा,
गुड़ ढेला चिउंटा, खाने में के तल्लीन हो।

(36)

अविद्या में अड़ा, राह बताई विद्या ने
कुसंग[3] डाले भव[4] में सत्संग से चढ़ा,
चिंतन आया मन में, मन में ही बढ़ा,
'सामी' अनगढ़ा, ऐसा घाट है प्रभु का।

---

1 धागा, सूत्र, सुराग. 2 साबुत, पूरी, समूची, दुरूस्त. 3 बुरे लोगो का साथ, 4 ससार

अविद्या (ब)

(1)

अविद्या पंक डला, विद्या लायी राह पर,
गिरा कुसंग से कूप में, सत्संग से निकला,
द्वेष गया मन से, हुआ मन मन्दिर उजला,
'सामी' यूं खिला,[1] ज्यों चद्दर खिले रंग से।

(2)

अविद्या भुलाये, 'सामी' सब संसार को,
लालच के लड्डू पर, आत्म बिसराये,
समझे बिरला सूरमा, जो घर में घूम आये,
अपने पराये, का भाव तजे ख़ामोश हो।

(3)

अविद्या ने आजिज़,[2] किये जीव जगत् के,
छीने व्यर्थ विचार से, बुद्धिमता, धीरज,
कोटि[3] में कोई ज्ञानी जन, याद करता बीज,
'सामी' सम सूरज, देखे जो अभेद बन।

(4)

अविद्या जीव अपार, उलझा कर जड़मति करे,
अलग समझ कर स्वयं को, मुक्तजन खाते मार,
पाते सुख स्वरूप का, साधु जन सचियार,[4]
बनी पर सवार, सदा रहें 'सामी' कहे।

---

1 सुन्दर लगा, 2 विनीत, 3 करोड़, 4 सच्चे

(5)

अविद्या करे अंधेर, छिपाकर आत्म कला,
सच्ची लगन प्रेम से, बिरला लहे मुंडेर,
जिसको दे सतगुरू मति, 'सामी' बिना देर,
हो निर्भय निर्बैर, पावे आनन्द दरस[1] का।

(6)

अविद्या में अड़े, सभी जीव जगत् के,
मरते मति मर्म बिन, निश दिन रोएं खड़े,
किसी जागृत वीर ने, तोड़े भ्रम घड़े,
चेतन नभ चढ़े, सुख से सोयें 'सामी' कहे।

(7)

अविद्या में अटक,[2] गये जीव जगत् के,
मरते मति मर्म बिन , भौंदू ज्यों भटक,
'सामी' तोड़े शूर कोई, ममत्व की मटक,[3]
लटके[4] में लटक,[5] रहा सहज स्वरूप के।

(8)

प्यासी प्यासी कहती, अविद्या नित अंधों से,
मृगतृष्णा के जल में, नाव डुबा देती,
'सामी' बिरला समझता, रस्सी न सांप होती,
सही समझ स्थिति, स्थित हो आकाश ज्यों।

---

1 दर्शन, 2 रूकावट, रूके, 3 चोचला, नखरा, 4 बनावटी चेष्टा, 5 लटकने की क्रिया

(9)

अविद्या ने आलम,[1] उलझा कर जड़मति किया,
स्वतः लेकर भटकता, नाना योनि जनम,
बिरले ही सत्पुरूष का, मिटता भेद भरम,
जिसको मार्ग सुगम, 'सामी' देता सतगुरू।

(10)

अविद्या ने आलम, उलझा कर जड़मति किया,
बिरला विश्वासी मिटा, देता ग़ैरत[2] ग़म,[3]
जिसे बताता सतगुरू, 'सामी' सार संयम,
प्रभु बिना दम,[4] लेता है न कभी वही।

(11)

अविद्या ने आलम, उलझा कर जड़मति किया,
स्वतः लेकर भटकता, नाना योनि जनम,
'सामी' साधु संग बचा, कोई प्रेमी निष्कर्म,
पूर्व और पश्चिम, देखे जो न गगन में।

(12)

दुविधा पगली कुती, भौंके, चीरे , दन्तुरी,[5]
'सामी' सबको क्षण में बनाती खब्ती,[6]
दृढ रहे स्वभाव में कोई सन्त यति,
नटनी से मुक्ति, पाई जिसने साधु संग।

---

1 संसार, 2 लज्जा, 3 चिंता, 4 श्वास, 5 जिसके दांत बाहर निकले हों 6 सनकी

(13)

अविद्या बांधे अकल,[1] शक्ति सब आंखों की,
नहीं देखते आंखों से, सम्मुख रत्न असल,[2]
कोई जागृत शूर ही, निकालता है हल,
जिसको साधु मिल, 'सामी' देता रोशनी।[3]

(14)

अविद्या सिन्धु का अन्त, कोई पा सकता नहीं,
बहे लोभ लहर में पीर, अमीर, महन्त,
पार पहुंचा लक्ष्य तक, कोई जागृत सन्त,
भेद बिना भगवन्त, 'सामी' लखे[4] जो सर्वगत[5]।

(15)

अविद्या की औषध,[6] गुरू ने दे दी शिष्य को,
प्रतीति[7] से पी लिया, 'सामी' प्रेम का मद,
घुसकर लाधा[8] घर में आदि ज्ञान का पद,
मिटा दुख दरद,[9] स्थित रहे आकाश ज्यों।

(16)

अविद्या की औषध, गुरू ने दे दी शिष्य को,
'सामी' सभ शीतल हुआ, मिटा दुख दरद,
सुना उसने द्वैत बिन, असीमित अनहद,[10]
पाकर पूर्ण पद, अपने में ही मस्त है।

---

1 अक्ल, बुद्धि, 2 शुध्द 3 प्रकाश, 4 देखे, 5 सर्वव्यापक 6 औषधि, दवा, 7 विश्वास, 8 पाया, 9 दर्द 10 गुप्त नाद, अनहद नाद

(17)

अविद्या अंधियारी, मिटे न सम सूरज बिना,
चाहे सभी चतुर मिलें करें यत्न जारी,
समझे कोई 'सामी' कहे, भाग्यवान भारी,
असीम की बारी,[1] खोल लखें[2] जो पिया को।

(18)

अविद्या आग जला, देती सारे जगत् को,
उसको विद्या जल से, बारम्बार बुझा,
शुद्ध कर अपने मन को, 'सामी' ममत्व मिटा,
डाल न गले फंदा, रह तू ज्ञान के पद में।

(19)

भ्रम डाल दिया, विरह का संसार में
जिसने सब का पीट कर, अक़्ल छीन लिया,
'सामी' बिरला साधु संग, शूर बच गया,
ज्ञान बिना दूजा, देखे नहीं आंखों से।

(20)

मोंडी[3] और काली, अविद्या डायन है बड़ी,
देती जो याचक बना, हंसे करे खाली,
'सामी' कोई साबुत[4] रहे, प्रेमी अकाली,[5]
दया दृष्टि डाली, जिस पर गुरू ने दरस की।

---

1 खिडकी, 2 देखे, 3 कुरूप, कुडौल, 4 बिना टूटा फूटा, सम्पूर्ण, 5 नानक पंथी साधु जो चक्र के साथ सिर में काले रंग की पगडी बाधते हैं, जिन्हे काल ग्रसित न कर सके

मूर्ख (अ)

(1)

अमूल्य कहिये, मानव देह द्विय रत्न,
ऊसर में जा झूठ को, मूर्ख मिलाये,
हो निराश अमृत तजे, स्वतः विष खाये,
देख नहीं पाये, 'सामी' अन्दर झांक कर।

(2)

कल्पित खेल रचे[1] नारायण ने द्वेत के,
उसमें मरते है कई, मूर्ख लोग कच्चे,
खोले पट प्रकट करे कोई अवधूत नचे[2]
जिसको गुरू सच्चे समझ दें 'सामी' कहे।

(3)

रचायें मन ख़लल,[3] स्वतः फंसे फांस में
'सामी' कुछ समझे नहीं, मूर्ख माया छल,
चैन न पावे मृग ज्यों, देख मरू में जल,
तभी बने अचल, जब वह देखे स्वयं को।

(4)

अस्तित्वहीन भरम, मूर्ख माने बुद्धि बिन,
किसी ने न जुल्म[4] किया, और न लाज शरम,[5]
जूते खाये सिर पर, रखे न मन मरम,[6]
कर्ता करे करम,[7] तो 'सामी' कुछ पता पड़े।

---

1 बनाये, 2 नाचे, 3 बाधा, रोक, 4 अत्याचार, 5 शर्म, 6 मर्म 7 कृपा

(5)

घर में राम बसे, बाहर ढूंढे जीव नित,
'सामी' मन में झांक कर, देख नहीं हरसे,[1]
अपने आप फंसे, मूर्ख अविद्या फांस में।

(6)

घर में राम रहे, मूर्ख ढूंढे दस दिशा,
जप तप साधन योग में 'सामी' देह दहे,[2]
व्यर्थ दुख सहे, पीठ दिखाकर स्वयं को।

(7)

खुद[3] ही देता दंड, भुलक्कड़ अपने आपको,
भरकर मुट्ठी ज्यों कपि, स्वतः फंसे उद्दंड,
निज स्वरूप अखंड, 'सामी' देखे वह नहीं।

(8)

लाखों जीव बहे, अस्तित्वहीन तालाब में
सद्बुद्धि रख चित में मूर्ख नहीं रहे,
कैसे मुक्ति गहे,[4] जो बंधा 'सामी' भ्रम में।

(9)

मनन में आहत, ज्ञानी ध्यानी गृहस्थी,
पीठ दिखाकर छोड़ते, सीधा मार्ग उचित,
बारम्बार समझ बिना, मारे काल[5] कल्पित,
रूठा रहे सतत,[6] 'सामी' शुद्ध स्वरूप से।

---

1 प्रसन्न हो, 2 जल, 3 स्वय 4 पकडे, पावे, 5 यम,समय, 6निरन्तर, लगातार,

(10)

'सामी' कल्पित काल,[1] मूर्ख स्वतः मानता,
की न किसी ने विनती, ओर न ज़ोर[2] ज़वाल,[3]
भूला सार स्वरूप को, दर दर करे सवाल,[4]
सदा रहे बेहाल, जगकर लखें[5] न स्वयं को।

(11)

मूर्ख विष खाये, आत्म अमृत छोड़कर,
हीरे रत्न अमोल वह, इत उत फेंक आये,
'सामी' बन अंतर्मुखी, देख नहीं पाये,
हठ वश गंवाये, मानुष तन अनमोल को।

(12)

स्वतः गंवाये, मूर्ख घर को बुद्धि बिन,
हीरे मोती फेंक कर, कंकर बीन लाये,
'सामी' हानि लाभ को, कभी न गिन पाये,
पल पल तन जाये, स्वत : मकड़ी की तरह।

(13)

मूर्ख गंवाये, हीरा जन्म खुद हाथ से,
मिल कर साधु संग से, सफल न बनाये,
मकड़ी ज्यों वह स्वयं को, फंद बिन फंसाये,
देख नहीं पाये, 'सामी' मन में झांक कर ।

---

1 मृत्यु, समय, यम, 2 बल, 3 अवनति, 4 प्रश्न, विनती, 5 देखे

(14)

खुद ही उखाड़ता, मूर्ख जड़ को मर्म बिन,
साक्ष्य सुन सन्तों के, हठी नहीं हटता,
मानुष देह अमूल्य को, सागर में फेंकता,
कांच मोल लेता, मोती दे अनमोल वह।

(15)

स्वप्न का संसार, मुर्ख समझे सत्य सब,
काया, माया, कुल से, खुश हो करे प्यार,
'सामी' लखे न सम बन, साक्षी सृजनहार,[1]
नाहक होता ख़्वार, भुला भ्रम में स्वयं को।

(16)

देवी और देवा, मूर्ख पूजें बुद्धि बिन,
भोग लगावें भ्रांति[2] का, दूध शक्कर मेवा,
बिरला ही साधु करे 'सामी' शुद्ध सेवा,
अलख[3] गुप्त देवा,[4] पूर्ण देखे प्रेम से।

(17)

समझे नहीं सड़ा, कि वह यात्री लक्ष्य का,
निश[5] दिन कंधे पर रहे, उसके काल[6] चढ़ा,
बात न माने किसी की, अविद्या में अड़ा,
'सामी' अनगढ़ा,[7] उलझा रहता अंदर में।

---

1 ससार को बनाने वाला, 2 भ्रम , 3 प्रभु, जिसे देखा न जा सके, 4 देवता,
5 रात्रि, 6 समय, यम, 7 अनिर्मित

(18)

मूर्ख नहीं हटते, झूठ कपट प्रपंच से,
मानुष देह अमूल्य को, नद[1] में बहाते,
थूहर[2] से 'सामी' कहे, आम है चाहते,
रत्न बदल लेते, कोड़ी कंकर कांच से।

(19)

हाय हाय करते, मूर्ख माया के लिये,
सत्य समझ संसार को, नाना दुख सहते,
काल कंधे पर अपने, अंधे न देखते,
'सामी' चले जाते, लहू बहाकर आंखों से।

(20)

मूर्ख करे विवाद, बिना समझ स्वरूप पर,
सुन कर बातें वेद की, 'सामी' करें न याद,
नहीं ढूंढते है कभी, आत्म पद अगाध,[3]
बिना सुख समाध, पंडित समझें स्वयं को।

(21)

मूर्ख चोरासी, में स्वतः पड़ते भूल कर,
अविद्या के अहंकार की, डाल गले फांसी,
'सामी' रहता है सदा, मद में मवासी,[4]
पलट अविनासी,[5] दीप न देखे देह में।

---

1 बड़ी नदी 2 रेगिस्तान मे पैदा होने वाला [illegible] 3 असीमित, अनन्त अथाह. 4 गढ़पति
5 अविनाशी

(22)

घर में नहीं आये, मूर्ख साधु संग बिन,
अविद्या रस्सा डाल नित, खुद को नचाये,
सहस्रों में 'सामी' कहे, बिरला रम पाये,
जिसे बेध जाये, सच्चे गुरू का बाण इक।

(23)

स्वतः गया बिछड़, मूर्ख प्यारे प्रभु से,
लगा बैठा घर को, अविद्या की बागड़,
'सामी' प्रभु की तरफ,[1] कभी न देखे मुड़,
बना बहरा जड़,[2] सुने पुकार न दीनों की।

(24)

अपने आप गहे,[3] मूर्ख अविद्या फांस को,
ढोकर भार मनन का, व्यर्थ दुख सहे,
मृगतृष्णा के जल से, प्यास न मिटती है,
गुरू गम्य रहन[4] रहे, तो सुखी हो 'सामी' कहे।

(25)

पन्ने क्यों पढ़ता, मूल अक्षर है एक ही,
सागर में घुस कर न क्यों, अन्दर देखता,
भ्रम छोड़ 'सामी' उसे, पार नहीं करता,
कल्पित बनाता, व्यर्थ बातें मन में।

---

1 ओर, दिशा, 2 निष्क्रिय, 3 पकडे, पाये, 4 रहने की क्रिया

(26)

तृण पट में भगवान, मूर्ख ढूंढे दस दिशा,
भेजे[1] में न बुद्धि रखे, ज्यों बालक नादान,
'सामी' नभ में भान,[2] अंधा देखत है नहीं।

(27)

जैसे शंख करे, चीत्कार[3] नित दर्द बिन,
'सामी' सुख सागर से, खुद[4] को समझे परे,
मूर्ख निश दिन बुद्धि बिन, ममत्व में मरे,
देख न धीर धरे, स्वतः सिद्ध स्वरूप को।

(28)

एकत्रित करता, कोटि काग़ज़ मूढ़ मति,
'सामी' लोभ लहर में, रहन बिना बहता,
बिरला प्रेमी छोड़ सब, है नभ पर चढ़ता,
दर्शन वह करता, सुषुम्ना[5] से भी निकट।

(29)

करते जो कपट, साधु संग गुरू पीर[6] से,
लगाते वे स्वयं के, आगे अविद्या पट,
चढ़ता उनके चित पर, 'सामी' भ्रम किट्ट,[7]
बांध गले में टेंट,[8] भटकें भौंदू[9] ज्यों सदा।

---

1 मस्तषिक, दिमाग, 2 भानु, चमक, 3 शोरगुल, चिल्लाहट, 4 स्वय, 5 हठयोग में शरीर की तीन प्रधान नाडियो मे से एक, जो नासिका के मध्य भाग (ब्रह्म रध्र) मे स्थित है, 6 मुसलमानो का गुरू, 7 मैल, 8 धोती की वह ऐठन जो कमर पर पडती है, 9 मूर्ख

(30)

साक्षी सृजनहार,[1] रहे सर्वदा घर में,
मूर्ख देखे दस दिशा, करे न क्षण करार,[2]
स्वतः होता ख़्वार,[3] 'सामी' कहे समझ बिन।

(31)

मूर्ख मोह न कर, काया माया कुल[4] से,
सब जायेंगे छोड़कर, लगेगा न क्षण भर,
थोपेंगे तुझ पर, 'सामी' उलटा दोष वे।

(32)

मूर्ख धरो न बेख,[5] अपने असली वेष पर,
उसमें रहता स्वयं है, पूर्ण पुरूष अलेख,
इस में मीन न मेख,[6] समझ देख 'सामी' कहे।

(33)

मूर्ख छोड़ गुमान,[7] काया माया कुल का,
जागृत होकर जप ले, भेद बिना भगवान,
काल[8] अचानक मारेगा, तुझको प्रचंड बान,
'सामी' सर्व जहान, जिसने मार मिट्टी किया।

(34)

जब था कम प्रवाह, तब तू मच्छ गया नहीं,
क्यों अब तेज बहाव में, ले भगने की राह,[9]
अब जो करे मल्लाह, सहन करो प्रहार सब।

---

1 सृष्टिकर्ता, प्रभु 2 चैन, आराम, 3 तिरस्कृत, बदनाम, 4 वंश 5 स्वांग, 6 शंका नहीं, त्रुटि नहीं, 7 घमंड, अहंकार, 8 यम, समय, 9 मार्ग

(35)

सब ही सिधारे, मूर्ख सोया नींद में,
'सामी' मृत्यु शीष पर, निश दिन पुकारे,
अंधे असहिष्णु[1] को सदा, फंसा कर मारे,
प्रभु दृष्टि डारे,[2] तो जगकर मिले स्वयं से।

(36)

मूर्ख मन अनजान, खुद[3] को लखे[4] न खुद में,
मन मन्दिर में झांक कर, जपे न तज अज्ञान,
क्यों मारे नादान, स्वयं कुल्हाड़ी पैर पर ?

(37)

माया में मगन, मूर्ख रहते बुद्धि बिन,
अलग समझें स्वयं को, धारण कर बहु तन,
'सामी' प्रेमी जनों को, मिलता आत्म धन,
आत्म ज्ञान का अन्न, साफ़ करते सुरति से।

(38)

माया में प्रसन्न, मूर्ख रहते बुद्धि बिन,
भोग भोगते भ्रम के, खोते मानष तन,
पावे सुख स्वरूप का, जागृत साधु जन,
माने सब मनन, शीतल हुआ 'सामी' कहे।

---

1 जो सहन न कर सके, 2 डाले, 3 स्वय, 4 देखे

मूर्ख (ब)

(1)

माया में मस्तान, मूर्ख रहते बुद्धि बिन,
काल न देखें ले खड़ग, सम्मुख तीर कमान,
बरतें वेद विचार से, प्रेमी निरभिमान,
भक्ति दे भगवान, जिनको अपनी कृपा कर।

(2)

माया में अहंकार, मूर्ख करते बुद्धि बिन,
सत्य समझ जग[2] को सहें 'सामी' दुख अपार,
काल न देखें सिर पर, करे जो अत्याचार,
जिसने दिये मार, राजा रंक मज़दूर सब।

(3)

होकर जीव दुखी, मूर्ख मरते बुद्धि बिन,
अग्रिम चाल चलें सदा, नीरस और रूखी,
बिरला मिले पिया से, हो 'सामी' सन्त सुखी,
गहरी गुरूमुखी,[3] बातें सुन मस्ती करें।

(4)

नाव छिद्र जिस प्रकार, वैसा संग जगत् का,
उसमें मरते बुद्धि बिन, मूर्ख कर अहंकार,
बिरला प्रेमी समझता, जग का सत्य सार,
आभा जिसे अपार, 'सामी' देता सतगुरू।

व्यवहार करें, 2 जगत्, 3 गुरु के मुख से निकली भाषा

(5)

सब ही मोड़ गिने, गिनने वाला ना गिना,
पूछें पुकारें हाथ उठा, पुनि पुनि[1] सभी जने,
मकड़ी जैसे जाल में स्वयं लगे तनने,
गुरू मिले अपने, तो शीतल हो 'सामी' कहे।

(6)

मूर्ख लगाये, गले स्वयं ही भ्रम को,
अविद्या के प्रवाह में डुबकियां नित खाये,
पन्ने नित प्रतीति बिन, बैठा पलटाये,
जब मुक्त छुड़वाये,तब सुखी हो 'सामी' कहे।

(7)

मूर्ख मवासी,[2] खो मत मानुष देह को,
मिल ले परमेश्वर से, तज हठ रे हासी,[3]
आता सहसा काल है, डाले गल फांसी,
भटक न चोरासी, 'सामी' कहता शांति बिन।

(8)

अपने को मत ठग, मूर्ख खो मत तन रत्न,
मिल ले परमेश्वर से लग कर साधु संग,
ले जाता यम आज कल, सहसा नंग धड़ंग,
रोयेगा मलंग,[4] सूर्यास्त पर 'सामी' कहे।

---

1 फिर फिर, पुनः पुनः, 2 गढपति, 3 हंसाने वाला, मसखरा, हास्य कलाकार
4 मुसलमान साधु, मस्त,

(9)

मूर्ख 'मैं' 'मेरी', मीठी समझे मन में
प्रीति करें प्रतीति से, स्वतः बिन देरी,
काल न देखें सिर पर, ताक रहा बैरी,
भस्म की ढेरी,[1] 'सामी' बनाये सब को।

(10)

सहस्रों विक्षिप्ति नर, भेष बदल बेहाल हुए,
सांप रस्सी में देख कर, भग जाते डर कर,
'सामी' नहीं समझते, है प्रत्यक्ष परमेश्वर,
रहें राख मलकर, परिच्छिन्नता[2] की तन पर।

(11)

समझें सत्य नहीं, वादी और विषयी सज्जन,
भटकें भव सागर में स्वतः दोनों ही,
सन्तों ने है बात यह, 'सामी' सरल कही,
जिस के पास रही, अनन्त गठरी ज्ञान की।

(12)

कर चतुराई दर्प[3] सहस्रों जीव अपंग हुए,
कहते रहते मुख से, ज्ञान, ध्यान, जप तप,
जगकर अपने मन से, निकालते न कलप,[4]
'सामी' ज्यों सर्प, विष उड़ेल व्याकुल करे।

छोटा सा ढेर, 2 सीमितता, 3 घमड, गर्व, अभिमान, 4 कलफ खिजाब

(13)

डर कर बिना डर, मुर्ख मरते ममत्व में,
मृगतृष्णा के जल की, सकें न सिंधु तर,[1]
चतुरों को 'सामी' कहे, होती खरी[2] ख़बर,
पटक भ्रम गट्ठर, लेते सुख स्वरूप का।

(14)

वेद पढ़ वादी,[3] मूर्ख हुए मर्म बिन,
'सामी' नहीं संभालते, मूल धन आदि,[4]
प्रसन्न रहते पिया से, एकत्व वादी,
ज्ञान की आबादी,[5] स्पष्ट देखें शून्य में।

(15)

विस्मय और हंसी, आती है इस बात पर,
'सामी' रहें शरीर में, मूर्ख मवासी,[6]
काल न देखें सिर पर, जो फिरे ले फांसी,
क्षण में ख़लासी,[7] करे मार कर देश की।

(16)

दे दी भूख अपार, माया ने है मूढ़ को,
'सामी' गुफा पेट की, भर न सके गया हार,
खावे सम संतोष का, बिरला सन्त आहार,
ज्ञान दृष्टि उपहार, जिसको देता सतगुरू।

---

1 तैर, तैर कर पार, 2 शुद्ध 3 वक्ता, 4 प्रारम्भ का, सनातन, 5 बस्ती
6 गढपति, 7 समाप्ति, नाश

(17)

बार बार छूते, मूर्ख मन की गेंद को,
प्यारी लोक परलोक की, बातें नित करते,
स्वतः[1] हैं वे जाल में, मकड़ी ज्यों तनते,
कर्म यदि करते, सुखी होते 'सामी' कहे।

(18)

बार बार छूते, मूर्ख मन की गेंद को।
अविद्या ख़्वाब[2] की वजह[3] से,जग में भटकते,
बिरले शूर इसे समझ, निश्चिन्त सोते,
जगकर देखते, निज आंखों से स्वयं को।

(19)

आश्चर्य लगता, 'सामी' को इस जीव पर,
ज्ञानी पंडित बन फिरे, सब को संमझाता,
हीरे मोती लाल सब, परख मूल्य पाता,
बैठा गंवाता, ख़ुद को अपने आप में।

(20)

अपना आदि[4] घर, भूल गया है भुलक्कड़,
'सामी' गया जगत् के, भ्रमों से है घिर,
बिरला ही गुरू ज्ञान से, लहे घाट घुसकर,
लौट न आवे फिर, जन्म मरण के दुख में।

---
1 अपने आप, 2 स्वप्न, 3 कारण 4 प्रारम्भ का, सनातन

अज्ञानी (अ)

(1)

भुलक्कड़ गंवाये, निज को अपने आप में
दीवाने ज्यों देश में खोजे थक जाये,
'सामी' घर के दीप को, देख़ नहीं पाये,
सन्त यदि आये, तो मिटे तपन मन की।

(2)

सर्व जगत् प्रसन्न, रहे गर्व[1] गुमान[2] में
वर श्रापों का बुद्धि, बिन, मन में करे मनन,
करोड़ों में एक ही, 'सामी' जागे जन,
समझे आज्ञा बिन, पत्ता भी हिलता नहीं।

(3)

बंधकों को दे बोड़[3] सामी लहर समुद्र की,
उनको कहती कुछ नहीं, जिन्हें सन्त दे छोड़,
बैठे मुख को मोड़, जग से प्रभु की तरफ।

(4)

जन्मे और मरे भुलक्कड़ जीव भ्रम में,
अपनी छाया देखकर, जैसे बच्चा डरे,
स्वप्न में 'सामी' कहे, नाना रूप धरे,
बैठा सिद्ध करे, मृगतृष्णा के जल को।

---

1 अहंकार, घमंड, 2 शंका, भ्रम, 3 डुबा

(5)

कल्पित भुलावे, डालें जीव को भ्रम में,
ज्यों कस्तूरी नाभि की, मृग न खोज पावे,
अविद्या हटावे, लखे न 'सामी' अन्दर में।

(6)

'सामी' भूले घर, सभी जीव भ्रम में,
लेते कांच खुशी से, आत्म धन देकर,
घर में घुस देखें नहीं, दीपक जला कर,
बिरला जन चतुर, जागृत रहे स्वभाव में।

(7)

कल्पित ठग ठगे, कोटि जीव जगत् के,
अपने पीछे अपना, जैसे भूत लगे,
उस को लातों से कुचल, बिरला प्रेमी भगे,
ज्ञान की ज्योति जगें,[1] 'सामी' जिसके घर में।

(8)

अंधे न देखते, प्रत्यक्ष परमेश्वर को,
भ्रमों में वे भूल कर, भौंदू[2] ज्यों भटकते,
स्वतः सिद्ध 'सामी' समझ, जागृत जन सकते,
सदा मस्त रहते, द्वैत मिटा कर दिल का।

---

1 जागे, जले, प्रज्वलित हो, 2 मूर्ख, मूढ़

(9)

प्रत्यक्ष परमेश्वर, अंधे देखते है नहीं,
साधन करते बुद्धि बिन, मन में रख मक्कर,[1]
कोई जागृत ढूंढता, खुश हो अपना घर,
खोले दसवां दर,[2] तुरिया[3] में तद्‌रूप[4] हो।

(10)

अंधा है लाता, खुद को भवसागर में,
'सामी' लेता तरणी,[5] कर्मों की काना,
स्वतः सिद्ध स्वरूप को, कोई नेत्रवान जाना,
ममत्व बिना सयाना, आनन्द लेता स्वामी बन।

(11)

करोड़ों क्रोधी, सिर मुंडा साधु बने,
शीतल रहे स्वभाव में 'बामन' कोई बोधी,[8]
जिसने मिलकर साधु संग, सुरति[6] निरति[7] शोधी,[9]
बैरी, विरोधी, किसी का होता नहीं।

(12)

ग़ैरत[10] में ग़रक़,[11] रहते जीव जगत् के,
पूजें पीर फ़कीर वे, मन में रख फ़रक़,[12]
प्रेमी चढ़ते लग्न से, नभ पर बे धड़क,
अन्दर बाहर इक, 'सामी' देखें प्रभु को।

---

1 छल, कपट, धोखा, 2 द्वार, दरवाजा, 3 मुक्तावस्था, 4 मिलकर एक रूप होना, 5 नौका, 6 याद, स्मरण 7 अप्रीति, 8 ज्ञानी, 9 शोधन करने वाला,10 आत्म सम्मान, 11 निमग्न, 12 अन्तर

(13)

समझे नहीं पढ़ा, स्वतः सुख स्वरूप का,
रहे विद्या विवाद में आठों प्रहर अड़ा,
ममत्व मिटा मन का, बिरला नभ चढ़ा,
'सामी' अनगढ़ा, बातें गढ़ता मन में।

(14)

बांधे सर्व जहान, माया फांसी फंदे बिन,
प्रसन्न रहते देह से, भुला कर भगवान,
जगकर नहीं निकालते, अंदर से अभिमान,
'सामी' पुरुष सुजान, समझ घुसे प्रवाह में।

(15)

भूला सब संसार, देह मानता स्वयं को,
जन्मे मरे दुख सहे, छोड़े नहीं अहंकार,
बिरले गुरूमुख ने किया, वास्तविक विचार,
देखे साक्षी सार, सम्मुख हो 'सामी' कहे।

(16)

बगुला द्वेष करे, हंसों से हिसाब बिन,
यह निर्मलता से परे, वह कपट ध्यान धरे,
यह चुगे मोती मानसर,[1] वह मीन हेतु मरे,
'सामी' सन्त खरे,[2] साक्ष्य देते हैं सच्चा।

---

1 मानसरोवर झील, 2 विशुद्ध

(17)

भ्रमित दुखी जीव, जा पड़ा विस्तार में,
भ्रमों में वह भूलकर, दस दिश देखे पीव,[1]
तप तीर्थ साधन करे, सहे दुख व सीउ,[2]
घर में बंटे घिव,[3] 'सामी' वह देखे नहीं।

(18)

भ्रम की भारी, छूत लगी इस जीव को,
चाह रखे वह चित में, चुहड़ी [4] चमारी,[5]
कर दी जिसने भ्रम से, 'सामी' दिल कारी,[6]
असीम की बारी,[7] बंद कर बैठा स्वयं ही।

(19)

अनोखा चमत्कार, रहस्य देखा ज्ञान से,
अविद्या पर आसक्त हुआ, 'सामी' बांझ का बार,[8]
जिसका रूप न रंग है, और न अंग आकार,
स्वप्न में संसार, रचकर खुश हो रात में।

(20)

स्वप्न में कंगाल, राजा हुआ इक देश का,
हाथी, घोड़े,पालकी,इकट्ठा किया सब माल,
कई आ गये द्वार पर, सामी करने सवाल,[9]
जाग हुआ यह हाल, स्वयं भिक्षा मांग रहा।

---

1 प्यारा, पति, पिया, 2 शीत, ठड, 3 घी, 4 भगिन, 5 चमारिन, 6 काली, 7 खिडकी, 8 बालक, लड़का, 9 प्रश्न, माग

(21)

भूल वश बँदा, ख़ास[1] कोष को गुम करे,
ढकेले वह स्वंय को , खोल व्यर्थ धंधा,
दीप जला कर ज्ञान का, देखे नहीं अंधा,
प्रभु खोल कुंडा, मदद करो 'सामी' कहे।

(22)

पत्थर पूजते, देव न देखें देह में,
पंडित समझ स्वंय को, कर्मो में बंधते,
संतो के सुन साक्ष्य , हैं मर्म[2] न समझते,
कैसे वे रमते, 'सामी' प्रभु के रंग में।

(23)

यत्नशील सरदार, झुठे सब कलयुग के,
रातों दिन वे लोभ के, घर में रखें अंबार,[3]
विश्वासी विश्वास से, करते कपट हज़ार,
'सामी' मूढ़ मक्कार,[4] मरण न रखते मन में।

(24)

पंडित कहे उदगार, सार सुनाये सबको,
'सामी' अपने मन की सके न ममता मार,
सम दिखलाये सब को, रख कर द्वैत[5] गंवार[6],
चला जाय वह हार, मानुष देह अमूल्य को।

विशेष, 2 रहस्य,भेद, 3 ढेर, 4 कपटी, छल करने वाले, धोखे बाज, 5 दुविधा,
मूर्ख, मूढ़, अनपढ

(25)

लाखों दिहाड़ी,[1] डींगें मारें अगम्य की,
'सामी' रहते साधु बन, मुंढ़ा सिर दाढ़ी,
चमकाते हैं कपट के, ख़ंजर, कुल्हाड़ी
व्यर्थ अनाड़ी, बह जाते प्रवाह में।

(26)

लाखों बातें कहें जानकार बिरला कोई,
लेखा छोड़ अलेख रत, बिरला सन्त रहे,
दूजे विवाद सहें स्वप्न में 'सामी' कहे।

(27)

पीड़ित करें मनन, ज्ञानी, पंडित, ग्रंथी,
बिना समझ स्वरूप के, करें उत्तर प्रश्न,
बिठा बैठे गोद में वे तृष्णा डायन,
बिरला कोई हरिजन, 'सामी' समझे सार[2] को।

(28)

पढ़ कर वेद पुरान, पंडित हो जाते कई,
अविद्या में जाते अटक, कई बिना गुरू ज्ञान,
बिरला बरते जगत् में वचन ज्यों सुजान,[3]
उसके हत्थे[4] भान,[5] 'सामी' चढ़े स्वरूप का।

1 प्रतिदिन, 2 तत्व, 3 अच्छा जानकार, 4 हाथ मे आये, 5 चमक, आभा, प्रकाश

(29)

लाखों करें तकरार,[1] व्यर्थ ही वेदांत पर,
बिरला कोई बैठ कर, इस पर करे विचार,
हृदय में धारण करे, 'सामी' समझ कर सार,
द्वैत का करे संहार, सब में देखे प्रभु को।

(30)

स्थिर ने किया, संशय नाना रूप का,
अस्तित्वहीन कल्पित को, 'सामी' सिद्ध किया,
जन्म मरण दुख सुख का, भ्रम सिर लिया,
तभी भ्रम गया, जब जग कर जुड़ा स्वयं से।

(31)

लाखों लेखारी,[2] लेखों में गुम हो गये,
बिरला पहुंचा लक्ष्य पर, उत्तम अधिकारी,
जिसको सतगुरू ने दिया, भरोसा भारी,
बात सच्ची सारी, 'सामी' कह मस्ती करे।

(32)

लाखों लेखारी, लेखों में गुम हो गये,
कोल्हू में ज्यों घूमता, बैल बारम्बारी,
'सामी' लेता सार सुख, बिरला विचारी,[3]
भवसागर भारी, लांघ पहुंचे लक्ष्य पर।

---

1 झगड़ा, 2 लेखा करने वाला, 3 विचारक

अज्ञानी (ब)

(1)

रहें जगत में ठग, भारी पांच भ्रम के,
मोहित कर छीनें बुद्धि, सब को दें दुख मग,[1]
कोई जागृत सूरमा, उन से रहे अलग,
'सामी' बन सर्वग,[2] लेवे मौज मुक्ति की।

(2)

सबको ठगते ठग, पांच प्रियतम बन कर,
'सामी' नहीं समझते, अंधे जीव अलग,
रहें अलेप आकाश ज्यों साधु जन सर्वग,
फ़र्क [3] न रखें दबंग, पगड़ी, टोपी में कमी।

(3)

पेट हेतु आतुर,[4] सब करते माथा पच्ची,
भटकें अपने आप ही, भ्रमों में फंस कर,
'सामी' जागृत देखते, हरि को अपने घर,
कर के मन स्थिर, लेते आनन्द मुक्ति का।

(4)

अपने आप जरे[5] भूला जीव भ्रम में
सत्य समझ संसार को, जन्मे और मरे
'सामी' सच्चा साक्ष्य, देते सन्त खरे
जागृत देख ठरें[6] चहुं दिश एक ही आत्मा।

---

1 मार्ग, 2 सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, 3 अन्तर 4 व्याकुल, व्यग्र 5 जले 6 ठंडे हो, शीतल हो

(5)

हठी हार जाये, हीरा जन्म खुद हाथ से,
'सामी' मोह ममत्व का, गल फंदा फंसाये,
प्रेमी नारायण से, मन को लगाये,
वह नित बजाये, नगाड़ा निर्वाण का।

(6)

हारे जन्म हठी, ख़ाली जाये संसार से,
झूठ कपट से कर बहुत, कोड़ियां इकट्ठी,
बिरले ही गुरूमुख की, दुविधा मति नठी,[1]
सच्चा मार्ग गठी,[2] 'सामी' लेत विनीत बन।

(7)

कर दे मुख कारा,[3] अन्दर बैठा आदमी,
समझे जागृत सूरमा, सच्चा इशारा,
बजाये चढ़ नभ पर, निर्भय नग़ारा,[4]
नभ ज्यों न्यारा, 'सामी' रहे शरीर में।

(8)

लालच फंसाये, सब जीवों को जगत् में
भटके भव सागर में कोटि जन्म पाये,
'सामी' बचा वीर वह, जिसे साधु बचाये,
लगन लगाये, चढ़ कर चेतन नभ पर।

---

1 नष्ट हुई, 2 गठीला, हट्टा कट्टा, 3 काला, 4 नगाड़ा

(9)

मनन मधु चाखी, चाट कर पगले हुए,
काया मया कुल में, बिलखें[1] नित कांक्षी,[2]
कोई साधु समझता, 'सामी' बन साक्षी,
तज दुख हलाकी,[3] जुड़ा रहे जगदीश से।

(10)

लालच फंसाये, सब जीवों को जगत् में,
डुबकी लगा अज्ञात की, सांस न ले पायें,
'सामी' बिरला लक्ष्य तक, सन्त पहुंच जाये,
वही तोड़ आये, ममता मटकी साधु संग।

(11)

लालच फंसाये, डाले जीव प्रवाह में,
डुबकी लगा अज्ञात की, कोटि जन्म पाये,
'सामी' मिले स्वरूप से, जो लग्न लगाये,
जिस को जगाये, सतर्क करे सतगुरू।

(12)

जागे बिना जिन्न,[4] नहीं भूलता भ्रम का,
'सामी' बांधे सब को, डाले वाच्य विघ्न,
कोई स्नेही मुक्त हो, छोड़े जाति वर्न,[5]
देखे जो अभिन्न, अन्दर बाहर आत्मा।

---

1 बिलख कर रोऐ. 2 इच्छुक. 3 मारक, घातक. 4 भूत, प्रेत. 5 वर्ण

(13)

चुहड़ी[1] चमारी,[2] चाह चपल चिन्ता भरी,
समता का सुख छीनती, 'सामी' हत्यारी,
रहे अलेप आकाश ज्यों बिरला विचारी,[3]
फेंक पोट[4] सारी, मिले सार[5] स्वरूप से।

(14)

चंचल, चोर, चुग़ल, सत्य जानते हैं नहीं,
खोते व्यर्थ विचार से, मानुष जन्म अमोल,
शोधन कर सच्चे लहें[6] ज्ञान का घर असल,
तज कर संशय कुल, 'सामी' लेते शान्ति सुख।

(15)

झूठे करें कर्म, पा न सकें वे प्रभु को,
भुलक्कड़ स्वतः भटकते, ममत्व में बेशर्म,
सच्चा समता से करे प्रभु दरस परम,
फेंके गट्ठर भरम,[7] 'सामी' रहे स्वभाव में।

(16)

अन्दर है दुर्गन्ध, बाहर स्वच्छता रखे,
कहलाता है सन्त वह, डाले पंडित फंद,
'सामी' लखें[8] न सामने, अहंकारी, खाविन्द,[9]
जब होगा रजत[10] में रंध्र,[11] तब रक्त बहायेगा आंखों से।

---

1 भंगिन, 2 चमारिन, 3 विचारक, 4 पोटली, 5 तत्व, 6 प्राप्त करें 7 भ्रम, 8 देखे, 9 पति, स्वामी, 10 रजत, चांदी अर्थात् देह,, शरीर, 11 छेद अर्थात् जब शरीर अशक्त हो जावेगा

(17)

पढ़ लिख पलाली,[1] कई जगत् में घूमते,
कहते फिरते एकता, दढ़ता से ख़ाली,
लहे झलक अलख की, कोई प्रेमी निराली,
सदा शांति पाली, 'सामी' जिसने स्वभाव में।

(18)

प्रेम बिना नादान, वेद पढ़ वादी बने,
करें बुराई सब की, रखें न निज पहचान,
पियें पिलावें प्रेम रस, साधु सन्त सुजान,
सदैव निरभिमान, 'सामी' रहें स्वभाव में।

(19)

पेट बनाये पाजी,[2] 'सामी' सर्व जगत् को,
बिरले ही गुरूमुख की, मिटती मोहताजी,[3]
समझी जिसने सम बन, स्वप्न की बाज़ी,[4]
रज़ा[5] में राज़ी,[6] रहे सर्वदा राम के।

(20)

पापी और पुनी,[7] भोगें भोग भ्रम के,
लेकर चलते साथ में 'सामी' भ्रम अनी,[8]
रहे अलेप आकाश ज्यों ज्ञान वान गुनी,[9]
लगा वेद धुनी, वेदों का ज्ञाता बने।

---

1 चावल की भूसी के व्यापारी, 2 नीच, दुष्ट, 3 दूसरे का आसरा, 4 खेल का दाव, 5 प्रभु इच्छ
6 प्रसन्न, 7 पुण्यात्मा, 8 दल, झुंड, 9 गुणवान

(21)

भोग ही भुलायें सारे जीव जगत् को,
फांस गले में डाल कर, खुद को भटकायें
काल न देखें सिर पर, ताके ललचाये,
यूं ही गंवायें हीरा जन्म वे हाथ से।

(22)

सूक्ष्म बन स्थूल,[1] भटके भव सागर में
जन्मे, मरे रोये, हंसे, करे ऊल जलूल,[2]
लौटे जब उदास बन, देखे अपना मूल,
तन में पावे तूल,[3] छोड़ लोभ 'सामी' कहे।

(23)

स्वप्न में गुलाम, स्वप्न में राजा बना,
स्वप्न में आनन्द ले, स्वप्न में निष्काम,
आंख खोल आराम, स्वतः ले 'सामी' कहे।

(24)

इच्छा करे अधीन, 'सामी' जीव जगत् को,
भटके भव सागर में, सदैव मति मल्लीन,
प्रसन्न रहते प्रभु से, कुछ प्रेमी परबीन,[4]
जैसे जल से मीन,[5] दूर न होती क्षण भर।

सूक्ष्म का उलटा, मोटा, सरलता से दिखने वाला, 2 अंड बंड, 3 नभ, 4 प्रवीण, मछली,

(25)

जो भी गये जान, प्रभु जाना दूसरा,
'सामी' उसको सन्त जन, समझते अनजान,
मुक्त न होते द्वैत से, पाते हैं निरवान,[1]
भ्रम का कर गुण गान, भटकें भव सागर में।

(26)

झूठे लोक लज्जा, छोड़ न सकते हैं कभी,
जन्में मरें यम की, सहते रहें सज़ा,
'सामी' सच्चे खुश रहें माने प्रभु रज़ा,[2]
लेते सदा मज़ा, स्पष्ट सिद्ध स्वरूप का।

(27)

अंधों को अंधकार, है आंखों के सामने,
घुसते अपने आप ही, कांटों में बेकार,
'सामी' जागृतों को, भ्रम न सकता मार,
देखें पटल उत्तार, पूर्ण अपने प्रभु को।

(28)

प्रत्यक्ष परमेश्वर, अंधे देखते हैं नहीं,
मारें कर्म धर्म में, भ्रमित नित टक्कर,
जागृतों ने समझ कर, जाना अपना घर,
मिटा दुख व डर, शीतल हुए 'सामी' कहे।

---

1 निर्वाण, मुक्ति, 2 इच्छा

(29)

स्वप्न में गुलाम, उस में रंक अमीर हुआ,
स्वप्न में मस्ती करे, स्वप्न में मातम,[1]
स्वप्न नाना कामना, स्वप्न में निष्काम,
आंख खुले आराम, खुद[2] देखे 'सामी' कहे।

(30)

अंधा जीव अज्ञान, गले लगाता स्वयं ही,
डुबकी लगा रहस[3] की, करता खींच तान,
पाता सुख स्वरूप का, जागृत जन सुजान,
सर्वदा निरवान,[4] 'सामी' रहे स्वभाव में।

(31)

अंधे अंध गुबार,[5] देखें मति मशाल बिन,
भव सागर में भटकते, करते नहीं करार,
'सामी' जागृत ही करें सदैव सद्व्यवहार,
अन्दर बाहर यार, पूर्ण समझें अपना।

(32)

अंधे आधी रात, देखें मति मशाल बिन,
पीठ दिखाकर स्वयं को, करें परायी बात,
'सामी' जागृतों की, सदा रहे प्रभात,
पाकर आत्म ज्ञात, स्थित रहें आकाश ज्यों।

---

1 मातम, मृत्यु शोक, 2 स्वयं, 3 रहस्य, 4 निर्वाण, मुक्ति 5 धूल, गर्द, मन में दबा हुआ क्रोध या द्वेष

(33)

अंधे करें अभिमान, काया माया कुल का,
काल न देखें कसकर, बैठा तीर कमान,
बिरला ही गुरूमुख रहे, 'सामी' सावधान,
जिसको आत्म ज्ञान, स्वतः देता सतगुरू।

(34)

अंधे अभिमानी, सत्य जानते है नहीं,
लेकर चलते साथ में भ्रम बेमानी,
स्थित रहे गगन ज्यों बिरला विज्ञानी,[1]
दिल में दिल जानी,[2] 'सामी' जो सम बन लखें[3]।

(35)

अस्तित्वहीन अज्ञान, बहाये प्रवाह में
डुबकी लगा रहस्य की, कोटि[4] करें अनुमान,
लांघ पहुंचे लक्ष्य पर, साधु जन सुजान,
सदैव सावधान, 'सामी' रहे स्वभाव में।

(36)

अंधे अज्ञानी, सत्य जानते है नहीं,
खोकर मानुष देह को, भटकें वीरानी,[5]
'सामी' जागृत ही लखे दिल में दिल जानी,
मुश्किल आसानी,[6] करें सन्त ही शिष्य की।

---

1 वैज्ञानिक, 2 जान से प्यारा, 3 देखे, 4 करोड़ो, 5 निर्जन स्थान, वीराना, 6 आसान

(37)

अंधे उपाधी,[1] सत्य जानते है नहीं,
पाते है रो पीट कर, स्वयं अपनी राद्धि,[2]
जागृतों ने कर सही, समता मति साधी,[3]
सदैव समाधि, 'सामी' लें स्वभाव में।

(38)

अंधे अनुमानी, सत्य जानते है नहीं,
बातें करते गुणों की, सहस्त्रों ज़बानी,[4]
'सामी' जागृत देखते, दिल में दिल जानी,
सदैव सैलानी[5], रहते सच्ची रहन[6] से।

(39)

अंधे करें अनुमान, स्पष्ट सिद्व स्वरूप का,
नहीं देखते नयन बिन, सम्मुख भानु[7] ज्ञान,
'सामी' चेतन पुरूष ही समझता आसान,
जगकर सब जहान,[8] लीन देखता लक्ष्य में।

(40)

अंधा अभागा, सत्य जानता नहीं,
भुलावे में वह भरे लोभी बन लागा,[9]
लेता सुख स्वरूप का, जो साधु जन जागा,
सदैव अनुरागा,[10] 'सामी' रहे स्वभाव में।

---

1 उपाध वाले उपद्रवी, 2 सफलता, 3 साध ली, 4 मौखिक रूप से, 5 पर्यटक, 6 रहन सहन, 7 सूर्य, 8 ससार, 9 भूमिकर, लगान, दान दक्षिणा, 10 प्रेम सहित

(41)

अंधा अनारी,[1] सत्य जानता है नहीं,
बिठा बैठा है घर में लालच महतारी,[2]
'सामी' जागृतों पर , हो सुजान वारी,[3]
सम बन सुपारी,[4] काट लेते भ्रम की।

(42)

अंधों का एतबार,[5] आये न आत्म राम पर,
टिका सहारे जिस के, 'सामी' सब संसार
कोई जागृत सूरमा, करता है दीदार,[6]
जिसे सन्त होश्यार,. आकर मिला अनुभवी।

(43)

अंधे जीव अनजान, सत्य जानते है नहीं
माया मोह असार में 'सदा' रहें ग़लतान,[7]
लेते सुख स्वरूप का, स्नेही निरभिमान,
सम शीतल सावधान, सामी रहें स्वभाव में।

(44)

अंधे जीव अनजान, सत्य जानते हैं नहीं,
भले बुरे वे कर्म कर, भटकें दें भुगतान,
जागृत ही स्वरूप की, रखें प्रीति पहचान,
सदा ही निरवान,[8] 'सामी' रहें स्वभाव में।

1 अनाडी, 2 मा, 3 न्योच्छावर, 4 सुपाडी, 5 विश्वास, 6 दर्शन, 7 व्यस्त, 8 मुक्त

(45)

अंधे हों उतप्त,[1] सत्य जानते है नहीं,
भटका मानुष देह को, कहें झूठ कुत्सित,[2]
जागृत करते साधु संग, प्रभु भक्ति भक्त,
मिटा कर ममत्व, 'सामी' जुड़ें स्वरूप से।

(46)

अंधा है लाता, डूबी खेती थल पर,
काना नैया कर्म की, जल में ले जाता,
'सामी' आभा सूर्य की, कोई नेत्रवान पाता,
मौज करे. ज्ञाता, स्वयं पलट कर स्वयं में।

(47)

अंधा है लाता, भवसागर की भीड़ में
काना नैया कर्म की, जल में ले जाता,
'सामी' आभा सूर्य की, कोई नेत्रवान पाता,
मोज करे ज्ञाता, प्रत्यक्ष पूर्ण स्वयं से।

(48)

अंधो के आई, आगे ओट अज्ञान की,
सीमित समझे स्वयं को, छाने नित छाई[3]
'सामी' रखते जागृत जन, समता सफ़ाई,
नस नस लालाई, प्रत्यक्ष देखें पिया की।

---

1 खूब तप्त हो, 2 बहुत बुरे 3 राख

(49)

अंधों को अटकल,[1] नहीं सागर तरण की,
सत्य समझ संसार को, भटकें मध्य भव जल,[2]
क्षण भर में है लांघता, जागृत जन सबल,
'सामी' वह पल पल, देखे प्रत्यक्ष प्रभु को।

(50)

अंधो को ओला,[3] माया ने दिया मोह का,
पहन भटके स्वयं ही, चिन्ता का चोला,
'सामी' जागृत है कमी, डर से ना डोला,[4]
क्षमा खटोला,[5] बिछा सोये पद में।

(51)

अंधों ने दी ओट,[6] अपने को अज्ञान की
भ्रमित भटकें स्वंय ही, लेकर जन्म कोट,[7]
जागृत देता फेंक है, पोली परिच्छिन्न [8] पोट,
चेतन वहां चोट, करते 'सामी' सम की।

(52)

अस्तित्वहीन अज्ञान, देता ओट अंधों को,
स्वतः शुद्ध स्वरूप की, सुध बुध रखें न ज्ञान,
लगायें अदालत ज्ञान की, जागृत सुल्तान[9]
रहते बीच जहान,[10] सदा अलेप आकाश ज्यों।

---

1 अदाज, अनुमान, 2 ससार सागर, 3 पट परदा, 4 हिला 5 बडी खाट, 6 परदा, पट, 7 करोड़
कोटि 8 सीमित, 9 राजा, शासक, 10 संसार

(53)

भ्रम ने भुलाया, अस्तित्वहीन अज्ञान में
पीठ दिखाकर स्वयं को, दस दिश दौड़ाया,
स्वप्न में 'सामी' कहे, सब रंग रचाया,
आंख खुली आया, स्थिर बन आराम में।

(54)

अंधा पट लगाये परिच्छिन्नता[1] का स्वयं को,
प्रातः पुकारे प्रभु को, चीखे चिल्लाये,
'सामी' जागृत धीर धर, प्रभु द्वारे जाये,
हर्ष से पी आये, पावन प्याला प्रेम का।

(55)

अंधे राह अंधी, लेते मति मशाल बिन,
भव[2] सागर में भटकते, तजें न तट जलधि,[3]
'सामी' जागृतों की, मति जागृत सुगंधी,[4]
रखें गांठ बंधी, जिसमें अमूल्य ज्ञान रत्न।

(56)

अविद्या ने दी ओट,[5] अंधो को अंहकार की,
ओढ़ भ्रम को भटकते स्वतः जन्म कोट,[6]
'सामी' चेतन पर करे कमी न कोई चोट,
फेंक परिच्छन्न[7] पोट,[8] लेता आनन्द मुक्ति का।

---

1 सीमितता, 2 संसार, 3 सागर, 4 सुगंधित, 5 परदा, पट, 6 कोटि, करोड़, 7 आवरण, रोक,
8 पोटली

(57)

अंहकारी अहमक,[1] सत्य जानते है नहीं,
सुन वाक्य वेदांत के, करते हैं बक बक,
स्थित हो आकाश ज्यों कोई प्रेमी परिपक्व,
नस नस में लचक, 'सामी' रख कर लाल हुआ।

(58)

स्वतः बह गया, अंधा अविद्या सिंधु में
काना कर्म नाव पर, 'सामी' सवार हुआ,
बिरला मिटा भ्रम को, जागृत पार लगा,
देखे नहीं दूजा, साक्षी सूर्य सार बिन।

(59)

कुटुम्ब कबीला, मोहित कर दुखी करे
किसी का चलता नहीं, हठ हिम्मत हीला,[2]
'सामी' रहता रंग में बिरला रंगीला,
वारिस[3] वसीला,[4] जिसका प्रभु स्वयं हो।

(60)

कोटि जन्म कपटी , पावे मिले न प्रभु से
'सामी' सच्चों की सहज, ममता सब मिटी,
देखे आंखों से वही ,खुद[5] को खा पलटी,
समझे फूल मिट्टी, स्थित हो आकाश ज्यों।

---

1 नादान, बेवकूफ , 2 युक्ति, 3 उत्तराधिकारी, 4 सहारा, 5 स्वय

(61)

बना झूठ को सत्य, झूठे बिलखें[1] स्वयं ही,
मर कर पाते मर्म बिन, दुबाला दुर्गत,[2]
सच्चे सन्तों की सदा, सच्ची सार सुमत,[3]
रातों दिन वे रत, 'सामी' रहें स्वरूप में।

(62)

झूठे झूठापन्न , रखें सम्हाल श्वास से,
छल की धूलि को जमा, गल[4] में लें भटकन
'सामी' सच्चे ही रखें सच्ची चाल चलन,
अपना परायापन्न, मिटा कर तद्रूप हुए।

(63)

झूठे झूठापन्न, नहीं छोड़ते क्षण भर,
मलें सूपड़े राख के, गल में लें भटकन
'सामी' सच्चे ही सदा, समझें सत्य चलन,
सम बन रहें रहन, लेते सुख स्वरूप का।

(64)

झूठे कहानी, झूठी कहते भ्रम की,
सत्य समझ संसार को बिलोते पानी,
'सामी' सच्चे ही कहें सच्ची शुद्ध बानी,
ज्योति देखें जानी,[5] घट घट में वे प्रभुकी।

---

1 विलाप करें 2 दो गुनी,, दुर्गति, 3 सुमति, सुबुद्धि 4 गले, 5 जान से प्यारे

(65)

झूठे काम करे स्वतः फंसें फांस में
भटके भवसागर में, नाना रूप धरे
'सामी' सच्चे से कभी, पिया न रहे परे
प्याला पाक[1] भरे पीवे प्रेम अगम्य का।

(66)

झूठे झूठा प्यार, करते माया मोह से,
खो कर मानुष देह को, रोते बारम्बार,
लेते सुख स्वरूप का, 'सामी' सन्त होश्यार,
जहां जीत न हार, वहीं ठिकाना कर डटें।

(67)

झूठे कर करतब, दिखा न तू संसार को,
परमेश्वर के सामने, छिपता नहीं कसब,[2]
'सामी' सच्चे सन्त को, रहे न लोभ तलब,[3]
रातों दिन इक रब,[4] रहे देखता देह में।

(68)

झूठे कहें कथन, सुनाते हैं सब को,
बहते खुद[5] प्रवाह में थकते कर जतन,[6]
बिरला समर्थ सूरमा, जाने इक भगवन,
जिसको देत सरन,[7] 'सामी' सच्चा सतगुरू।

1 पवित्र, 2 धंधा, पेशा, 3 चाह, कामना, 4 प्रभु, 5 स्वयं, 6 यत्न, 7 शरण

(69)

झूठा कमीना, सत्य जानता है नहीं,
ख़्वारी[1] से खाता रहे, भटके रोज़ाना,[2]
'सामी' मिले स्वरूप से, प्रेमी सयाना,[3]
तज कर हठ दाना,[4] आनन्द लेता मुक्ति का।

(70)

झूठों का कल्यान, होत न समता बिन कभी,
चाहे सब साधन करें, दे दें अपनी जान,
'सामी' सच्चों को सदा, साथ देत भगवान,
पाकर पद निरवान,[5] लेते आनन्द दरस[6] का।

(71)

झूठों को कर्तव्य, वेद बताया विधि से,
'सामी' सच्चे को मिले, स्वतः पद अलभ्य,
पूर्ण देखे पिया को, मिटा भुलावा भय,
सुनार की सौ, चोट लुहार की एक ही।

(72)

झूठी करते पोष,[7] मूर्ख मति मर्म बिन,
रहते माया मद में, सर्वदा बेहोश,
'सामी' लेता शांत सुख, स्नेही निर्दोष,
लांघे पांचों कोष,[8] चढ़ता चेतन नभ पर।

बदनामी, तिरस्कार, 2 प्रतिदिन, 3 चतुर, 4 बुद्धिमान, 5 निर्वाण, मुक्त, 6 दर्शन,
पोषण, वृद्धि, 8 खजाने

(73)

चूक हुई भारी, जगत् में वियोग की,
तप कर जिसकी तपन से नाचें नर नारी,
'सामी' बैठा सम बन, बिरला विचारी,[1]
असीम की बारी,[2] खोल लखें[3] स्वरूप को।

(74)

भुलक्कड़ निखट्टू[4] भटके भवसागर में
ले नित चले खब्त[5] का, 'सामी' साथ टट्टू,
खेप[6] जीत घर लाता है, प्रेमी पुरूष पटु[7]
समझे सत्य कटु, शाल कंबल दोऊ[8] ऊन के।

(75)

भ्रम मिटा भारी, जगत् में वियोग का,
जन्में मरें जीव सब, बन कर तन धारी,
'सामी' मिला स्वरूप से, आत्म अधिकारी,
दुविधा निवारी,[9] जग कर जिसने अंदर की।

(76)

भ्रमों में भटक, मुर्ख मरते है कई,
सत्य समझ संसार को, अंधे गये अटक,
मटकी तोड़े ममत्व की, भाग्यवान पटक,
लटके[10] में लटक,[11] 'सामी' रहे स्वरूप के।

---

1 विचारक, 2 खिड़की 3 देखे, 4 निकम्मा, आलसी, 5 दीवानगी, सनक 6 लदान,
7 चतुर, 8 दोनों 9 दूर हटायी, 10 बनावटी चेष्टा, 11 लटकने की क्रिया

(77)

गये भ्रम में डल, सभी जीव जगत् के,
जन्में मरें समझ बिन, पहुंचें रसातल,
'सामी खोजे सूरमा, अनुभवी घर असल,
मिटा भ्रम सकल, स्थित हो आकाश ज्यों।

(78)

भेद भ्रम भासे, जिसको जीव ब्रह्म में
उसको काल भ्रम का, ग्रह ये ग्रासे,
'सामी' साक्ष्य देते यह, प्रेमी निरासे,
जिनका पट नासे, सतगुरू के ज्ञान से।

(79)

भूत लगा भारी, अस्तित्वहीन अंधो को,
देह समझ कर स्वयं को, नाचें नर नारी,
रहे अलेप आकाश ज्यों बिरला विचारी,[1]
फेंक गट्ठर भारी, 'सामी' मिले स्वरूप से।

(80)

भूत लगा भारी, सब को भेद भ्रम का,
भटकते हैं स्वयं ही, फांस गले डारी,[2]
'सामी' बिरला सूरमा, नभ ज्यों अविकारी,[3]
जाग दुनिया सारी, देखे लीन लक्ष्य में।

विचारक, 2 डाली, 3 विकार रहित

(81)

भोग हैं भुलाते, डालें जीव प्रवाह में
डुबकी लगा रहस्य की, कोटि जन्म पाते,
'सामी' बचते वीर जो, साधु शरण जाते,
ममता मिटाते, पूर्ण जानें प्रभु को।

(82)

भोग हैं भुलाते, डालें जीव प्रवाह में
सब हैं अपने आप को, स्वतः गंवाते
'सामी' सब अज्ञान वश, कोटि जन्म पाते,
मुक्त ही छुड़वाते, मिले तब पद ज्ञान का।

(83)

करें नहीं विश्वास, भूले है सब भ्रम में
पीठ दिखाकर स्वयं को झूठे करें परिहास,[1]
बिरला प्रेमी गगन चढ़, मिटाता हर आस,[2]
चहुं दिश लखें[3] उजास,[4] 'सामी' पूर्ण पिया का।

(84)

बातें है बकते, फंसते है वे द्वैत में
'सामी' कहे चील ज्यों लालच नित करते,
अनुभवी घर आत्म में लें ठौर जब थकते,
वहीं पहुंचते, जहां मांझी पार लगात है।

---

1 मजाक, दिल्लगी, 2 आशा, उम्मीद, 3 देखे 4 उजाला

(85)

बिना डर डरे सारा जगत् अंदर में
प्रसन्न समझे स्वयं को, जन्मे नित मरे,
बिरला खोले आंख को, दर्शन मौज करे,
जिस पर हाथ धरे 'सामी' सच्चा सतगुरू।

(86)

बिना पंक[1] धंसते, ये सब जीव जगत् के,
मरते मत्ति मर्म बिन, खब्त[2] में खपते,
बिरले जागृत सूरमा, 'सामी' भ्रम तजते,
जिन को दिखाते, लक्ष्य ज्ञान का मुक्त जन।

(87)

बिना पंक धंसते, ये सब जीव जगत् के,
मरते मत्ति मर्म बिन, खब्त में खपते[3]
बिरले ही भ्रम गांठ को, शूर खोल सकते,
बात सच्ची कहते, 'सामी' जिन को सतगुरू।

(88)

बहरे नहीं सुनते, चीखें दीन दुखियों की,
मृग तृष्णा के जल में नित बहते रहते,
समझ कर 'सामी' कहे, पार सज्जन करते,
जग कर देखते, अन्दर बाहर आत्मा।

कीचड़, 2 दीवानगी, 3 समाप्त होते

(89)

फांसी बिन फंसती, जनता व्यर्थ विचार में
'सामी' मारे सब को, स्वप्न का हस्ती,[1]
जागृतों की लू तपन, यत्न बिना हटती,
सदा संग दिखती, उन्हें ज्ञान मय आत्मा।

(90)

संशय की गल फांस, डालें जीव जगत् के,
रहें अलेप आकाश ज्यों स्नेही जन निरास,
'सामी' जिन्हें सवर्गत, हो सम सत्ता आभास,
गंगा काशी वास, करें नहीं भुलक्कड़ ज्यों।

(91)

संशय की गल फांस, डालें जीव जगत् के,
भूला भटके स्वयं ही, खुद को सजाये
'सामी' परिच्छन्न[2] पोट[3] को वीर फेंक आये
मन ना भटकाये, और न हो बदनाम वह।

(92)

संशय बना फोक,[4] देता सब को जगत् में
भटके भव सागर में पाकर लालच तोक,[5]
स्थित रहे आकाश ज्यों कोई अवधूत अशोक,[6]
जग कर लोक परलोक, लय देखे जो लक्ष्य में।

---

1 हाथी, 2 आवरण, ढकी हुई, 3 पोटली, 4 सार निकलने के बाद बचा हुआ अंश, 5 शिशु, पुत्र, 6 शोक रहित

(93)

संशय ने फ़्कीर, किये जीव जगत् के,
पिटते कारण पेट के, धारण करें न धीर,
'सामी' बिरला साधु जन, ज्ञानवान गम्भीर,
जिसको पूर्ण पीर,[1] दरस दिखाता स्वयं में।

(94)

संशय फंसाये, सब जीवों को जगत् में
भूला भटके स्वयं ही, कोटि जन्म पाये,
'सामी' बिरला सूरमा, साधु शरण जाये,
ममत्व मिटाये, सदा लेवे सेज सुख।

(95)

संशय की फांसी, फांसे जीव जगत् को,
भूला पागल स्वयं ही, भटके चोरासी,
'सामी' बचता साधु संग, बिरला विश्वासी,
अलख अविनासी, देखे जो घुस घर में।

(96)

संशय फंसाये, डाले जीव प्रवाह में,
डुबकी लगा रहस्य की, कोटि जन्म पाये,
'सामी' बिरला सूरमा,[2] प्रभु चित्त लगाये,
बैठा बजाये, नगाड़ा निर्वाण का।

---

1 महात्मा, साधु 2 शूरवीर

(97)

संशय फंसाये डाले जीव प्रवाह में
भटके भव सागर में कोटि जन्म पाये
उसका नहीं हिसाब, जिसे मुक्त जन छुड़वाये
बैठा बजाये नगाड़ा निर्वाण का।

(98)

वेद पढ़ वादी, मूर्ख बनते मर्म बिन,
जांच परख देखें नहीं, मूल धन आदि,[1]
ढूंढे झलक अलख की, प्रेमी सत्यवादी,
लेकर समाधि, 'सामी' रहे स्वभाव में।

(99)

वेद ने बिगाड़ा, करोड़ों को जगत् में
चाहें पद पर पहुंचना, दे खर[2] का भाड़ा
प्रेमी आया घर में प्रेम लगा गाढ़ा,
आंखों को फाड़, प्रत्यक्ष देख प्रभु को।

(100)

पढ़ा समझाये सयाना बन सब को
माया कारण मन को दस दिश दौड़ाये
अन्तर्मन में झांक कर, देख नहीं पाये
जगा जगाये तो सुखी हो 'सामी' कहे।

---

1 प्रारम्भ काल का, 2 गधा

(101)

भुलक्कड़ भुला कर, रहते आत्म ज्ञान को,
हो जाता उनका पतन, हीरा जन्म पा कर,
'सामी' प्रेमी ही लखे, पलट कर ईश्वर,
चढ़ चौबारे[1] पर, सैर[2] करे संसार का।

(102)

भुलक्कड़ ने खोया, घर का स्वामी घर में,
नहीं देखता जिसने, यह जग बनाया,
'सामी' जागृतों को, अनुभव में आया,
अपना पराया, भाव मिटा चुप हो गये।

(103)

भुलक्कड़ देत बिसार, असली आत्म[3] ज्ञान को,
द्वार द्वार पागल ज्यों पूछे करे पुकार,
प्रत्यक्ष देखे स्वयं में 'सामी' ना दातार,[4]
करता जब दीदार, तब रम जाता राम में।

(104)

भुलक्कड़ ने खोया, प्रत्यक्ष पूर्ण आत्म को,
जिससे सब कुछ सिद्ध हो, अपना पराया,
बिरले ही गुरूमुख को, अनुभव में आया,
रंग में रंगाया,[5] 'सामी' संशय भ्रम बिन।

---

1 कोठे के ऊपर खुली कोठरी, 2 रटन, यात्रा, 3 जीव, अपना,, निज का, 4 देने वाला, 5 रंग गया

(105)

भुलक्कड़ ने खोया, प्रत्यक्ष पूर्ण आत्म को,
देह समझ कर फांस में, ख़ुद[1] को फंसाया,
बिरले ही गुरूमुख को, अनुभव में आया,
'सामी' समाया, जल बुदबुदा जल में।

(106)

भुलक्कड़ बिना विचार, भटके भव सागर में,
डुबकी लगा रहस्य की, सिसके बारम्बार,
लेता सुख स्वरूप का, प्रेमी जन होश्यार,
सदा रहे वह यार, 'सामी' सम स्वभाव में।

(107)

भूला निज का भान,[2] भटका भव सागर में,
सत्य समझ संसार को, छानें छना छान,[3]
लेता सुख स्वरूप का, साधु जन सुजान,
सदा ही निरवान,[4] 'सामी' रहे स्वभाव में।

(108)

भुलक्कड़ गंवाये, बैठा आत्म ज्ञान को,
लहू बहाये आंख से, पूछे पछताये,
'सामी'जागृत देखता, जो मन में घुस पाये,
ममत्व मिटाये, सदा ले सुख सेज का।

---

1 स्वयं, 2 ज्ञान, 3 छप्पर, 4 निर्वाण, मुक्त,

(109)

भुलक्कड़ गंवाये,फिर खोजे ज्ञान मय आत्मा,
उपजे निपजे[1] जिसमें, सब जग समाये,
'सामी' जागृत देखता, जो मन में घुस पाये,
लगन लगाये, सदा ले सुख शांति का।

(110)

आदि व्याधि[2] उपाध,[3] लगे त्रिताप[4] जीव को,
बहे इन प्रवाहों में, खोये जन्म कर वाद,[5]
जग कर करे न याद, 'सामी' परमेश्वर को।

(111)

सहस्रों[6] सन्यासी, गुरू, गुसाई, ज्ञानवान,
कई करोड़ों घूमते, नागा निष्कामी,
सुखी वही 'सामी',जो निज निकाले निज से।

(112)

शेखी बघारते, पंडित समझ स्वयं को,
सुन का बातें वेद की, मर्म नहीं रखते,
ठाकुर बसे घर में, अंध न देखते,
मुक्त ढूंढ लेते, 'सामी' परमेश्वर को।

पोषित हो, पलता , 2 बीमारी, 3 छल कपट, 4 तीन पाप (देहिक, मानसिक, आत्मिक),
विवाद 6 हज़ारों

विश्वासी (अ)

(1)

पानी में मरे, मीन प्यासी स्वयं ही,
भ्रमों में वह भूल कर, दस दिश गमन करे,
बिना प्रेम परे, 'सामी' समझे प्रभु को।

(2)

बड़ा समझ विश्वास, 'सामी' तू हर चीज़ से,
वेद पुराण सभी कहें, यही अर्थ सुहास,[1]
अन्तर्मन में झांक कर, समझो करो आभास,
गर्व का कर नास, तो सहज मिलेंगे प्रभु जी।

(3)

बसे बीच विश्वास, व्यापक सारे विश्व का,
समझ देख 'सामी' कहें, राह यही है ख़ास,[2]
आठों प्रहर कर वास, जा कर प्रभु संग तू।

(4)

जिसने रिझाया, 'सामी' वर विश्वास से,
उसको वर ने हर्ष से, गले लगाया,
चढ़ा सुषुप्ति[3] सेज पर, संशय मिटाया,
ऐसा रस आया, मग्न हो गया स्वयं में।

---

1 सुन्दर, 2 विशेष 3 गहरी नींद

(5)

जिन्हें नहीं विश्वास, उनका कठिन मिलाप है,
मूढ़ छोड़ सत्य मार्ग को, वन में करे प्रवास,
सुना नहीं प्रकास, बिन दर्शन होता कभी।

(6)

होत नहीं दर्शन, मूर्ख बिन विश्वास के,
'सामी' सत्पुरूषों का, मर्म न रखते मन,
कभी न अन्दर झांक कर, करते देव मिलन,
जिनको है भटकन, उनका मिलन कठिन हो।

(7)

जो न करें विश्वास, वे जन पा सकते नहीं,
जान नहीं सकते कच्चे, कभी प्रभु निवास,
जलते रहते खब्त[1] में, करें न सत्य आभास,
पा न सकें प्रकास, 'सामी' रीते ही रहें।

(8)

झूठा बखेड़ा, है यह माया मोह का,
'सामी' समझो मन से, निकाल दो झगड़ा,
कृपा से विश्वास का, कर आंगन चौड़ा,
तो नेड़े से नेड़ा,[2] सम्मुख देखो प्रभु को।

---

1 सनक, 2 निकट

(9)

सदा ही शीतल, छाया बौद्ध वृक्ष की,
बैठे जो विश्वास से, वे नर हुए निर्मल,
तपन मिटा तन मन की, खाते आत्म फल,
पाकर पद अचल, प्रसन्न रहते स्वयं में।

(10)

वचन पर विश्वास, रखो यदि तुम प्रेम से,
'सामी' प्रभु मल्लाह बन, तुझे बनाये दास,
अटक[1] नदी को क्षण में, पार करो बिन त्रास,[2]
ऐसा अवसर ख़ास, मिलेगा न तुझे कभी।

(11)

महा सूक्ष्म राह, है यह पद अगम्य की,
बिन प्रीति विश्वास कोई, पहुंचे नहीं मल्लाह,
तज कर चिन्ता चाह,'सामी' निज घर ढूंढ ले।

(12)

बातें हैं व्यर्थ, झूठी सब विश्वास बिन,
वेद पुराण सिद्ध साधु जन, यही बताते अर्थ,
इच्छाओं का गर्त,[3] देख छोड़ 'सामी' कहे।

(13)

बात करें सब ही, 'सामी' निश दिन लक्ष्य की,
बिरले ही विश्वासी से, गुरू ने युक्ति[4] कही,
ऊंची न नीची रही, 'सामी' चिन्ता मन में।

---

1. नदी का नाम 2. कष्ट, शका, भय 3. गड्डा, 4 उपाय

(14)

जिसको दर्शन दान, 'सामी' देता सतगुरू,
देखे दीप अगम्य का, विश्वासी विद्यमान,
प्रसन्न हो प्रतीति से, ले नाना से निरवान,
जाने सब जहान, स्वतः लहर समुद्र की।

(15)

मुक्ति से झट जोड़, सन्त दिखाते सार हैं,
बिरला विश्वासी लखे, 'सामी' मुख को मोड़,
ढूंढ निकाले वचन से, मक्खन नित बिलोड़,
गांठ अविद्या छोड़,[1] मुक्त हो समुद्र से।

(16)

सूक्ष्म संधि सही,[2] कर दी जब गुरूमुख ने,
मैल पूर्ण विश्वास से, अविद्या की बही,[3]
आत्म रत्न वही, पाकर घुसा प्रवाह में।

(17)

विद्या और विश्वास, जिसको देता सतगुरू,
प्रेम नगर का उसको, मिलता मार्ग ख़ास,[4]
'सामी' जल से बूंद मिल, करे अनंत में वास,
रखे न कोई आस, प्रसन्न रहती स्वयं में।

---

1. खोल 2. शुद्ध, ठीक. 3. बह गई 4. विशेष

(18)

जिसको सम विश्वास, 'सामी' देता सतगुरू,
अटक[1] नदी को क्षण में, पार करे बिन त्रास,
प्राप्त करता है वही, आत्म सुख उल्लास,[2]
रखे न कोई आस, प्रसन्न रहता स्वयं में।

(19)

विश्वासी वचन, 'सामी' माने सन्त का,
जीता उसने युक्ति से, खुश हो मन पवन,
भली बुरी वह बात को, सुने न लगा कन,[3]
बिना भेद[4] भजन, करे कर्ता पुरूष का।

(20)

विश्वासी पहचान, सौदा[5] करते सन्त से,
स्वतः सिद्ध स्वरूप का, जिनको प्रेम महान,
'सामी' सिर से फेंक दें, झंझट सभी सुजान,
मांगें भिक्षा दान, तो भी राजा देश के।

(21)

विश्वासी की बाट,[6] न्यारी वेद विचार से,
चिन्ता मिटा चित की, जाये दुष्कर[7] घाट,
'सामी' बैठा सम बन, लग्न लगा सुभाट,[8]
खोले कठिन कपाट, सम्मुख देखे प्रभु को।

---

1 , नदी का नाम 2, आनन्द 3, कान 4, रहस्य, अन्तर, फर्क, 5, लेन–देन, 6 मार्ग, रास्ता,
7 कठिन, जिसे किया न जा सके, 8 श्रेष्ठ चारण

(22)

विश्वासी ने व्रत,[1] 'सामी' लिया सत्य का,
देखे भेद भ्रम बिन, नारायण को नित,
चरण कमल से चित, दूर न रखे एक क्षण।

(23)

विश्वासी विद्यमान, स्वतः देखे प्रभु को,
जिसको देता सतगुरू, अनुभवी आत्म ज्ञान,
'सामी' समझे जगत् को, स्वप्न के समान,
पावे पद निरवान, मुख से बोले कुछ नहीं।

(24)

विश्वासी को बैर, किसी से न जगत् में,
गुरू ज्ञान से भ्रमं में, फंसता नहीं दिलेर,[2]
मार पीट कर मन को, करे भस्म का ढेर,
'तू' 'मैं' तज बिन देर, 'सामी' बैठा सम बन।

(25)

पोथी और पत्रा,[3] रखता समेट निश्चयी,
समझता 'सामी' कहे, पूर्ण ककहरा,[4]
पांचों रांडों से बच कर, ज्ञान गगन विचरा,[5]
हटा पटल गहरा, देखे आत्म राम को।

---

1 उपवास, 2 बहादुर, 3 पन्ना, 4 हिन्दी वर्णमाला, 5 विचरण किया; सैर किया

(26)

'बाभन' जो डाले, निश्चय डोंगा[1] ताल में,
सहज परमेश्वर उसे, बिना श्रम मिले,
पंडित थक चले, ठंडा गरम ढूंढ कर।

(27)

'सामी' जो सुनत, मुरली मन मोहन की,
सुरति[2] उस सत्पुरूष की, रातों दिन व्यस्त,
नभ में गऊ दोहत, बांध रस्सी विश्वास की।

(28)

मन मथुरा दिल द्वारिका, काया में काशी,
चेतन बसे चित में, अलख अविनाशी,
होता है अन्तर्मुखी, बिरला विश्वासी,
हो जाता वासी, अनंत बेगमपुर[2] का।

(29)

जिसको प्रभु याद, याद करूं मैं उसको,
'सामी' मिले प्रभु से, तन का दे प्रसाद,
तन मन देकर भाव से, छोड़े वाद विवाद,
यही आदि युगादि,[3] प्रथा है विश्वास की।

(30)

विश्वासी बस्ती, ढूंढ़ लेता शून्य में,
चढ़ती जिसके चित पर, प्रेम की मस्ती,
मारे मन हस्ती,[5] सूक्ष्म हो 'सामी' कहे।

---

1 छोटी नाव, 2 सुधि, स्मृति, 3 सृष्टि का प्रारम्भ , 4 वह नगर जिसमें आपा अथवा अहंकार न हो, 5 हाथी

(31)

विश्वासी वासा,[1] करे अनुभवी पद में,
गुरू ज्ञान से वह बने, निर्मल तज आसा,[2]
'सामी' रखे न मन में, ममता का मासा,[3]
देखे तमासा, साक्षी बन संसार का।

(32)

विश्वासी निवास, सदा करे गुरू ज्ञान में,
जैसे रहता मन में, अदृष्य आकास,[4]
काया माया कुल से 'सामी' रहे निरास,
पाता है प्रकास,[5] परमेश्वर का प्रेम से।

(33)

अजीब अविनासी, पद देखा है स्वयं में,
समझे कोई 'सामी' कहे, बिरला विश्वासी,
निज निकाले निज से, हो आत्म अविनासी,
होता निवासी, अनल[6] ज्यों का आकाश का।

(34)

विश्वासी वासिल,[7] जा कर हो एकत्व में,
जहां 'तू' 'मैं' है नहीं, न भयानक शोर गुल,
रूप रंग जड़ पत्तों बिन, खिला अदृष्य कमल,
कांति[8] जिसमें सकल, सूर्य चन्द्र दीपों की।

निवास, 2 आशा, 3 आठ रती की तौल वाला बांट, माशा , 4 आकाश, 5 प्रकाश, 6 पक्षी का ाम जो सदैव आकाश में रहता है और वहीं अंडे देता है, 7 मिले, पहुंचे 8 दीप्ति, तेज, प्रकाश

विश्वासी (ब)

(1)

सफ़ाई साधन, सन्त कहें साक्षात् का,
समझे कोई, 'सामी' विश्वासी वचन,
जग कर देखे ज्योति में, परमेश्वर पूरन,[1]
मिटा सब मनन, करता मौज मुक्ति की।

(2)

स्वतः सिद्ध पाया, विश्वासी ने सहज ही,
जिसने प्रीति समझ से, परिपक्व पकाया,
सुखी हुआ 'सामी' कहे, अमृत फल खाया,
सब में समाया, देखा दीपक देह में।

(3)

किसी को न मिले, मुफ़्त प्याला प्रेम का,
ख़ुश हो पीते साधु संग, विश्वासी बिरले,
'सामी' अविद्या पोट को, फेंक देते पहले,
लोक[2] हंसे या जले, मस्त रहते स्वयं में।

(4)

विश्वासी भोला, नहीं देखता आंखों से,
'सामी' उसने साधु संग, की तीव्र तसल्ला,[3]
जाग जग को लेखे में, देता शून्य खुला,
रखता भाव[4] भला, बरते[5] विधि विचार से।

---

1 पूर्ण, 2 ससार, 3 ढाढस, आश्वासन, सात्वना, धैर्य, 4 विचार,, 5 आचरण करे

(5)

बिना विधि विश्वास, कोई पद पाता नहीं,
पूछ देख विश्वास से, 'सामी' हो प्रभु दास,
घुस कर देख स्वयं में, रामनगर निवास,
मिटा चिन्ता आस, स्थित हो आकाश ज्यों।

(6)

बिन विवेक विश्वास, पद प्राप्त होता नहीं,
ज्ञानी जन कहते यही, दर्द मंद प्रभु दास,
मिटी जिनके मन से, 'सामी' चिन्ता आस,
लेते चहुं दिश वास,[1] प्रत्यक्ष वे ही प्रभु का।

(7)

निश्चय बिना नाम, किसी को मिलता नहीं,
चाहे तप तीर्थ करे, बन नागा निष्काम,[2]
ऐसा कहते अनुभवी, कर अनन्य[3] आराम,
समझ कर सलाम,[4] 'सामी' करे जो सब से।

(8)

विश्वासी को ज्ञान, अच्छा लगता गुरू का,
जिसको प्रभु मिलन का, 'सामी' प्रेम महान,
फेंक देता है वही, झंझट सभी सुजान,
मांगे भिक्षा दान, तो भी राजा देश का।

सुगंध 2 कामना रहित, 3 एक निष्ठ, 4 नमस्कार

(9)

'सामी' सरल वचन, सन्त कहें विश्वास का,
करोड़ों में एक ही, समझे प्रेमी जन,
सुख दुख का संसार में, करता जो दमन,
मिलता वही सज्जन,परमेश्वर को प्रीति से।

(10)

विश्वासी विस्तार, तिल मात्र करता नहीं,
जिसको देता सतगुरू, सच्ची विधि[1] विचार,
खोज लेता पूरबी,[2] स्वतः अपना यार,
'सामी' सब संसार, जिस का लेता आश्रय।

(11)

विश्वासी विस्तार, तिल मात्र करता नहीं,
मिटा जिसके मन से, अस्तित्वहीन अहंकार,
प्रत्यक्ष पूर्ण आत्मा, देखे देखन हार,[3]
प्रभु इच्छा स्वीकार, सदा करे 'सामी' कहे।

(12)

विश्वासी को विधि, गुरू बताता सम की,
प्रसन्न हो अपनी करे, 'सामी' कार्य सिद्धि,
अंधे ज्यों भटके नहीं, इत उत बिन बुद्धि,
पा प्रकाश निधि, सोवे सुषुप्ति[4] सेज पर।

---

1 प्रणाली , नियम, ढंग, 2 पूर्व देश का अर्थात् प्रभु 3 देखने वाला प्रभु 4 गहरी नींद.

(13)

विश्वासी ने व्रत,[1] 'सामी' लिया सत्य का,
जिस को दे दी गुरू ने, प्रेम समझ साबुत,
देखे अपनी देह में, नारायण को नित,
चरण कमल से चित,दूर न रखे एक क्षण।

(14)

विश्वासी बस्ती, स्वतः देखे शून्य में,
चढ़ी जिसके चित पर, प्रेम की मस्ती,
सूक्ष्म हुआ 'सामी' कहे, मार मन हस्ती,[2]
द्वैत बिन दस्ती,[3] सौदा[4] करे स्वरूप से।

(15)

विश्वासी वकील, बनाता है संत को,
कृपा से देता मिटा, दिल के सब दलील,
पहुंचाता है पद में, देकर समता शील,
देखे अपना डील,[5] 'सामी' वह नित हर्ष से।

(16)

विश्वासी बस्ती, स्वतः देखे शून्य में,
चढ़ी जिस पर प्रेम की, अदृष्य मस्ती,
सूक्ष्म हुआ 'सामी' कहे, मार मन हस्ती,
त्यागी गृहस्थी, पहुंचे जाकर लक्ष्य पर।

उपवास, 2 हाथी, 3 हाथों हाथ, 4 लेन देन, 5 कद

(17)

पन्ने सब पढ़कर, पूर्ण करता क्षण में,
जो विश्वासी ढूंढ ले, ठीक सच्चा अक्षर,
लांघे मस्जिद और मढ़ी, चढ़े सुमेरू[1] पर,
लगा ध्यान वह नर, आनंद में लवलीन हो।

(18)

संशय में स्थिर, बिरला विश्वासी रहे,
जिसको मिला भ्रम बिन, ज्ञान प्रकाशी गुर,[2]
लग्न लगाकर लाल हो, ज्ञानी जन आतुर,[3]
ठिकरे[4] में ठाकुर, ख़ुद देखे 'सामी' कहे।

(19)

भ्रम की फांसी, में फंसे जीव जगत् के,
भटकें नित 'सामी' कहे, मूर्ख मवासी,[5]
रहे अलेप आकाश ज्यों, बिरला विश्वासी,
अलख अविनासी,[6] सम देखे जो साधु संग।

(20)

माने जो रज़ा,[7] प्रसन्नता से प्रभु की,
वह भ्रमों से मुक्त हो, तज कर लोक लज्जा,
किसी से पाता नहीं, 'सामी' कहे सज़ा,
मिलकर करे मज़ा, परिच्छन्नता[8] बिन पिया से।

---

1 पर्वत का नाम, 2 गुरू, मूल मत्र, गुरूमत्र, 3 व्याकुल, 4 ठीकरा, मिट्टी के बर्तन का टूटा टुकडा, 5 गढपति, 6 अविनाशी, 7 इच्छा 8 आवरण

(21)

मस्ती दानाई,[1] दोऊ द्वैत की बुद्धि में,
समझे कोई 'सामी' कहे, विश्वासी भाई,
देखी जिसने आंखों से, प्रभु छवि स्थाई,
भ्रमों की काई, हटा लगावे कहकहा।

(22)

दावानल[2] जला, दे लोगों को ख़्याल[3] से,
नभ ज्यों अग्नि से अलग, विश्वासी बिरला,
काटे संशय फांस जो, उसको लक्ष्य मिला,
करे न्याय भला,[4] 'सामी' बन कर सम वह।

(23)

रखे जो सिदिक़,[5] साबुत अपने प्रभु पर,
खोजे अदृष्य लग्न से, नभ पर चढ़ आशिक,[6]
देखे न्यारा गगन ज्यों, जगत् का मालिक,
जैसे पानी इक, 'सामी' लहरें हों कई।

(24)

माया मवासी,[7] मोहित करती लोगों को,
स्वतः भुलक्कड़ भटकते, ले चित चोरासी,
'सामी' बचा साधु संग, बिरला विश्वासी,
अलख अविनासी, देखे जो जग[8] ज्योति में।

बुद्धिमता, 2 जंगल की अग्नि, 3 विचार, 4 अच्छा, 5 विश्वास, 6 प्रेमी, 7 गढपति,
जाग कर,

भावना (अ)

(1)

सब को देती फल, 'सामी' अपनी भावना,
कहते वेद पुराण सब, यही बात असल,
देते सन्त निर्मल, उज्जवल दर्पण हाथ में।

(2)

भाव देता भाड़ा, सबको अपना अपना,
समझ देख 'सामी' कहे, फेंक तू कबाड़ा,
याद न किया प्रभु को, जन्म है बिगाड़ा,
ऐसा दिहाड़ा, नहीं मिलेगा फिर कभी।

(3)

भाव बनाता भूत,[2] राक्षस मनुष्य देवता,
भाव बनाता आचार्य, ज्ञानी भक्त अवधूत,[3]
भाव भर्ता[4] स्त्री, गुर[5] चेला पूत कपूत,
'सामी' सब का सूत,[6] कहें सन्त जन भावना।

(4)

भाव[7] ही देता फल, सबको अपना हर घड़ी,
छोड़ो चीख़ पुकार को, 'सामी' समझो छल,
फ़ौरन प्रभु भजन में, सच्चा लगा दो दिल,
ऐसा दिन अज्जवल, नहीं मिलेगा फिर कभी।

---

1 किराया, 2 प्रेत, 3 सन्यासी, 4 पति, 5 गुरू, 6 सूत्र, मूल मंत्र . 7 विचार, ख्याल

भावना (ब)

(1)

भाव बनाता भक्त, मिलाता है प्रभु से,
भाव ही डाले भ्रम में, आंख बहाये रक्त,
समझ देख 'सामी' कहे, तजकर मोह ममत्व,
गृहस्थी विरक्त, भाव के कारण दीखते।

(2)

करे कर्म कूर, भाव भटके दस दिशा,
भाव बनाता है धनी, भाव बनाये मज़दूर,
'सामी' भाव ही सन्त संग, करता संशय दूर,
भाव देखे भरपूर, अन्दर बाहर आत्मा।

(3)

भ्रमित भाव करे, भाव ही काटे भ्रम सब,
भाव बनाता दीन है, भाव ही शुभ्र[1] भरे,
समझ देख 'सामी' कहे, यदि तू ध्यान धरे,
प्रभु से करे परे, भाव मिलाये प्रभु से।

(4)

भाव ज्ञान और ध्यान, भाव ही मूर्ख मसख़रा,[2]
भाव[3] ही पापी पाखंडी, भाव ही दान स्नान,
समझ देख 'सामी' कहे,तज कर सब अभिमान,
भाव से भगवान, क्षण भर दूर न हो कभी।

---

1 उज्ज्वल, प्रकाश, 2 विनोदी, मजाकी, 3 विचार, ख़्याल,

(5)

भाव ही भटकाये, चोरासी लाख योनि में,
भाव ही मन निश्चल[1] करे, लगन लगवाये,
समझ कर 'सामी' यदि, तू अंदर देख पाये,
भाव ही दिखलाये, प्रत्यक्ष पूर्ण आत्मा।

(6)

भाव ही भटकाता, चोरासी लक्ष योनियों में,
भाव ही डुबकी रहस्य की,निश दिन लगवाता,
भाव मिलाये साधु से, साधना करवाता,
पद में पहुंचाता, शुद्व भाव 'सामी' कहे।

(7)

पुखों का पाड़ा,[2] किसी पुण्य से है मिला,
उसको किया पट हटा, स्वतः उघाड़ा,[3]
मिटा दिया सब मन का,'सामी' कहे साड़ा,[4]
सब छोड़ा छाड़ा, तभी मन मगन हुआ।

(8)

निर्मल निराला, साधु जन संसार में,
ज्ञानी डरे न जगत् से, सदैव सुखाला,[5]
रत रहता है प्रभु में, मगन मतवाला,[6]
बूढ़ा बल वाला,'सामी' होता ना कभी।

---

1 अचल, स्थिर, 2 पडोस, 3 नगा, 4 जलन, 5 सुखी, आनन्द में 6 मस्त,

(9)

कुसंग छुड़वाये, वही साधु सतगुरू,
देकर गुण हरि भक्ति का, अवगुण मिटवाये,
अन्तर्मुख से जोड़कर, अविघा, हटवाये,
'सामी' दिखवाये, आत्म पद को आंखों से।

(10)

करूं मैं बढ़ाई, कितनी सन्त दयाल की,
मिलकर जिस सत्पुरूष से, ज्ञान बुद्वि आई,
'सामी' समाई, नाना सब निर्वाण में।

(11)

साधु जन होश्यार दूर न होता पिया से,
समझे जो 'सामी' कहे, स्वप्न का संसार,
रखे न तिल मात्र कभी, अंदर में अहंकार,
ज्यों असीम का बार,[1] बरते[2] विधि[3] निषेध[4] बिन।

(12)

सदैव पुरूष परख, करता वेद विचार से,
दिल में धारण कर दया, मिटाता है दुख,
पिये पिलावे प्रेम रस, पावे समता सुख,
सदा रहे सम्मुख, 'सामी' वह स्वरूप के।

ल, बालक, 2 व्यवहार करे 3 प्रणाली, नियम, ढग, 4 मनाही, रोक

भाग – 2

साधु महिमा (अ)

(1)

ठोके बजाये, देखे जीव जगत् के,
अपना स्वार्थ हर कोई, सुने बतलाये,
स्वार्थ बिन कोई सज्जन 'सामी', दिखलाये,
ममत्व मिटाये, निर्मल करे नभ ज्यों।

(2)

हैं ये बेशुमार, साक्ष्य सत्पुरूषों के,
नाना युक्तियों से करें, साधु परोपकार,
व्यर्थ बातें छोड़कर, 'सामी' समझो सार,
अविद्या का अहंकार, मिट जायेगा मन से।

(3)

तजे जो हठ सारा, शरण जा कर साधु के,
उसको प्याला प्रेम का, पिलाता प्यारा,
आश्चर्य सत्य मार्ग का , दिखलाता न्यारा,
द्वैत को निवारा,[1] 'सामी' घुसा प्रवाह में।

(4)

साधु के उपकार, गिनूं कौन से मुख से,
हाथ फेर कर सिर पर ,दे दिया शीतल सार[2],
'सामी' पूरा मिट गया, अविद्या का अहंकार,
साक्षी सृजनहार, लेकर दिया हाथों से।

---

1 हटाया, दूर किया, 2 तत्व

(5)

हैं ये पूजन जोग,[1] साधु जन संसार में,
समझा बुझा निकालते, मन से संशय सोग,[2]
साक्षी सार स्वरूप का, सदा भोगते भोग,[3]
अविद्या भ्रम रोग, 'सामी' काटें सब का।

(6)

अनन्य[4] उपकारी, साधु जन संसार में,
देकर धीर धर्म का, ममता मति मारी,
तारे[5] नर नारी, बिठा भक्ति जहाज़ पर।

(7)

अकथनीय कहते, साधु जन संसार में,
जहां न पहुंच मन की, वहां साथ देते,
'सामी' वे कर के दया, सार हैं बतलाते,
रस्सी से कसते, जिज्ञासु[6] के मन को।

(8)

अद्भुत दिखलाते, साधु मालिक ज्ञान के,
नाव मोड़ पतवार से, भंवर से बचाते,
जहां डेरा प्रभु का, वहीं पहुंचाते,
ताले खुलवाते, बिना चाबी मन के।

---

1 योग्य, 2 शोक, 3 सुख, विलास, 4 एक निष्ठ, 5 तैराये, पार लगाये, 6 ज्ञान प्राप्ति का इच्छुक

(9)

कह कर सुनाते, साधु शब्द हिसाब का,
युक्ति से वे जोड़कर, अलख दिखलाते,
वे ही अंदर जाते, जो गुरू के पथ चलें।

(10)

ज्ञान के रूप अपार, भक्त भारी भगवत् के,
सुन कर स्नेह उन का, बिसरी[1] सुरति[2] संभार,[3]
'सामी' मिले स्वरूप से, कर मन निराधार,[4]
जग[5] में हो जयकार, सन्तों सत्पुरूषों की।

(11)

मिला साधु जन, मन में अविद्या न रही,
लोहा पारस से लगा, सहज हुआ कंचन,
मन से यूं ही मिट गया, 'सामी' सब मनन,
आत्म पद अनन्य, पा कर खुश हो स्वयं में।

(12)

साधु जन सुनार, टूटा मन सुधार दें,
जोड़ें नित जगदीश से, देते द्वैत निकार,[6]
नस नस में हो ठार,[7] क्षण भर में 'सामी' कहें।

---

1 भूली, 2 याद, स्मरण, 3 सभाल, 4 निराश्रय, आधार रहित, 5 ससार, जगत्, 6 निकाल, 7 बहुत सर्दी, पाला, हिम,

(13)

महा ठग आया, साधु बन संसार में,
'सामी' उसने लगन का, मंत्र बताया,
मद्य पिलाकर ज्ञान का, तन मन भुलवाया,
अपना पराया, माल ले उड़ा घर से।

(14)

है दुर्लभ दर्शन, साधु सत्पुरूषों का,
'सामी' मिलता उन को, जिन पर प्रभु प्रसन्न,
तन मन सब कंचन, करता भ्रम निकालकर।

(15)

सन्त ने की दया, तब प्रेमी भेजा दूत इक,
जो था स्वप्न भाव में, उसको जगवाया,
भ्रम मिटा कर मन का, प्रभु मिलवाया,
सूरज दिखलाया, सब अंधियारा भग गया।

(16)

रूह[1] ने किया रेला,[2] याद आई स्वरूप की,
मिलकर सन्त जनों से, बना मन चेला,
सहज दिखाया देह में, प्रभु अकेला,
बिन मेले मेला,[3] 'सामी' हुआ स्वरूप से।

आत्मा, 2 ज़ोर का धमाका, 3 मिलाप ·

(17)

वेद पुराण पढ़कर, मैल न मिटती मन की,
तप तीर्थ कर साधना, खोह[1] देखी घुस कर,
समझ बिना 'सामी' कहे, मैल चढ़ी प्रचुर,[2]
सन्तों से मिल कर, टूटा घड़ा भ्रम का।

(18)

वेद विमल[3] होते, साधु इस संसार में,
नाड़ी मन की देखकर, द्विय दवा देते,
क्षण में कोटि जन्म के, दुख हैं हर[4] लेते,
जुड़ कर जगाते, अपने कुशल यंत्र से।

(19)

दुखी लोभ ने किया, 'सामी' सब संसार को,
काया माया कुल के, धार में बह गया,
करोड़ों में एक ही, अन्तर्मुखी भया,[5]
जिसने साथ लिया, सन्तों सत्पुरूषों को।

(20)

भक्ति भिगाये, साधु जन शीतल करे,
अविद्या पट को वह हटा, निज में दिखलाये,
'सामी' पहुंचा लक्ष्य पर, ममत्व मिटाये,
जग[6] को जगवाये, मार्ग बता विश्वास का।

---

1 गुफा, कदरा, 2 बहुत, 3 स्वच्छ, निर्मल, 4 नष्ट कर, हरण कर, 5 हुआ, 6 जगत्, ससार, दुनिया

(21)

बिरला ही होता, साधु जन संसार में,
जिज्ञासु के मन का, जो संशय मिटाता,
अविद्या हटाता, 'सामी' दिखा सार को।

(22)

सदैव एकांती,[1] साधु जन संसार में,
देखे मन में झांक जो, प्रभु की कांति,[2]
मिटा कर भ्रांति,[3] 'सामी' करता दरस[4] वह।

(23)

सदा ही निर्मल, साधु जन संसार में,
लेप न लगे उन को,जल में ज्यों कमल,
अन्दर सम शीतल, बाहर तपते ताप ज्यों।

(24)

साधु बुला कर, सार दिखाते सब को,
बिरला छोड़े भ्रम को, दीक्षा मन में धार,
देखे अपने आपको, निर्मल करे नज़र,[5]
दूर न परमेश्वर, 'सामी' देखे एक क्षण।

(25)

कर्म हैं कटवाते, साधु जन शुद्ध शिष्य के,
जोड़ उसे वे जगत् से, अन्तर्मुख लाते,
अविद्या कोटि[6] जन्म की, मन से मिटवाते,
'सामी' दिखलाते,आत्म पद को आंखों से।

भक्त जो प्रभु प्रेम को मन में रखे, बाहर न बताये, 2 तेज, प्रकाश, आभा 3 भ्रम, संदेह, धोखा,
क, 4 दर्शन, 5 दृष्टि, 6 करोड़,

(26)

सहज खुले द्वार, सुरति[1] समा कर ध्यान में,
ज्योति दिखी प्रभु की, हद[2] बेहद[3] से पार,
संशय शो क मिटे सभी, पा कर पद अपार,
जगत् में जयकार, 'सामी' सत्पुरूषों की।

(27)

पूर्ण करवाते, 'सामी' इच्छा सत्पुरूष,
किसी को ख़ाली नहीं, गुरूजन लौटाते,
अर्न्तमन को देखकर, झोली भर जाते,
शिष्य का हटाते, अविद्या पटल मन का।

(28)

कहने को कहते, साधु सुधि स्वरूप की,
मन से मनन निकाल कोई, गुरूमुख समझते,
'सामी' वे रहते, बुद्धि लगा कर बोध[4] में।

(29)

कभी न रोकते, साधु किसी कर्म से,
'सामी' वाद विवाद से, दूर सदा रहते,
दर्पण अपने मन का, स्नेह से मलते,
अन्दर युद्ध करते, बाहर कुछ कहते नहीं।

---

1 याद, स्मरण, 2 सीमा, 3 असीमित, अनत 4 ज्ञान,

साधु महिमा (ब)

(1)

परखा सर्व जहान, देखा बुद्धि विवेक से,
'सामी' है कोई नहीं, साधु जन समान,
सहज मन शीतल किया, देकर आत्म ज्ञान,
सर्वदा कुर्बान, जाऊं उसके नाम पर।

(2)

पंडित पुकारे, सार दिखावे सब को,
'सामी' बिरला समझ कर, हृदय में धरे,
फेंक दे वह हर्ष से, परिच्छन्न[1] पोट परे,
सामी देख ठरे,[2] प्रत्यक्ष पूर्ण आत्मा।

(3)

हरिजन खोलें हाट, सौदा[3] करते सार[4] का,
सम का तराजू रखें, सम का रखें बांट,
सौदा ले विश्वास से ,प्रेमी खोल कपाट,
परमेश्वर सपाट,[5] देखे वह 'सामी' कहे।

(4)

हरिजन खोल कर हाट,[6] बैठे कलईगर का,
भ्रम मिटा मन को सदा, करते साफ सपाट,
'सामी' प्रभु देह में, दिखलाते हैं भाट,[7]
खोलें तुरन्त कपाट, प्रेमी जन का प्रेम से।

ढका हुआ, आवरण सहित, 2 ठंडा हो, 3 लेन – देन, 4 तत्व, 5 चिकना, समतल, 6
ान, 7 चारण,

(5)

हरिजन दुकान खोल, करता सौदा सार का,
ले बिरला विश्वास से, 'सामी' दे सिर मोल,
मन मन्दिर में झांककर, देखे रूप अडोल,
सारा संशय घोल, स्थित हो आकाश ज्यों।

(6)

केवल करे किल्लोल,[1] साधु जन संसार में,
जिनको देता सतगुरू, सच्चा ज्ञान अमोल,
सिर से देते फेंक वे, भ्रम पोट बेडोल,
'सामी' दिल को खोल, होली खेलें स्वयं से।

(7)

अतिथि का आदर, श्रधा से साधु करे,
मिटा जिसके मन से , ममत्व मोह मक्कर,[2]
देखे वह आकाश ज्यों, पूर्ण परमेश्वर,
सदा अजर अमर, 'सामी' रहे स्वभाव में।

(8)

साझा[3] साधु जन, देते उपदेश ज्ञान का,
समझे कोई 'सामी' कहे, प्रेमी जन वचन,
कृपा से जो तोड़ दे, सांसारिक बंधन,
रांझे[4] को सज्जन, देखे सदैव हीर ज्यों।

---

1 अमोद–प्रमोद. 2 छल, कपट. 3 सयुक्त 4 हीर राझा लोक कथा का एक पात्र

(9)

ज्यों कमल खिलकर, खुश्बू देता है अच्छी,
त्यों साधु दें सब को, ज्ञान अमूल्य हित कर,
लेता विधि विश्वास से, प्रेमी जन चतुर,
संशय मिटाकर, 'सामी' रहे संतोष में।

(10)

साधु शरण गया, हार कर जो हित[1] सो,
सहज उसका गुरू ने, कार्य सिद्ध किया,
लगा पर्दा भ्रम को, 'सामी' सुखी भया,[2]
बिना बोध[3] पिया,[4] देखे नहीं दूजा कभी।

(11)

साधु के सरन, लाखों लोग हैं तर गये,
सुख हुए 'सामी' कहे, मान सच्चा वचन,
लाते अपनी नाव को, किनारे सज्जन,
धना कबीर सन्त जन, साक्ष्य देते हैं सच्चा।

(12)

साधु जन सुगम, मार्ग बताते मोक्ष का,
'सामी' रखे सूरमा, भ्रम के पार कदम,
करता मन को मार कर, सभी भ्रम भसम,[5]
घर में निज ख़सम,[6] पा कर बैठा पवित्र बन।

कल्याण, लाभ, 2 हुआ, 3 ज्ञान, 4 प्रिय, पति, वर, प्रभु 5 भरम, राख, जलाकर राख या भस्म
ना, 6 पति, वर,

(13)

साधु जन होश्यार, अचानक आकर मिला,
कृपा से दे ज्ञान द्विय, बना दिया गुलज़ार,[1]
तिलमात्र भी न रहा, अविद्या का अहंकार,
'सामी' कहे संसार, देखा ख़ुश हो लक्ष्य में।

(14)

सच्चा साधु जन, करोड़ों में एक हो,
मिटा जिसके मन से, 'सामी' पूर्ण परिच्छिन्न,[2]
प्रभु बिन देखे नहीं, ख़ाली दिशा सज्जन,
बन पारख पूरन,[3] लेता विधि[4] विचार से।

(15)

साधु जन सुजान, मिला पूर्ण पुण्य से,
दिखाया रहस्यमयी, स्पष्ट चेतन भान,[5]
सब के तन में है वही, करते वेद बखान,
तजै मन का अभिमान, देखे बिरला सूरमा।

(16)

साधु जन सुजान, करता नहीं कल्पना,
देखा जिसने आंखो से, उदित चेतन भान,
'सामी' जिसका आश्रय, ले समाधि उत्थान,
मिटा सब अनुमान, लेता आनन्द मुक्ति का।

---

1 चमन, बगीचा, 2 सीमित 3 पूर्ण 4 प्रणाली, तरीका, ढग, 5 भानु सूर्य, चमक, आभा

(17)

साधु सिपाही, मारे मन मवासी[1] को,
पांचों रिपुओं[2] की करे, जमकर पिटाई,
'सामी' चलाये सब जगह, न्याय सच्चाई,
दस दिश दुहांई, देता भ्रम की फौज बिन।

(18)

निश दिन जितना फेर, देखन और सुनन में,
'सामी' समझे सूरमा, कोई साधु सुमेर,[3]
ढूंढ ले जो पद की, परिच्छन्नता[4] का पैर,
हो निर्भय निर्बैर, करे अदालत ज्ञान की।

(19)

मित्र की बारी,[5] निर्जन बस्ती के मध्य,
'सामी' पहुंचे साधु जन, भाग्यवान भारी,
मिटी जिसके मन से, अविद्या अंधियारी ,
देख छवि प्यारी, आनन्द लेता मुक्ति का।

(20)

दिखा अनन्त बाग़, ज्ञान के आकाश में,
'सामी' फूल सब रंग के, भक्ति योग बैराग,
सैर करे बन साक्षी, बिरला साधु जाग,
संशय रहित फाग, क्षण–क्षण खेले स्वयं से।

गढपति, मुखिया, 2 शत्रुओं 3 सुमेरू पर्वत, 4 आवरण, पर्दा, 5 खिडकी

सत्संग महिमा

(1)

होते अगम्य अपार, मार्ग राम मिलन के,
उन सब में से एक हैं, साधु संगति निरवार,[1]
'सामी' मिलकर उनसे, कर लो प्रेम प्यार,
मित्र का दीदार, देख सकोगे भ्रम बिन।

(2)

है यह सब कल्यान,[2] भ्रम भुलावा दूर कर,
मिलकर गुरू जनों से, चेतन का ले ज्ञान,
अपने को पहचान, 'सामी' रह स्वभाव में।

(3)

है यह सब कल्यान, भ्रम भुलावा दूर कर,
मिल कर साधु संग से, अपने को पहचान,
सब कुछ अविद्या जान, मूर्ख प्रभु मिलन बिन।

(4)

दर दर जा न सुना, 'सामी' प्रेम प्रभु का,
मिल कर साधु संग तू, बातें सभी भुला,
पाकर ज्ञान गुरू का, अर्न्तमुख मन ला,
नस–नस में दिखला, मूर्ति परमेश्वर की।

(5)

तू वह पोथी पढ़, जिससे लहे अलख को,
मिलकर साधु संग से, सुख चौकी[3] पर चढ़,
अविद्या में ना अड़, समझ बिना 'सामी' कहे।

---

1 रक्षा, बचाव, 2 कल्याण, 3 चौकोर बैठक

(6)

विचित्र कहलाये, संगति साधु जनों की,
अविद्या मैल अन्दर का, धोकर हटाये,
'सामी' दिखलाये, अपना आप वह नयन से।

(7)

'सामी' समझो छल, काया माया कुल को,
जैसे सुख स्वप्न का, मृग तृष्णा का जल,
जाग निकलो मन से, गुरू गम्य खाम[1] खलल,[2]
कर लो जन्म सफल,मिल कर साधु संग तुम।

(8)

सबसे पद ऊंचा, साधु जन हरि भक्त का,
करोड़ों में एक ही, समझे साधु सच्चा,
खोले वह मोर्चा, 'सामी' परमेश्वर से।

(9)

कर तू पुरूषार्थ,[3] मिलकर गुरू जनों से,
ममत्व मिटा कर मन का,'सामी' बन समर्थ,
आत्म पद अकथ,[4] मिले तप से घर में।

(10)

बड़ी बड़ाई, साधु संग गुरू ज्ञान की,
करोड़ों में एक ही, समझे गुरू भाई,
जिसने गुरू जनों से, मिल खलबल[5] मिटाई,
'सामी' सदा ही, प्रसन्न रहे वह स्वयं में।

व्यर्थ, 2 रूकावट, 3 पराक्रम, उद्यम, 4 जिसका कथन न किया जा सके, 5 शोरगुल, हलचल, व्यग्रता, खलबली

(11)

गिनना बहुत कठिन, महिमा साधु संग की,
सिद्ध साधक योगी यत्ति, गावें गान सज्जन,
जनिक सनिक शुकदेव दत्त, गये सेवक बन,
भाया जिन्हें वचन, 'सामी' सुधर गये सभी।

(12)

लाखों लोग तरे, मिल कर साधु संग से,
जाकर पूछो उनसे, जो हृदय वाक्य धरे,
शीतल मन करे, 'सामी' शीतल जल ज्यों।

(13)

जिसने निर्मल मति, ले ली साधु संग से,
अनन्य आत्म राम की, वही करे भक्ति,
'सामी' सुनता है नहीं, लोक निन्दा स्तुति,[1]
समझे झूठ उत्पति, जग की प्रभु के बिना।

(14)

वही जीते दांव, 'सामी' इस संसार में,
मिल कर साधु संग जो, बदले निजी स्वभाव,
सम्मुख देखे राव, अपनी आंखें खोल कर।

(15)

मूर्ख क्यों मरे, अविद्या के अहंकार में,
मिलकर साधु से यदि, सर्व त्याग करे,
'सामी' अजर[2] जरे[3], तो सम्मुख देखे प्रभु को।

---

1 गुणगान, प्रशसा, 2 जरा रहित, अमर, जो बूढ़ा न हो, 3 जले, जरा ग्रस्त हो

(16)

नाव है साधु संग, नाविक पूर्ण सतगुरू,
जिसे सहारा गुरू दे, 'सामी' वही मलंग,
भव सागर की भीड़ से, होता पार निहंग,
ज्ञान का आत्म रंग, लगे एक को कोटि में।

(17)

कौन सी भेंट धरू, 'सामी' साधु संग को,
हीरे मोती रत्न सब, कंचन थाल भरूं,
बहुमूल्य चीजें सभी, नित कुर्बान करूं,
देकर शीष मरूं, तो भी तुल्य न प्रेम के।

(18)

चाहे नित कहे, छः चार अठारह मुख से,
तप तीर्थ साधन करे, गुफ़ा में रहे,
बिना साधु संगति के, धारा में बहे,
'सामी' कैसे लहे,[1] पीठ दिखाकर स्वयं को।

(19)

उसके सब परमान,[2] ज्ञान ध्यान जप योग यज्ञ,
ज़ो भी साधु संग से, ले ख़ुद को पहचान,
सुख दुख लाभ अलाभ से, हो जाता निरवान,[3]
जाने सब कल्यान,[4] सर्वदा 'सामी' कहे।

ढूढ कर प्राप्त करे, 2 प्रमाण, 3 निर्वाण, मुक्त, 4 कल्याण

(20)

झूठे दूजे काम, साधु संगति हरि भक्ति बिन,
'सामी' कभी न समझते, मूढ़ मति नाकाम,
बिरला गुरूमुख धाम, पहुंचे निज को मुक्त कर।

(21)

दूजे व्यर्थ काम, बिना साधु संग के,
मृगतृष्णा के जल से, प्यास न बुझे तमाम,[1]
पुण्य जगे तब धाम, साधु का सहज मिले।

(22)

मूर्ख क्यों मरे, अविद्या के अहंकार में,
मिलकर साधु से यदि, सर्व त्याग करे,
'सामी' अजर जरे,[2] तो सम्मुख देखे प्रभु को।

(23)

सुमरनी फेरे, क्यों तू पागल समझ बिन,
साधन परमेश्वर बिना, पास बहुत तेरे,
भ्रमों को तू साधु संग, झट निकाल दे रे,
झूल तू हिंडोरे,[3] 'सामी' अनुभवी सार के।

(24)

हीरा जन्म न हार, मूर्ख मन की भांति तू,
मिलकर साधु संग से, अविद्या भ्रम निवार,[4]
अपना आप संभार[5], तो सुखी हो 'सामी' कहे।

---

1 सम्पूर्ण, कुल, 2 **जले**, **3 हिंडोले**, 4 निवारण कर, 5 सभाल

(25)

तज प्रशंसा भाव, काया माया कुल का,
'सामी' परमेश्वर बिना, कोई हो न सहाय,
मिलकर साधु संग से, जल्दी संभाल राव,
ऐसा अच्छा दांव, कभी मिलेगा फिर नहीं।

(26)

बेख ने बदल हज़ार, मूर्ख मन की भांति तू,
नहीं सुना है यह कभी ,झाग[1] लगा दे पर,
मिलकर साधु संग से, अविद्या भ्रम निवार,[2]
अपना आप संभार,[3] तो सुखी हो 'सामी' कहे।

(27)

देखा नहीं करते, मूर्ख सम्मुख प्रभु को,
अविद्या ने अंधा किया, पट न हटा सकते,
भ्रमों में वे भटक कर, पन्ने हैं पढ़ते,
तप तीर्थ व्रत नियम से, श्रम कर जगते,
कंदरा वन पहाड़ में, भूख प्यास सहते,
धारण कर बहु बेख[4] वे, मन में हैं जलते,
बिना साधु संग के, धारा में बहते,
बिरले ही मिलते 'सामी' परमेश्वर से।

समुद्र की फेन, 2 निवारण कर, हटा दे, 3 सम्हाल, 4 स्वांग, नकली
ष

(28)

क्यों तू करे अभ्यास, मूर्ख माया मोह का,
'सामी' जो मरू[1] में करे, भटका कर सब नास,
मिलकर साधु संग तू, कर शून्य में निवास,
तो चेतन चिदाकाश,[2] देख सकोगे घर में।

(29)

तृष्णा एक नदी, बहे तेज़ प्रवाह से,
उसमें कछुए मच्छ मगर, सहस्रों संबंधी,
'सामी' नहीं तोड़ता, तू उनके साथ संधि,
साधु शरण गोदी,[3] है केवल इक तरणि[4] की।

(30)

सौदे किये कई, करके देखे राम बिन,
लाभ न मिला किसी को, चीज़ ख़त्म हो गई,
'सामी' साधु संगति की, शरण जब लई,[5]
स्वतः[6] सुधि हुई, बट्टा[7] ख़्वारी[8] न रही।

(31)

देखे सभी तट, पार लगाया न किसी ने,
बेख,[9] गृहस्थी लोग सब, 'सामी' शूर सुभट,
थक कर साधु संग की, पकड़ी शरण अमिट,
सहज अविद्या किट्ट[10] साफ़ हो गई मन की।

---

1 मरूस्थल, 2 , ब्रह्म, परमात्मा 3 बदरगाह, 4 नदी पार करना, 5 ली, 6 अपने आप, 7 कलक, 8 बदनामी, 9 नकलची, वेष धारण करने वाले, 10 मैल,

(32)

यहां सब भटके, बेख पंथी योगी यति,
कोई नहीं उतारता, ममता के मटके,
बिरला पूर्ण पुण्य से, साधु से अटके,
प्रभु मूर्ति चमके, 'सामी' चित में सहज ही।

(33)

चाहे ले फंकी,[1] मैल न मिटे मन का,
'सामी' साधु संगति की, सच्ची शरण ताकी,
राह बताई जिसने, लक्ष्य की पक्की,
देख दरस थकी, बूंद समाई सिंधु में।

(34)

तीनों लोक भटक, शान्ति न आई मन को,
खोली साधु संग से, अविद्या गांठ झटक,
झूठी लगी चमक, 'सामी' कहे संसार की।

(35)

बिन साधु संगति, 'सामी' सुधरा ना कोई,
जाग निकालो मन से, ममता और कुमत्ति,
पा कर ज्ञान गुरू का, करो अभेद भक्ति,
देखोगे ज्योति, चींटी और कुंजर में।

(36)

कभी नहीं जाये, दुविधा साधु संग बिन,
बात सरल यह ज्ञान की, बिरला समझ पाये,
संशय मिटाये, 'सामी' मिल कर सन्तों से।

---

1 दवाई की पुड़िया,

(37)

कैसी भक्ति से, मिलता प्यारा अपना,
सेवा पूजा साधना, वहां न पहुंच सके,
जप तप योग सभी करे, ख़बर न कोई दे,
'सामी' वे पहुचे, जिन्हें प्रेम है संगति से।

(38)

गंवा न तू अवसर, आ जा सच्ची प्रीति से,
ले जाऊंगा तुझ को, गुरूमुख अपने घर,
चढ़ा प्रेम चहुंडोल[1] पर, ले जाऊं ऊपर,
फिर तू बैठा कर, 'सामी' दर्शन भ्रम बिन।

(39)

बिरला बजाये, नगाड़ा निर्वाण का,
शरण साधु संग की, 'सामी' जो पाये,
पलट घर आये, चाह मिटाकर चित की।

(40)

परखे संग करे, 'सामी' सच्चे सन्त का,
सदा जिसके मन में, प्रेम की ज्योति जरे,[2]
स्वतः सिद्ध स्वरूप से, क्षण भर हो न परे,
वही भंडार भरे, देवे सबको सुख के।

(41)

भक्ति बिन भगवन, सुना नहीं मिलता कभी,
मिल कर साधु संग से, जिसने जीता मन,
वही राम रतन, 'सामी' पाकर नभ चढ़े।

---

1 झूला, 2 जले

(42)

जिसको रंग लगा 'समी' साधु संग का,
उठकर उसके घर से, अविद्या भूत भगा,
किया स्वच्छ समझ से, पीछा और आगा,
सब कुछ बेच नंगा, स्वतः मिला स्वरूप से।

(43)

कहते सौदाई,[1] उसको लोग जहान के,
जिसने साधु संग की, रज[2] सिर लगाई,
चढ़ा ज्ञान के नभ पर, सुध बुध गंवाई,
'सामी' सदा ही, सम्मुख देखे प्रभु को।

(44)

जोगी बैरागी, पंथ सन्यासी सेवड़े,[3]
बिरला उन में होत है, 'सामी' बड़भागी,
जिसने साधु संग से, ममता मति त्यागी,
देखे जग[4] रागी,[5] आंखों से नित स्वयं को।

(45)

माने जो वचन, 'सामी' साधु संग का,
करता वह विश्वास से, वश में मन पवन,
सहज उस सेवक पर, प्रभु हो प्रसन्न,
रब[6] को देकर मन, क्षण भर दूर न हो कभी।

सनकी, बावला, 2 खाक, भस्म, 3 जैन साधु 4 जागकर, 5 गायक, 6 ईश्वर, प्रभु

(46)

जिसने किया मुख, साधु संगति की तरफ़,[1]
मिटा उसके मन का, 'सामी' संशय दुख,
हर्षित देखे स्वयं में, अनुभवी आत्म सुख,
सर्वदा सन्मुख, रहता रमता राम के।

(47)

जो भी जन करे, सौदा साधु संग से,
जावे देश अगम्य को, ज्ञान का माल भरे,
मार्ग–जगाती[2] धर्मराय, उसको देख डरे,
उलट भेंट धरे, 'सामी' श्रधा प्रीति से।

(48)

जो भी गया गिर, 'सामी' साधु शरण में,
मिलता उसी दक्ष को, स्वतः सिद्ध ईश्वर,
'सामी' सुख संसार के, उसको गये बिसर,
लौट न आवे फिर, जन्म मरण के दुख में।

(49)

जो भी लगाये, 'सामी' साधु संग लगन,
चिन्ता चाह निकाल वह, आगे बढ़ जाये,
जन्म मरण दुख सुख का, संशय मिटाये,
सहज समाये, अनुभवी आत्म पद में।

---

1 की ओर , 2 पथ कर वसूल करने वाला.

(50)

जो भी शरण गहे, 'सामी' साधु संग की,
आत्म पद अगम्य की, स्वतः संधि लहे,
रातों दिन रहे, ऊबड़ खाबड़ के मध्य।

(51)

जिन को प्रेम प्यास, आकर रहस्यमय लगी,
'सामी' वे रहते सदा, माया में उदास,
मिलकर साधु संग से, हों दासों के दास,
काटें अविद्या फांस, सब घट देखें प्रभु को।

(52)

जिनको लगी लगन, 'सामी' परमेश्वर की,
मिलकर साधु संग से, प्रेमी करें भजन,
पा कर कृपा ईश की, करते हैं दर्शन,
नभ की सुन गर्जन, जैसे मोर हैं नाचते।

(53)

जिस पर पड़ा प्रभाव, 'सामी' साधु संग का,
उसको देता सतगुरू, सहज सही दांव,
मिटा दुविाा भाव, सब घट[1] देखे प्रभु को।

(54)

जिसको रस आया, 'सामी' साधु संग का,
ढूंढ लिया उसने सहज, पथ[2] बना बनाया,
स्वतः समाया, साक्षी सार स्वरूप में।

प्राणी, देह, 2 मार्ग

(55)

जिसको बाण लगा, 'सामी' साधु संग का,
पलटा अन्तर्मुख हुआ, झटपट भ्रम भगा,
चढ़ा ज्ञान के नभ पर, सब कुछ बेच नंगा,
पीछा और आगा, जाने सब कुछ प्रभु का।

(56)

जिसको लपेटा, आकर प्रभु प्रेम ने,
उसको मिला साधु संग, संशय सब मिटा,
घुस कर उसने घर में, देखी प्रभु छटा,
सुखी बन लेटा, 'सामी' सुषुप्ति सेज पर।

(57)

जिसको रस आया, 'सामी' साधु संग का,
मन को मोड़ मर्म से, अन्तर्मुख लाया,
सार समझ गुरू वचन का, संशय मिटाया,
बना बनाया, ढूंढ लिया . सुख सम का।

(58)

जिसको मिला फल, मीठा साधु संग का,
मिटा उसके मन का, 'सामी' सब ख़लल,[1]
स्वतः सिद्ध स्वरूप से, दूर न होता पल,
आठो प्रहर अचल, रहता अपने हाल में।

---

1 रूकावट,

(59)

जिसको मिला फल, 'सामी' साधु संग का,
आग जला न सके उसे, डुबा सके ना जल,
अन्दर बाहर नभ ज्यों, रहे अलेप अचल,
जाने माया छल, चढ़ बैठा चहुंडोल[1] पर।

(60)

जो भी बढ़ाये पग, साधु संगति की तरफ़[2],
'सामी' सेवक को नहीं, ठगे अज्ञान का ठग,
काया माया कुल में, रहे अलेप[3] अलग,
जीते सारा जग, जा पहुंचे प्रभु शरण में।

(61)

जिसने सच जाना, मिलकर साधु संग से,
प्रेम भट्टी मन में जला, रहता दीवाना,
तजकर भ्रम नाना, 'सामी' घुसे प्रवाह में।

(62)

बीती भुला प्रियवर, शेष बिताओ रहन से,
'सामी' साधु संग के, पैर पकड़ जा कर,
खुश हो परमेश्वर, उठा लेंगे हाथों से।

(63)

छल कपट को छोड़, आओ साधु संग में,
संतो सत्पुरूषों से, 'सामी' मन को जोड़,
तो वे तुझ को दौड़, बचा लेंगे क्षण में।

झूला, 2 की ओर, 3 जिस पर लेप न लगे

(64)

जो धर देता सिर, जाकर साधु शरण में,
वह घटता बढ़ता नहीं, रहता है स्थिर,
'सामी' सोवे सेज पर, संशय छोड़ चतुर,
चाटे मधु मधुर, शिला अलोनी[1] चेत की।

(65)

रखता जो नाता, निश दिन साधु संग से,
भक्ति माला को गले, वही पहन पाता,
'सामी' प्रभु को वही, घट घट जान जाता,
कुछ ना बतलाता, सेवक बन सेवा करे।

(66)

बिरला पहचाने, मर्म सच्चे शिष्य का,
जो मिल साधु संग से, सर्वग[2] को जाने,
चले हठ को छोड़कर, प्रभु इच्छा माने,
'सामी' चद्दर ताने, सोवे सुषुप्ति सेज पर।

(67)

साधु संग की ओट, लेता जो विश्वास से,
कोई कर सकता नहीं, उस चेतन पर चोट,
बनता सम 'सामी' पटक, पाप पुण्य की पोट,[3]
तन में तीर्थ कोट,[4] करे नित संशय बिना।

---

1 नमक रहित, 2 सर्वव्यापी, 3 पोटली, 4 कोटि, करोड़

(68)

बिरला पहचाने, क़दर[1] मानुष देह की,
जो मिला साधु संग से, प्रभु को जाने,
देख सर्व संसार को, छन्नी में छाने,
'सामी' पहचाने, जग कर अपने आपको।

(69)

जो जन बढ़ा पग, जाता साधु संग में,
देश अगम्य की राह वह, लेता खोज मलंग,
'सामी' बन सर्वग,[2] पावे सुख स्वरूप का।

(70)

साधु संग में पल, बिताता जो भ्रम बिन,
मिटता उसके मन से,'सामी' सब ख़लल,[3]
आठों प्रहर अचल, प्रसन्न रहे स्वयं में।

(71)

'सामी' सब बिसार,[4] लेखा जोखा मन का,
मिलकर साधु संग से, अपना आप संभार,[5]
तो सच्ची दरबार, में तेरा, मान सम्मान हो।

(72)

तृप्त होत न दीन, साधु संग हरि भक्ति से,
जैसे रहती नीर में, सदैव प्यासी मीन,
भृंग[6] न भेदे फूल को, मर कर हो लवलीन,
मृग भटके बन दीन, परवाह[7] करे न जान की।

इज्जत , 2 सर्वव्यापी, 3 रूकावट, 4 भला दे 5 संभाल, 6 भौंरा, 7 चिंता, फिक्र.

(73)

'सामी' नीति अनीत,[1] क्यों सोचे तू मन में,
मिलकर साधु संग से, इस विद्या को जीत,
छोड़ अहं[2] कर प्रीत, तो सम्मुख देखो प्रभु को।

(74)

'सामी' सच्ची लगन, लाल करती लाखों का,
मिलकर साधु संग से, तू चढा रंग सज्जन,
कभी मिलेगा फिर नहीं, ऐसा दांव वरन्,[3]
अपना कर न दमन, अविद्या के अहंकार संग।

(75)

जो लेता है भाग, 'सामी' साधु संग में,
सुना सत्पुरूषों का, उसने मधुर राग,
प्रसन्न रहे स्वयं में, खाकर रोटी साग,
खुल जाता है भाग, उसके दर्शन मात्र से।

(76)

बिरला समझ पाये, साधु संग के सुख कों,
'सामी' जिसको सतगुरू, घर में ले आये,
मौज से बिताये, आठों प्रहर वह प्रभु संग।

(77)

बिरला ही पाये, 'सामी' सुख स्वरूप का,
मिलकर साधु संग से, लगन लगाये,
भेद समझ जाये, निर्गुण और सगुण का।

---

1 अनीति, 2 अहंकार, 3 नहीं तो,

(78)

घर में घूम आया, खलबल[1] मगर मिटी नहीं,
मिलकर साधु संग से, संशय मिटाया,
चींटी और कुंजर[2] में, अलख दिखलाया,
'सामी' समाया, जल बुदबुदा जल में।

(79)

जीते बिरला भाट,[3] बाज़ी मन मवासी[4] से,
मिलकर साधु संग से, बूंद अनंत ले चाट,
जीते अविद्या नीच को, दुविधा को दे काट,
समझे सहज सपाट, कथा कहानी ज्ञान की।

(80)

परे से परे, महिमा साधु संग की,
शीष झुका कर सहस्रों, वेद का पठन करें,
ब्रह्मा विष्णु महेश सन्त, देते साक्ष्य खरे,
कोटि उपाय करे, मन वाणी पहुंचे नहीं।

(81)

सत्पुरूषों का संग, शीतल करता सब को,
विधाता का दे मिटा, लिखा लेख मलंग,
जा कर पूछो उनसे, जिनको लगा रंग,
'सामी' बने सर्वग, बरते विधि विचार से।

व्यग्रता, खलबली,, 2 हाथी, 3 चारण, 4 गढ़पति,

(82)

देखा शून्य सकल, साधु बिन संसार में,
प्यास मिटाता है नहीं, मृग तृष्णा का जल,
जगा पुण्य का फल, तब ही साधु संग मिला।

(83)

साधु संग समान, जप तप कुछ भी है नहीं,
ना है योग युक्ति कोई, और न दान स्नान,
ना है त्याग बैराग कुछ, और न ज्ञान ध्यान,
सब में है अभिमान, 'सामी पद अकथ्य से।

(84)

साधु का संग कर, छोड़ व्यर्थ कार्य सब,
आगुंतक का प्रेम से, जो करते आदर,
जाति वर्ण कुल कर्म में, रखते नहीं अंतर,
देते मिला चतुर, स्वतः सिद्ध स्वरूप से।

(85)

कभी न जाय कही, महिमा साधु संग की,
मन बुद्धि वाणी से परे, गहरी अथाह देही,[1]
साक्ष्य दें ''सामी'' कहे, प्रेमी जन अनुभवी,
मन में घुस विरही, सदा लेते शांति सुख।

---

1 आत्मा.

(86)

साधु संग गया, अविद्या संशय मन का,
जैसे भृंग के संग से, कीड़ा भृंग भया,[1]
पारस ने छू लौह को, 'सामी' स्वर्ण किया,
जल में समा गया, ज्यों खिलौना शक्कर का।

(87)

साधु संग सड़ा, संशय कोटि जन्म का,
तिमिर[2] अंदर में न रहा, मानों सूर्य चढ़ा,
'सामी' अनगढ़ा, देखे देव को देह में।

(88)

सत्पुरूषों का संग, करे जो सच्चे प्रेम से,
मोड़े मन पवन को, लेकर अपना ढंग,
मन्दिर में भटके नहीं, नहीं नहाये गंग,
ख़ुद को देता रंग, स्वतः सिद्ध स्वरूप से।

(89)

जिसे परम पारस, छूता है संग साधु का,
वह केवल कंचन हुआ, तज ममत्व का निस,[3]
सदा रहे 'सामी' कहे, मुक्त वही ख़ालिस,[4]
जाने सारा विश्व, चमत्कार चेतन का।

(90)

साधु संग पाई, जीवनी बूटी जग[5] में
मूर्ति सब घट ईश की, साफ़ नज़र आई,
'सामी' मिटाई, मन्सा मदमाती सकल।

हुआ, 2 अंधेरा, 3 पाखंड, 4 शुद्ध 5 जगत्

साधु संगति महिमा (अ)

(1)

उसे कहें पागल, पागल जीव जगत् के,
जिसने साधु संग से, कारज[1] किये सफल,
किया ज्ञान जलयान[2] से, पार अविद्या सिंधु जल,
'सामी' अजर[3] अटल, पूर्ण समझे पिया को।

(2)

मानव जन्म अमोल[4], पाया पूर्ण पुण्य से,
उसको भव सागर में, भटकाये क्यों बोल?
'सामी' मिल लो सन्त से, आत्म सुख अडोल,[5]
ऐसी वस्तु सुडोल, मिलेगी ना फिर कभी।

(3)

झूठे कह न वचन, द्वार द्वार पगले ज्यों,
मथ लो अपने मन को, साधु संग सज्जन,
ऐसा समय चेतन, कभी मिलेगा फिर नहीं।

(4)

करें जो कुर्बान[6], तन मन धन सत्संग पर,
चित उन्हीं का सोच से, सहज ले निरवान,
चींटी और कुंजर[7] में, देखें इक भगवान,
'सामी' कई इंसान, उन से मिलकर मुक्त हुए।

---

1 कार्य, 2 पानी का जजाज, 3 अमर, जरा रहित, 4 जिसे खरीदा न जा सकें, 5 जिसे हिलायाय न जा सके, 6 न्योच्छावर, 7 हाथी

(5)

बिरला जन जाये, भवसागर को पार कर,
'सामी' सत्पुरूषों की, जो बात मान पाये,
सिर जो तुड़वाये, पांचों का प्रतीति[1] से।

(6)

बिरला ही प्रसन्न, रहता अपने घर में,
'सामी' समझे सार जो, सुन कर सन्त वचन,
क्षमा का निज धन, रख कर बैठा जेब में।

(7)

हरि भक्तों का हित,[2] करता है जो भ्रम बिन,
जगकर अविद्या नींद से, सहज हुआ सचेत,
पाकर पद अद्वैत, 'सामी' घुसा प्रवाह में।

(8)

साधु संग सफले, जन्म हुआ उस जीव का,
जाग तजे जो मन का, 'सामी' ममता मल,[3]
किसी से न करे कभी, झूठ कपट और छल,
सदा रहे शीतल, प्रसन्न अपने हाल में।

(9)

जा कर सुन बानी, कि कहते हैं क्या सतगुरू,
निकाल मक्खन डाल कर, तू मन में मथानी,
आलस तज है जा रही, बेला सुहानी,
फूटे घट[4] पानी, और रेत मुट्ठी में न रूके।

विश्वास, 2 भलाई, 3 मैला, विष्टा, 4 मटका

(10)

नहीं ,कुछ लाये, और न कुछ ले जाओगे,
नाहक माया मोह में, क्यों मन जलाये,
मन मन्दिर में झांक तू, देख नहीं पाये,
अब क्यों पछताये, अन्त समय 'सामी' कहे

(11)

पाले में पानी, त्यों साक्षी देखा सब में,
सुरति[1] जा स्वरूप में, 'सामी' समानी,[2]
मिलकर साधु संग से, मौज करे जानी,[3]
सूक्ष्म पहचानी, संधि परमेश्वर की।

(12)

वही करे सत्संग, जो जन मुक्त जहान[4] में,
निकाले जो भ्रम की, मन से इच्छा तंग,[5]
बोले सुने कुछ नहीं, ले इक वचन दबंग,
प्रभु को सर्वग,[6] स्वयं देखे 'सामी' कहे।

(13)

सन्त ने खोला हट, हीरे मोती लाल का,
खोली गांठ खुशी से, देख निष्कपट,
दी एनक[7] अमूल्य इक, दिखवाया प्रकट,
'सामी' दिया अमिट[8], बना दिया है जौहरी।

---

1 याद, स्मरण, 2 समाई, 3 जान से प्यारा, 4 जगत्, 5 संकरी,
6 सर्वव्यापी, 7 चश्मा, 8 जो मिट न सके

(13)

सत्पुरूषों का दर,[1] पकड़े जो विश्वास से,
पाया उसने तप[2] से, आत्म सर[3] सुभर,[4]
हुआ अजर अमर, 'सामी' रहे स्वभाव में।

(14)

किया साधु संग, 'सामी' जिसने प्रीति से,
सहज उसके मन का, हुआ संशय भंग,
वही पार निहंग,[5] होता अविद्या भंवर से।

(15)

साधु जन बुला, जिसे बिठाये पास में,
उसके मन का भ्रम सब, देत निकाल भला,
'सामी' दिखाये प्रभु को, आंखों से उजला,
खावे नित भोला, लड्डू प्रेम अगम्य का।

(16)

जिसने पद पाया, 'सामी' मिलकर सन्त से,
स्वयं न समझा सन्त ने, सार है समझाया,
रहे जीव जंजाल में, भ्रम ने भटकाया,
गुरू वह कहलाया, जो समझाये मूर्ख को।

(17)

हमेशा हरिजन, जिज्ञासु को जोड़ते,
दे देते है हर्ज से, नाना वेद वचन,
'सामी' करे भजन, संशय द्वैत निकाल कर।

द्वार, 2 तपस्या, 3 सरोवर, 4 शुभ्र,उज्वल, उद्दीप्त, . 5 एकाकी,
केला

साधु संगति महिमा (ब)

(1)

महिमा कही न जाय, कबहुं साधु संग की,
मन बुद्वि वाणी से परे, अनन्त समझ न आय,
साक्ष्य दें 'सामी' कहे, मध्यस्थ सही उपाय,
जो घर में घुस पाय, लेता सदैव शांति सुख।

(2)

सब को परम पुनीत, करता साधु संग है,
लगा कपाट भ्रम को, समझे एन[1] अतीत,[2]
पूर्ण देखे अपना, आदि अनुभवी मीत,
सदा ही मनजीत,[3] 'सामी' रहे स्वभाव में।

(3)

सदा ही शीतल, संगति साधु जन की,
दिल से वही निकालते, है ममता का मल,[4]
लक्ष्य दिखाते ज्ञान से, करके वे अचल,
जैसे जल में जल, समा जाय 'सामी'कहे।

(4)

लगा भ्रम का पट[5],'सामी' छिपे हैं प्रभु जी,
बिरला कोई साधु संग, करे भिक्षु प्रकट,
जिन को प्रभु दरस की, मन में ललक अमिट,[6]
देखे वही निकट,[7] खोल पटल को देह में।

---

1 ठीक, 2 बीता हुआ, 3 मन को जीतने वाला, 4 विष्टा, मैला,
5 परदा, 6 जो मिट न सके, 7 पास

(5)

खेत मांहि प्रियतम, अंध देखते हैं नहीं,
भटकें बुद्धि मर्म बिन, पूर्व और पश्चिम,
'सामी' खोजे साधु संग, उसे जगा[1] सुगम,
मिटा भेद[2] भ्रम, स्थित हो आनन्द में।

(6)

देत भंवर से तार,[3] सबको साधु संगति,
नहीं किसी को छोड़ते, पहुंचाते हैं पार,
यूं कहते है अनुभवी, पंडित लोग पुकार,
ले निश्चय पतवार, 'सामी' बिरला सूरमा।

(7)

भव सागर भारी, लांघा जाय न लक्ष्य बिन,
चाहे सब साधन करे, योग यत्न जारी,
समझे कोई 'सामी' कहे, उत्तम अधिकारी,
बदनामी भारी, भुला देत जो साधु संग।

(8)

शान्ति नहीं मिली, तीनों लोक भटक कर,
मिल कर साधु संग से, अविद्या गांठ खुली,
ढूंढा अपना हर्ष से, अनुभवी घर असली,
'सामी' चमक नकली, याद रही न जहान[4] की।

जागृत, 2 रहस्य, 3 तैरा कर पार कराना, 4 संसार, जगत्

(9)

देखा सब कुछ नास, 'सामी' साधु संग बिन,
मृगतृष्ण के जल से, मिटती नहीं प्यास,
जाकर पूछो उनसे, जो करते पुण्य दास,
चाहे रहें उदास, तो भी राजा देश के।

(10)

विकार[1] भटकाये, सब जीवों को जगत् में,
सर्प विष आदि से मिले, कई जन्म पाये,
'सामी' शूर बचा वही, जो साधु संग जाये,
दुविधा बुझाये, पावे पूर्ण पद वह।

(11)

जिस को नहीं क़दर,[2] है कुछ साधु संग की,
मर कर आता लौट फिर, अविद्या में आतुर,[3]
'सामी' सच्चा मानता, प्रभु इच्छा अमर,
सर्वदा हाज़िर,[4] रहता रमता राम में।

(12)

कुछ की व्यर्थ विचार, करते आयु बीत गई,
कुछ मिल साधु संग से, शीतल हुए होश्यार,
'सामी' बैठे सम बन, सब का कर सत्कार,
अकथ[5] सुख अपार,[6] नहीं बताते किसी को।

---

1 दोष, 2 इज्जत, 3 आहत, पीडित, व्याकुल, उत्सुक, 4 उपस्थित, 5 जिसका कथन न हो सके, 6 अनन्त, असीमित

(13)

साधु संग अमल,[1] जिसको सच्चा मिल गया,
सहज हुआ 'सामी' कहे, उसका जन्म सफल,
सोवे सुषुप्ति सेज पर, मिटाकर खलबल,[2]
गावे बिलावल,[3] मिलकर वह प्रियतम से।

(14)

सामी साधु संगति, देती शिक्षा ज्ञान की,
'सामी' उसके मन में, रहा न खब्त[4] रती,
जग में जग जैसा रहे, मिले जिसे सुमति,
बैठे वहां यति, जहां नहीं दिन रात हो।

(15)

माने जो वचन, सच्चा साधु संग का,
उसने है विश्वास से, पाया निजी[5] वतन,
सब में इक चेतन सदा, पावे आत्म धन,
मिटाकर मनन, आनन्द लेवे मुक्ति का।

(16)

जिस को रस आया, सच्चा साधु संग का,
प्रेमी ने विश्वास से, मन को लगाया,
पूर्ण समझ पिया को, संशय मिटाया,
'सामी' समाया, जल बुदबुदा जल में।

मैल रहित, पवित्र, निर्मल, 2 व्यग्रता, खलबली, 3 राग का नाम,
सनक, पागलपन, 5 निज का, अपना

(17)

जिस को रस आया, सच्चा साधु संग का,
उसने लोभ त्याग मन, लग्न से लगाया,
पाकर पूर्ण पद को, संशय मिटाया,
'सामी' समाया, जल बुदबुदा जल में।

(18)

कहते सौदाई,[1] उसको लोग जहान के,
जिसने साधु सन्तों की, रज[2] सिर लगाई,
समझे झूठी कल्पना, अपनी पराई,
बनी बनाई, संधि खोज ले सम की।

(19)

हर इक पछताया, करके कर्म भले बुरे,
'सामी' बचा वह शूर जो, सन्त शरण आया,
ममत्व वेद विचार से, जिसने मिटाया,
जहां मुख घुमाया, वहां देखा प्रभु को।

(20)

सब को साधु संगति, लक्ष्य दिखाये ज्ञान का,
बिरला कोई शूर ले, अविद्या से उपरति,[3]
किसी की करता नहीं, निन्दा और स्तुति,
जागरण में सुषुप्ति,[4] सदा रहे 'सामी' कहे।

---

1 पागल, सनकी, 2 खाक, भस्म, 3 सन्यास, त्याग, विरति, 4 गहरी नींद

गुरूमुख (अ)

(1)

वेदान्ती बखान, करे स्वतः स्वरूप का,
समझे कोई 'सामी' कहे, गुरू का शिष्य सुजान,
जैसे दिखते सूर्य, चन्द्र, नित हैं प्रकाशमान,
त्यों ख़ुद को पहचान, देखे पलट अभेद बन।

(2)

वेदों के वादी, करोड़ों हैं भटकते,
बातें सुन बातें करें, दिखायें उस्तादी,
ढूंढ लेत गुरूमुख[1] कोई, अनुभवी सुख आदि,[2]
गगन में गादी,[3] पा कर बैठा प्रेम से।

(3)

हर कोई राम कहे, मर्म भुला कर मुख से,
करोड़ों में एक ही, गुरूमुख रहन[4] रहे,
साधे मन पवन को, 'सामी' सार लहे,[5]
कभी नहीं बहे, संशय के सागर में।

(4)

गुरू शिष्य की गत,[6] समझे जो 'सामी' कहे,
मिटा उसके मन से, अन्य सब ममत्व मत,[7]
अन्दर बाहर नभ ज्यों, देखे साक्षी सत[8],
सभी सन्त सहमत, साक्ष्य देते सत्य का।

दीक्षित, 2 प्रारम्भिक, सनातन, 3 गद्दी, 4 रहने की क्रिया, आचरण,
प्राप्त करे, 6 अवस्था, दशा, हालत, 7 विचार, बुद्धि, 8 सत्यता, सच्चाई,
र, तत्व

(5)

सन्त यही कहते, है ठाकुर तेरे घर मे,
झूठी कहें कहानियां, सत्य न देखते,
नित कल्पित नदिया की, धारा में बहते,
गुरूमुख पा लेते, 'सामी' जुड़ स्वरूप से।

(6)

महल में बसते,[1] जाकर देख तू प्रभु को,
ज़ाहिर[2] बोले कुछ नहीं, बात गुप्त कहते,
नयन झरोखे नाथ को, देखते रहते,
वे अंदर घुसते, गये गुरू के शरण जो।

(7)

मुख बिना खाई, जान जीव की भ्रम ने,
किसी की चलती नहीं, बुद्धि चतुराई,
बिरले गुरूमुख को सही, बात समझ आई,
'सामी' समाई, उसकी सुरति[3] स्वरूप में।

(8)

डूब गया संसार, है सागर में भ्रम के,
किया लोभ की लहर से, अविद्या ने अंधकार,
बिरला गुरूमुख ही करे, कृपा से यह पार,
पांचो शत्रु[4] मार, 'बाभन' वह प्रसन्न रहे।

---

1 रहते, 2 प्रकट, सामने, 3 याद, स्मरण, 4 पाच विकार अर्थात् काम क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार,

(9)

सारी दुनिया बही, जाती अपने ख़्याल[1] में,
बिरला ही गुरूमुख करे, 'सामी' बात सही,
पांचो दूत[2] दहन करे, चढ़ता नभ वही,
राज करे स्नेही, अनन्त बेगमपुर पर।

(10)

सारा विश्व बहे, अस्तित्वहीन नदी में,
समझ बिन 'सामी' कहे, स्थिर नहीं रहे,
गुरूमुख सार लहे,[3] साधु संगति के धीर से।

(11)

सभी लोग हैरान,[4] दिखे माया मोह में,
बिरला कोई गुरूमुख रहे, सम शीतल निरवान,
जिसको आत्म ज्ञान, 'सामी' देता सतगुरू।

(12)

हर कोई कहलाये, ज्ञानी पंडित स्वयं को,
'सामी' मन में झांक कर, देख नहीं पाये,
ख़ुद को निकाल ख़ुद[5] से, यदि लगन लगाये,
तो बैठा बजाये, नगाड़ा निर्वाण का।

(13)

'सामी' नहीं छोड़े, सतगुरू अपने शिष्य को,
जैसे तैसे स्वयं से, वह उसको जोड़े,
निश दिन मन मोड़े, रखकर आंखें आंखों में।

---

1 विचार, 2 पाच विकार अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, 3 प्राप्त करे, 4 बैचेन, परेशान, 5 स्वय

(14)

रोकर गले मिला, 'सामी' सेवक गुरू से,
छल माया का देख कर, भय से पूर्ण हिला,
सहज युक्ति मुक्ति की, गुरू ने दी दिला,
वहां ले गया बुला, जहां भ्रम कुछ है नहीं।

(15)

'सामी' सवाली, आया गुरू के शरण में,
अपना विरद[1] पहचान कर, प्रीति दे डाली,
चढ़ी चेतन रंग की , नस नस में लाली,
प्रभु बिन ख़ाली, दिखे न छेद सुई का।

(16)

'सामी' नहीं दिखी, गुरू शिष्य की गत[2] कभी,
सूक्ष्य से सूक्ष्म अति, धांर असि[3] तीखी,
पूछ देख विश्वास से, मुनि सिद्ध देव ऋषि,
जिसके भाग्य लिखी, मौज करे वह ममत्व बिन।

(17)

वाणी दिखलाये, साक्षी पद निर्वाण का,
करोड़ों में एक ही, समझे सुख पाये,
अविद्या पट गुरू ज्ञान से, जो भी हटाये,
'सामी' समाये, वह अनुभवी आत्म पद में।

---

1 यश, कीर्ति, 2 दशा, अवस्था, हालत, 3 तलवार

(18)

'सामी' सन्त बड़ी, सब कहते हैं बात इक,
बिरले ही गुरूमुख को, सम की सूझ पड़ी,
छोड़े मन्दिर मढ़ी, द्वार देखे जो प्रभु का।

(19)

'सामी' सब का देव, है पुरूषार्थ अपना,
करोड़ों में एक ही, गुरूमुख समझे भेव,[1]
अविद्या का अहमेव,[2] निकाले जो अंदर से।

(20)

'सामी' समाया, गुरूमुख रहे पद में,
जिसका पूर्ण गुरू ने, ममत्व मिटाया,
वही समझ पाया, सच्चा ज्ञान अलख का।

(21)

सबको मारे बान, माया कस कर मोह का,
छल से डाले द्वैत[3] में, हराये पहलवान,
छीने गुरूमुख[4] ज्ञान से, उसका बल बलवान,
जिसको गुरू सुजान,[5] मार्ग दिखता सत्य का।

(22)

सबको जाये निगल, माया डायन मुख बिन,
'सामी' हरिजन पर चले, नहीं रांड का छल,
जिसे हरि निर्मल, दिखाता चींटी हस्ती[6] में।

---

1 रहस्य, भेद, 2 घमंड, अहंकार, 3 दुविधा, 4 दीक्षित, 5 अच्छा जानकार, 6 हाथी

(23)

सभी हाथ मलते, अविद्या में अंधे ज्यों,
देह मानकर स्वयं को, जप तप हैं करते,
बिरले को ही ज्ञान के, वाक्य अच्छे लगते,
वही जन उठते, गुरू उठाये जिन को।

(24)

सब को लगा रोक, अविद्या के अभिमान का,
करोड़ों में एक ही, गुरूमुख रहे अरोग,
जिसको देता सतगुरू, ज्ञान का आत्म योग,
तजकर संशय सोग,[1] 'सामी' चढ़ता नभ पर।

(25)

सभी प्रेम कहें, प्रेम न आवे कथ्य में,
ज्यों आकाश घटा में, सदा अलेप रहे,
गुरूमुख संधि लहे,'सामी' मिल कर सन्तों से।

(26)

माया में अपरस, बिरला ही गुरूमुख रहे,
करता है जो भ्रम से , 'सामी' समझ कर बस,[2]
वही करता प्रेम से, मन इंद्रियों को वश,
क्षमा की खसखस,[3] घोट[4] पिये जो प्रेम से।

(27)

माया में उदास, बिरला कोई गुरूमुख रहे,
जो करता मिल साधु संग, अन्तर्मुख अभ्यास,
ज्यों घन बीच आकास, त्यों साक्षी देखे सब में।

---

1 शोक, 2 बहुत, यथेष्ट, 3 पोस्ते के दाने, 4 बारीक पीसने के लिये बार बार रगडना

(28)

माया में उदास, बिरला कोई गुरूमुख रहे,
करे जो गुरू ज्ञान से, अन्तर्मुख अभ्यास,
चढ़कर देखे समझ बिन, ज्ञान का आकास,
'सामी' समझे नास, दृष्टमान संसार को।

(29)

जिसने कमाई , भक्ति गुरू विश्वास से,
मैल उसी के मन में, नहीं रही राई,
प्राप्त करे प्रतीति[1] से, अमित बड़ाई,
'सामी' वही भाई, सम्मुख देखे प्रभु को।

(30)

जिसको लगा बान, सतगुरू जागृत का,
भेदी[2] समझे स्वयं को, चार दिन मेहमान,
मन से भ्रम निकाल कर, रहे सहित परमान,[3]
निज को वही सुजान, 'सामी' देखे सब में।

(31)

जिसको दे दी टेक, गुरू ने पूर्ण सत्य की,
स्थिर रखता मन को, वही गुरूमुख[4] नेक,
'सामी' कहे संसार में, रहता सहित विवेक[5],
भोगे भोग[6] अनेक, तो भी न्यारा नभ ज्यों।

विश्वास. 2 भेदिया, गुप्त रहस्य जानने वाला. 3 प्रमाण, 4 दीक्षित,
समझ, बुद्धि. 6 सुख, विलास

(32)

समझ और विश्वास, जिसको दिया गुरू ने,
'सामी' एकान्ती बने, देखे इक प्रकास,
चाहे छिपे दास, तो भी छिप सकता नहीं।

(33)

समझे सच शीतल, वही राजा देश का,
मानें उसको भिक्षु और, पीर, अमीर सकल,
उस का यश अटल, 'सामी' मिला जिसे सतगुरू।

(34)

समझे जो मर्म, 'सामी' परमेश्वर का,
मिटा उसके मन से, सब भुलावा भ्रम,
जप तप ध्यान धर्म, वही सहज सब कुछ करे।

(35)

जागृत वे होते, जो तिमिर[1] भगाते मन से,
वश में कर के इन्द्रियां, धीरज हैं रखते,
किसी से तिल मात्र हठ, ईर्ष्या ना करते,
'सामी' देख सकते, सम्मुख अपने प्रभु को।

(36)

सब कुछ समझ कर, फेंको बल 'बाभन'[2] कहे,
गले मिलो तुम गुरू से, रहस्य से रोकर,
मन से पूर्ण निकाल दो, दुविधा सब धोकर,
तब बिन चुंगी कर, मिलेगा दर[3] प्रभु का।

---

1 अंधेरा, 2 ब्रह्मण, कवि का उपनाम, 3 द्वार

(37)

सतगुरू पुरुष दयाल, खोजे जो परिश्रम से,
सहज हुआ 'सामी' वही, नज़र से निहाल,[1]
ख़ुश होकर देखे वही, ज्ञान से रूप रसाल,[2]
काट संशय काल,[3] सोवे सुषुप्ति सेज पर।

(38)

दया में दयाल, है दया भी दयाल में,
समझ देख 'सामी' कहे, तज कर व्यर्थ ख़्याल,[4]
प्रभु की दया बिना, है सब भ्रम का जाल,
नज़र से निहाल, गुरूमुख हुए बहुत से।

(39)

सन्तों के संग मिल, गुरूमुख समझे सार को,
'सामी' रहे समाधि में, सर्वदा निर्मल,
रामकली[5] हर पल, गावे चिदाकाश में।

(40)

जिसने भी जाना, गुरूगम्य मन में झांकना,
'सामी' उसने प्रभु को, सहज पहचाना,
तोड़ संबंध माना, जीते जी वह यम से।

(41)

जो गुरूमुख नीयत,[6] समझे निरंजन देव की,
'सामी' उससे बात ना, कोई रहे गुप्त,
चाबी करे प्राप्त, अनुभवी देश अगम्य की।

1 सतुष्ट, 2 रसीला, 3 समय, यम, 4 विचार, 5 एक राग का नाम,
6 उद्देश्य, इच्छा, आशय.

(42)

निकाले पयाल,[1] जो गुरूमुख निज घर से,
उसको कुछ करता नहीं, 'सामी' कल्पित काल,
समझकर सब ज्ञान से, करे प्रभु का ख़्याल,[2]
सदा ही निहाल,[3] रहे अपने हाल में,

(43)

तृष्णा भगाये, वही जिज्ञासु[4] जगत् में,
मिलकर साधु संग से, अन्तर्मन जाये,
गुरूगम्य देखे स्वयं को, अविद्या हटाये,
ममत्व मिटाये, 'सामी' रहे धैर्य रख।

(44)

अन्तर्मुख लाये, जोड़े मन को युक्ति से,
सब प्रभु इच्छा मानकर, हठ को भगाये,
चींटी और कुंजर[5] में, 'सामी' सम पाये,
मौज उसे आये, 'सामी' मिलकर प्रभु से।

(45)

यही करे सवाल,[6] जिज्ञासु जगदीश से,
देकर साधु संगति, काटो कल्पित काल,
राई[7] जितना न रहे, 'सामी' जगत् जंजाल[8],
सुनकर पूर्ण हाल, गले लगाओ अपने।

---

1 धान आदि के सूखे डंठल, जिनके दाने झाड दिये गये हो, 2 विचार, 3 संतुष्ट, 4 इच्छुक, 5 हाथी, 6 निवेदन, प्रश्न, मांग, 7 राई का दाना अर्थात् थोडा सा भी, 8 प्रपंच, झंझट, बखेडा

(46)

यही मांगे दान, जिज्ञासु जगदीश से,
सन्तों सत्पुरूषों से, जुड़े मेरी जान,
प्रीति और विश्वास की, छोड़ूं नहीं मचान,[1]
खुले अविद्या गठान, साधु संग के धीर से।

(47)

करता जो निरवार,[2] अपने धार में बैठकर,
निकाले वह मन से, अविद्या का अहंकार,
मेहनत से वह खोजता, 'सामी' सृजनहार,
प्रभु का दीदार,[3] ख़ुद[4] में पाकर ख़ुश हो।

(48)

करता जो सही,[5] गुरूमुख गुरू विश्वास से,
संशय उसका धार में, बह जाता सब ही,
सच्ची सत्ता स्वरूप की, 'सामी' शेष रही,
आत्म लाल[6] वही, खोज बने दक्ष समुद्र का।

(49)

सहस्रों करें सलाह, गुरूमुख शिष्य गुरू के,
पायी जिनने लक्ष्य की, आत्म पद की राह,[7]
पाकर परमात्म को, हुए सुखी बेपरवाह,[8]
'सामी' रहें अचाह, साक्षी बन संसार में।

मच, 2 बचाव, छुटकारा, मुक्ति, 3 दर्शन, 4 स्वयं, 5 समझ जाता,
मानिक, 7 मार्ग , 8 निश्चिंत

(50)

कठिन है परमान,[1] दुर्गम[2] ज्ञान रहस्य का,
बिरला गुरूमुख देखता, समझ सहित सुजान,
अपना आप पहचान, शीतल रहे स्वभाव में।

(51)

कर गया प्रवेश, जिसमें वाक्य गुरू का,
मिटा उस के मन का, 'सामी' सब क्लेश,
अलख को आदेश, देता नित संशय बिना।

(52)

सहस्रों सुमेरू[3] चढ़े, सेवक सत्पुरूषों के,
जिन के ब्रह्माग्नि में, संशय सब सड़े,
'सामी' अनगढ़े, दीप देखते जगत् में।

(53)

हरि यश नित सुनते, गुरूमुख साधु संग में,
नाना वाक्य मिलन के, हर्षित हो कहते,
सुनें, सुनाकर सब को, 'सामी' कार्य करते,
सदैव सम रहते, स्थित आत्म पद में।

(54)

द्वैत में अद्वैत, सन्त दिखाते सब को,
करोड़ों में एक ही, समझे शिष्य सचेत,
करता जो संशय बिना, हरिभक्तों का हित,[4]
समझ ज्ञान का खेत, 'सामी' मानव देह को।

---

1 प्रमाण, 2 जहा पहुचना कठिन हो, 3 पर्वत का नाम, 4 भलाई, उपकार

(55)

'बाभन'[1] तू न सुना, ज्ञान गुरू का किसी को,
अन्तर्मुख हो प्रेम से, सच्ची लग्न लगा,
अगस्त्य[2] ज्यों आचमन कर, अविद्या सिंधु सुखा,
संशय भ्रम भुला,तो सहज मिलेंगे प्रभु जी।

(56)

जो भी दास भया,[3] सन्तों के विश्वास से,
संशय उसके मन से, 'सामी' सब गया,
लौट नहीं आया, गर्भ योनि की गाली में।

(57)

जो भी लाये समेट, फैला हुआ घर में,
प्रभु से वह सहज ही, भृंग ज्यों करे भेंट,[4]
जाता है वह लेट, 'सामी' सुषुप्ति सेज पर।

(58)

जिन पर दया करे, 'सामी' पूर्ण सतगुरू,
सुख दुख लाभ अलाभ से, ज्ञानी रहें परे,
रहते अपने हाल में, लालच बिन गहरे,
महाराज खरे,[5] डरते नहीं किसी से।

(59)

प्रभु से जोड़े, मैं तो उसका दास हूं,
युक्ति बतावे जीव को, मिथ्या से मोड़े,
खोलकर छोड़े, अविद्या गांठ अंदर की।

ब्रह्मण, कवि का उपनाम, 2 एक ऋषि का नाम, 3 हुआ, 4 मुलाकात,
शुद्ध, पवित्र

(60)

जो भी गुरू कहते, वेद देते साक्ष्य वही,
दाना दीवाने सन्त, बात यही करते,
सब का मत है एक जो, ज्ञान देश रहते,
'सामी' समझते, बनते दक्ष समुद्र के।

(61)

जागे बिना जगत्, नहीं भूलता भ्रम का,
चाहे कंदरा[1] वन में, बैठे बन विरक्त,
यूं कहते हैं सन्त जन, 'सामी' कहे सत,[2]
मन का तज ममत्व, तो स्वतः सम शीतल बने।

(62)

गुरूगम्य अर्ध अक्षर, पढ़े जो प्रतीति[3] से,
अविद्या वाच्य अवाच्य की, समझे भेद चतुर,
हर्षित देखे स्वयं में, ज्ञान का आत्म सर,[4]
अविद्या दुख डमर,[5] मिटा बैठा मन से।

(63)

गुरूगम्य करे याद, जगकर जो जगदीश को,
मिटी उसके मन की, 'सामी' सब उपाध,[6]
किसी से करता नहीं, व्यर्थ वाद विवाद,
'सामी' बीच समाध, बरते[7] विधि विचार से।

---

1 गुफा, 2 सत्यता, 3 विश्वास, 4 सरोवर, तालाब, 5 उपद्रव, हलचल, 6 कपट, छल, 7 व्यवहार करे

(64)

जिसने साफ़ किया, गुरूगम्य दर्पण अंदर का,
ज्ञान आत्म देव का, उस पर कान दिया,
अन्दर बाहर दस दिशा, देखे एक पिया,
कार्य सिद्ध कर लिया, 'सामी' उस सत्पुरूष ने।

(65)

गुरूगम्य उड़ायी, पतंग सहज आकाश में,
सात लोकों को लांघ कर, शून्य समायी,
प्रेम पवन से असीम की, वाणी सुनवायी,
'सामी' मन भायी,[1] रचना योगेश्वर की।

(66)

नाव नदी में धरी,[2] सौदागर सत्पुरूष ने,
सौदे सार अपार से, पूर्ण प्रेम भरी,
भंवर लहर के शोर में, 'सामी' नहीं ठहरी,
तट पर आ उतरी, गुणकारी गुरू ज्ञान से।

(67)

वह चेतन चेला, जो समझे ज्ञान गुरू का,
रहे जगत् में जगत् ज्यों, घूमे अकेला,
'सामी' वह देखे नहीं, समय और वेला,[3]
ममत्व बिन मेला,[4] पल पल करे प्रभु से।

प्यारी लगी, 2 रखी, स्थापित की, 3 शुभ समय जो ज्योतिषी निकालते हैं,
मुद्र की लहर, 4 मिलन

(68)

साधु शरण गहे,[1] प्रेमी प्रेम प्रतीति[2] से,
सुधि गंवा कर अपनी, आज्ञा में रहे,
गर्मी सर्दी देह की, 'सामी' भूख सहे,
तभी लाल[3] लहे,[4] अमूल्य वह अंदर में।

(69)

गुरूमुख[5] की न घटे, प्रेम व प्रतीति कभी,
चातक ज्यों चित में सदा, 'सामी' राम रटे,
भृंग[6] ज्यों भेदिया बने, संशय सब पलटे,
अनन्त बूंद चटे,[7] ज्ञान के आकाश की।

(70)

गुरूमुख झूठ कपट, किसी से करता नहीं,
'सामी' जिसका सतगुरू, हटा देता पट,
परमेश्वर प्रकट, व्यापक देखे विश्व में।

(71)

गुरूमुख नहीं मरे, मन की भांति मनन[8] में,
दीक्षा दान गुरू का, हृदय में धरे,
'सामी' सदा करे, भक्ति अभेद अलख की।

(72)

गुरूमुख सदा समोक्ष,[9] प्रसन्न रहे स्वयं में,
जिसको देता सतगुरू, 'सामी' सम संतोष,
तज अविद्या का दोष, साक्षी देखे सब में।

---

1 पकडे, ग्रहण करे, 2 विश्वास, 3 मानिक, 4 प्राप्त करे, 5 दीक्षित, 6 भौंरा, 7 चाटे, 8 चिन्तन, 9 मुक्ति सहित, मोक्ष सहित

(73)

गुरूमुखं की पहचान, सदैव साधु संग से,
जिसको सतगुरू ने दिया, प्रेम समझ का दान,
रखे न तिल मात्र कभी, अन्दर में अभिमान,
सम देखे भगवान, चींटी और कुंजर[1] में।

(74)

गुरूमुख भागे दूर, मनमुख[2] मूढ़ अज्ञान से,
हठ कारण दुख ना सहे, घाटा[3] समझ कर,
करे गुरू से प्रार्थना, रक्षा करो गुरूवर,
झुके न शर्म से सिर, 'सामी' मेरा जगत् में।

(75)

गुरूमुख गहर[4] गम्भीर, रत रहते हैं रंग में,
ममत्व मिटा मन का, हों 'सामी' निर्मल नीर,
मिल बैठ कर सब संग, पीते मीठी खीर,
पहुंचते सुधीर,[5] लहर भंवर सब पार कर।

(76)

बिरला ही मेहमान, गुरूमुख समझे स्वयं को,
जिसको मारे सतगुरू, 'सामी' शीतल बान,[6]
बने विदेही[7] देह में, तज कर अपना भान,[8]
सन्तों संग सुजान[9] , मिलकर होता है मगन।[10]

हाथी, 2 जो मन की सुनें, 3 हानि, 4 गहरा, 5 अच्छे धैर्यवान, 6 बाण,
विदेह, तन रहित, 8 सुध, ज्ञान, चमक, 9 ज्ञानी, 10 मग्न

(77)

आशा में निराश, बिरला ही गुरुमुख रहे,
साधु संग 'सामी' करे, अन्तर्मुख अभ्यास,
ज्यों घन बीच आकास, त्यों साक्षी देखे सब में,

(78)

बिरला ही हरिजन, कर्म कर निष्कर्म[1] हो
चढ़ बैठे चहुंडोल पर, मिटा कर मनन
ज्यों कृषक खेती करे, ज्ञान का पावे अन्न,
कल्पित कूड़ा[2] चेतन, बीन[3] फेंके 'सामी' कहे।

(79)

बिरला घिसाये, मन मणि को प्रीति से,
मिलकर कारीगर से, सिर को झुकाये,
संशय भ्रम अन्दर का, गुरूगम्य मिटाये,
अविद्या हटाये, 'सामी' देखे स्वरूप को।

(80)

बिरला जन करे, पूजा आत्म देव की,
'सामी' जिस पर सतगुरू, खुश हो हाथ धरे,
सब को देख ठरे,[4] प्रियतम जाने अपना।

(81)

बिरला जन बूझे, अबूझ रहस्य प्रभु का,
जिसका मन माया में, 'सामी' नहीं रीझे,
साक्षी सार सूझे,[5] अन्दर बाहर दस दिशा।

---

1 अकर्मा, जो कर्म करने मे लिप्त न हो, 2 कचरा, 3 चुनकर, 4 ठंडा हो,
5 दिखाई दे, समझ में आवे

(82)

बिरला कोई करे, दया अपने आप पर,
दीक्षा दान गुरू का, हृदय में धरे,
ममत्व मिटा मन का,'सामी' अजर[1] जरे,[2]
पल भर हो न परे, स्वतः सिद्ध स्वरूप से।

(83)

बिरला जन करे, दया अपने आप पर,
दीक्षा दान गुरू का, हृदय में धरे,
छोड़े झूठ कपट को, जीते जी मर,
'सामी' देख ठरे,[3] सब घट परमेश्वर को।

(84)

बिरला जन ख़लास,[4] करे माया मोह को,
जिस को देवे सतगुरू, हृदय में उल्लास,[5]
चढ़े मीर महल[6] पर, देखे ब्रह्म विलास,[7]
करे संशय नास, तो सुखी हो 'सामी' कहे।

(85)

प्याला प्यारा, बिरला ही गुरूमुख पिये,
देखा जिसने आंखें से, ज्ञान का उजियारा,
जाग निकाला मन से, भ्रम भय सारा,
रहे मतवारा[8], पिये पिलावे राम रस।

---

1 जरा रहित,जो जल न सके, 2 जले, 3 ठंडा हो, 4 समाप्त, 5 चमक, झलक, प्रकाश, 6 प्रभु का घर, 7 आनन्द, 8 मतवाला

(86)

बिरला ही गुरूमुख, प्रसन्न रहता स्वयं में,
जिस को देता सतगुरू, ज्ञान का आत्म सुख,
काटे अविद्या दुख, 'सामी' घुसे प्रवाह में।

(87)

नाना विधि कई, सड़कें आत्म पद की,
जाकर बेगमपुर में, इकट्ठी सभी हुई,
बिरले गुरूमुख को सदा, सम की सूझ हुई,
उसकी निकल गई, अविद्या कल्पित मन से।

(88)

हर कोई पढ़ता, उत्तम वाक्य गुरू का,
करोड़ों में एक ही, सुन कर दिल देता,
'सामी' उस सत्पुरूष को, सच्चा लक्ष्य मिलता,
पूर्ण निकल जाता, अविद्या संशय उस का।

(89)

सदा ही मेहमान, गुरूमुख समझे स्वंय को,
'सामी' जिस को सतगुरू, देता आत्म ज्ञान,
सम रहता है सब से, तज कर ग़ैर[1] गुमान,[2]
हो निर्मल निरवान,[3] चेत[4] गंवा कर चित की।

(90)

सर्वदा फुलवार,[5] गुरमुख रहे ज्ञान में,
चींटी और कुंजर में, 'सामी' देखे सार,
नस नस एक ओंकार,[6] 'सामी' जपता जीभ बिन।

---

1 अंधेर, अत्याचार, 2 अहंकार, घमंड, 3 निर्वाण, मुक्त,
4 चेतना, होश, बोध, 5 प्रसन्न, 6 प्रभु का नाम

(91)

सदा राज में जोग, करे गुरमुख[1] ज्ञान से,
'सामी' जिसका सतगुरू, दूर करे मन रोग,
हार जीत सुख दुख का,रखे हर्ष न सोग,[2]
चाहे भोगे भोग, तो भी अलेप कमल ज्यों।

(92)

भेद बिना भगवान, सन्त दिखाते सबको,
तिल मात्र भी न रखें, अन्दर में अभिमान,
'सामी' बिरला समझता, गुरूमुख यह ज्ञान,
पाकर दर्शन दान, शीतल रहे स्वभाव में।

(93)

जिसने किया प्रणाम, प्रभु परमेश्वर को,
मिलते उस इच्छुक को, तीनों लोक इनाम,
संशय सब तज कर करे, अनुभव में आराम,
हर्ष शोक तमाम, 'सामी' समझे सम सब।

(94)

सच और सफ़ाई, बिरले के घर में बसे,
उसने साधु संग मिल, ममता मिटाई,
'सामी' स्थाई, ज्योति देखे प्रभु की।

(95)

प्रेमियों ने मुल्क जीता पूर्ण युक्ति[3] से,
लगा बैठे लक्ष्य का, गुरूमुख तत्व तिलक,
अंदर बाहर इक, 'सामी' देखें प्रभु को।

---

1 दीक्षित, 2 शोक, 3 कौशल, चातुर्य, ढंग, तरीका

(96)

साक्षी का डेरा, मन बुद्धि वाणी से परे,
केवल है यह समझ बिन, अविद्या का झगरा,[1]
गुरूमुख गुरू विश्वास से, पावे प्रभु नियरा,[2]
कर के निबेरा,[3] सामी' मिले स्वरूप से।

(97)

लेता है जो खोज, सच्चे प्रेम नगर को,
देख लेत 'बाभन' कहे, उसमें सहज सरोज,
फेंक देत सिर से वही, सब दुविधा का बोझ,
हृदय में हर रोज़, दर्शन करता प्रिय का।

(98)

ज्ञानी सन्त भले, पल पल रोकें स्वयं को,
शीतल हो 'सामी' कहे, पांचों दूत दलें,[4]
यही बात अन्दर की, किसी से न बोलें,
बिना चाह चलें, साक्षी बन संसार में।

(99)

गुरूमुख की गद्दी,[5] अनल पक्षी[6] ज्यों नभ में,
हार जीत सुख दुख से, अगम्य अलहदी,[7]
चढ़ उस चौकी लेत वह, सहज समाधि,
खोज लेत आदि, 'सामी' सुख स्वरूप का।

---

1 झगडा, 2 निकट, 3 निबेडा, निपटारा, 4 टुकडे टुकडे करे, 5 सिहासन, 6 चिडिया विशेष, कहते है यह सदा आकाश मे उडा करती है और वही अडे देती है, 7 अलग, पृथक

(100)

गुरूमुख पावे लाल, अमूल्य अंदर से,
मिल कर साधु संग से, 'सामी' हुआ निहाल,[1]
काट कल्पित काल,[2] समाया स्वरूप में।

(101)

गुरूमुख रिझाये, महापुरूष को प्रेम से,
ज्ञान भुलाकर अपना, आज्ञा में आये,
सहज उस को सतगुरू, अलख दिखाये,
'सामी' समाये, जल बुदबुदा जल में।

(102)

अनुभवी आत्म पद, मन बुद्धि वाणी से परे,
बिना गुरू कृपा कोई, देख न सकता हद,[3]
समझ देख 'सामी' कहे, तज कर दुख दरद,[4]
हद परे अनहद,[5] बिरला कोई गुरूमुख सुने।

(103)

आत्म पद अगाध,[6] गुरूमुख लहे घर में,
निज गंवाया नींद में, जग कर आया याद,
मिट गई तब मन से, 'सामी' सब उपाध,[7]
स्वतः सिद्ध समाध,[8] लगी रहे लक्ष्य में।

---

1 सतुष्ट, 2 समय, यम, 3 सीमा, 4 दर्द, 5 अनन्त, असीमित, अनहद नाद, नाद, 6 असीम, अपार, 7 छल, कपट, 8 समाधि

गुरूमुख (ब)

(1)

गुरू शिष्य की गति,[1] कही न जावे मुख से,
उन से देखो पूछ कर, जो रहें रहन यति,
लेते मौज मुक्ति की, मिटा ममत्व मति,
जागरण में सुषुप्ति,[2] सदैव लें 'सामी' कहे।

(2)

गुरू शिष्य की गत,[3] देखी जाय न लग्न बिन,
उन से देखो पूछ कर, जो हैं पहुंचे सन्त,
पार करे सागर वही, बिना नाव के मस्त,
हटा तट कल्पित, 'सामी' मिले स्वरूप से।

(3)

अंधा जीव अहमक,[4] सत्य जानता है नहीं,
देह समझ कर स्वयं को, भोगे नित नरक,
बिरला ही गुरूमुख तजे, संशय की भटक,
'बाभन' कहे आशिक,[5] बरते सद्व्यवहार [6] से।

(4)

अलख अदालती, करे अदालत ज्ञान की,
समझे कोई 'सामी', कहे, प्रेमी दक्ष यति,
सतगुरू ने दी जिसको, सत् की रहन रती,
मिटा मन कुमत्ति,[7] बरते वेद विचार से।

---

1 दशा, अवस्था, 2 गहरी नींद, 3 हालत दशा, 4 नादान, मूर्ख, 5 प्रेमी, 6 अच्छा व्यवहार, 7 दुर्बुद्धि,

(5)

'सामी; कहे शरीक,[1] प्रभु से कोई नहीं,
करता सच्चे प्रेम से, जिज्ञासु तहक़ीक़,[2]
चढ़ता है वह नभ पर, बन कर अति बारीक,
नयनों से नज़दीक,[3] स्वतः देखे प्रभु को।

(6)

हरिजन देखे हत्थ,[4] दवा देवे दर्द की,
समझे बिरला सूरमा, ले प्रीति से पथ,
संशय को जो छोड़कर, 'सामी' हो समर्थ,
कहे न कभी अकथ, स्थित रहे आनन्द में।

(7)

मांगा भीख करे, जो दुखियों के द्वार पर,
उसके प्रीति समझ से, प्रभु भंडार भरे,
बैठ ज्ञान के तख़्त[5] पर, धीर सुधीर धारे
'सामी' देख ठरे,[6] अन्दर बाहर आत्मा।

(8)

भव सागर भारी, लहरें मारे लोभ की,
'सामी' उसमें समझ बिन, बहे दुनिया सारी,
बिरला पहुंचे लक्ष्य पर, उत्तम अधिकारी,
समता सदाचारी, पहुंचाती है पद पर।

---

1 सम्मिलित, 2 अनुसधान, जांच, 3 निकट, 4 हाथ, 5 सिंहासन,
6 शीतल हो,

(9)

'सामी' है बहती, ख़लक[1] व्यर्थ विचार में,
स्वप्न की निर्जल नदी, सच समझे मूढ़मति,
बिरले गुरूमुख को मिले, तट दुर्गम अति,
भली बुरी वृति,[2] छोड़ मिले स्वरूप से।

(10)

'सामी' है बहती, ख़लक व्यर्थ विचार में,
बिरले को 'सामी' मिले, शुद्ध समझ शक्ति,
पांचों दूत दहन करे, वही ज्ञानी व्यक्ति ,
शासन गढ़पति, करे बेगमपुर पर।

(11)

दूर से डराये, सब को सांप रस्सी का,
'सामी' कभी न पैर को, आगे बढ़ा पाये,
बिरला गुरूमुख देखता, दीप जो जलाये,
संशय मिटाये, सोवे सुषुप्ति सेज पर।

(12)

माया से मुक्त, बिरला कोई गुरूमुख रहे,
जिसे बताये सतगुरू, जुड़ने की जुगत,[3]
खिड़की लगा भ्रम की, चेतन करता चित,
ज्ञान का सुख अमित,[4] 'सामी' पा कर सम हुआ।

---

1 जनता, संसार, जगत्. 2 इन्द्रिय निग्रह की ओर प्रवृति, स्वभाव. 3 युक्ति, 4 असीम, प्रचुर, बहुत

(13)

पन्नों को पढ़ कर, शब्द पावे जो एक ही,
मरे नहीं वह मूढ़ ज्यों, निश दिन चिल्लाकर,
भ्रम घट तोड़ कर, सैर[1] करे 'सामी' कहे।

(14)

सुने वही बुद्धिमान, मुरली मन मोहन की,
मिटा जिसके मन से, 'सामी' सब अभिमान,
अपनी ही धुन में रहे, सदा मग्न सुजान,
करे अमृत पान, पावे दर्शन प्रभु का।

(15)

भक्ति नाना भांति, तप, तीर्थ और साधना,
बिरले गुरूमुख को मिली, 'सामी' मन शांति,
जाग मिटा दे मन का, जो भुलावा भ्रांति,
ज्ञान बिन एकांती,[2] झूठ समझे भ्रम का।

(16)

आशा में निरास, बिरला ही गुरूमुख रहे,
जो चढ़ता है नभ पर, कर अनन्य अभ्यास,
जहां 'तू' 'मैं' है नहीं, न कोई ठाकुर, दास,
चेतन चिदाकास,[3] स्वतः सिद्ध 'सामी' कहे।

---

1 मनोरजन के लिये घूमना, आनन्द, मौज. 2 वह भक्त जो भगवत प्रेम को मन मे रखे और प्रकट नहीं करता फिरे. 3 ब्रह्म

(17)

बिरला ही चेला, समझे ज्ञान गुरू का,
चलाता जो भ्रम का, अदृष्य गुलेला,[1]
'सामी' करे स्वरूप से, ममत्व बिन मेला,
अन्दर अकेला, बाहर 'तू' 'मैं' में रहे।

(18)

बिरला जान पाता,गुरू शिष्य की गति[2] को,
मन पवन को मोड़कर, अन्दर है लाता,
स्वतः सिद्ध स्वरूप से, मौज है मनाता,
'सामी' सो जाता, सुख से शान्त सराय में।

(19)

प्रियतम के आदेश, माने जो सुन कर सभी,
जड़ से वही उखाड़ दे, लालच बीज नरेश,
ज्ञान अगम[3] में गुम रहे,'सामी' तज आवेश,
मृतक को न क्लेश, आनन्द मिलता उस को।

(20)

वेदों का वादी, होत न जागृत सूरमा,
अर्न्तमुख हो साधु संग, जिसने सुरति[4] साधी,
'सामी' देखी सर्वगत,[5] चेतन लक्ष्य चांद्री,[6]
आतंक उन्मादी,[7] फेंक चढ़ता नभ पर।

---

1 गुलेल, 2 दशा, हालत, 3 दुर्गम, जहा पहूचा न जा सके, 4 याद, स्मरण,
5 सर्वव्यापी, 6 चांदनी, 7 पागल

(21)

प्रेमी जन पल छिन,[1] सुरति रखे गुरू शब्द में,
ले जाता निरति[2] नगर में, रहन से खींच सज्जन,
जहां प्रभु दरस का, जोते खेत निश दिन,
हो कर ध्यान मगन, सैर करे 'सामी' कहे।

(22)

बड़ा बीच बचाव,[3] कहन रहन में आपसी,
बिरले को सुध हो वही, सामी करे उपाव,
जाग करे वह जगत् का, प्रकट पूर्ण अभाव,
लगा सुन्दर दांव,[4] दूर न होता प्रभु से।

(23)

होत वही सर्वग,[5] साधु जन संसार में,
जिसको देता सतगुरू, 'सामी' रंग से रंग,
पिये पिलाये प्रेम रस, मिटा ललक अढंग,
सदैव अपने संग, देखे अनुभवी आत्मा।

(24)

जिसको आत्मा ज्ञान, 'सामी' दिया गुरू ने,
उसने सम सागर में, पलट किया स्नान,
ममत्व मिटाकर मन का, हुआ निर्मल निरवान,[6]
समझे सर्व जहान, चमत्कार चैतन्य का।

---

1 क्षण, 2 अप्रेम, अप्रीति, 3 सुलह, साठ गांठ, 4 बाजी, 5 सर्वव्यापी
6 निर्वाण, मुक्त

(25)

जिसने ली गदा, गुरूगम्य ग़रीबी की,
जीत उसने यत्न बिन, शत्रु किये विदा,
जग कर किया यम से, ज्ञान का सौदा,
'सामी' रहे सदा, अपने मन में झांकता।

(26)

प्रभु इच्छा स्वीकार, करे सदा कोई सूरमा,
जिसको देता सतगुरू, ज्ञान की मति अपार,
घुस कर देखे स्वयं में, दोस्त का दीदार,
समझे सब संसार, स्वप्न सम 'सामी' कहे।

(27)

जागृत नहीं बके, दर दर दीवाने ज्यों,
दीक्षा दान गुरू का, मन मे दृढ़ रखे,
अन्दर बाहर आत्मा, 'सामी' सम लखे,
चेतन रस चखे,[1] नस नस लाल गुलाल हो।

(28)

वही गुरूमुख ज्ञानी, वही योगेश्वर जगत् में,
'सामी' जिसने समझ ली, सही सच्ची बानी,
जगत् देखे प्रभु में, जगत् में जानी,[2]
चतुरई[3] नादानी, फेंक बैठा सम बन।

---

1 चाखे. 2 जान से प्यारा अर्थात् प्रभु. 3 चतुराई

ईश्वर महिमा (अ)

(1)

इच्छा बिन चमत्कार, दिखा ख़्याली[1] को ख़याल[2] में
जिसका आदि न अन्त और, कोई आर न पार,
मन बुद्धि वाणी से परे, कौन करे तकरार,[3]
'सामी' समझ सार, सन्तों ने है खोज लिया।

(2)

विचित्र चमत्कार, गुरूगम्य देखा रहस्य का,
धर कर आया जागत् में, निराकार आकार,
खेले नाना भांति वह, रहे अलेप अपार,
जाता है बलिहार,[4] 'सामी' उस पर सर्वदा।

(3)

कईयों से ठगी, जिस ठग ने की जगत् में,
'सामी' की उस ठग से, पूर्ण प्रीति लगी,
है गुरूगम्य ज्ञान की, जगमग ज्योति जगी,[5]
भ्रांति सहज भगी, जागृत होकर मन की।

(4)

रहस्यमय तारा, उगा पूर्व में स्वयं ही,
उस का फैला दस दिशा, पूर्ण उजियारा,
व्यापक देखा विश्व में, मिल गया न्यारा,
'सामी' सुख सारा, पाया मन में झांककर।

---

1 कल्पनाएं करने वाला व्यक्ति, 2 विचार, 3 झगड़ा, 4 न्यौछावर, 5 जागी

(5)

प्रभु है आया, स्वांग रच बाज़ार में,
नाना भांति खेल कर, ख़ुद को छिपाया,
गुरू चेला स्वयं बन, अलख दिखलाया,
खेल है रचाया, 'सामी' सहज स्वभाव से।

(6)

अस्तित्वहीन बाज़ी,[1] बाज़ीगर[2] ने है रची,
पीर फ़कीर अमीर हुआ, कहीं मुल्ला काज़ी,
कहीं गुसाई ज्ञानवान, कहीं बना हाजी,
राजा प्रजा चौधरी, कहीं महंत[3] मियां जी,
कहीं दाता शूरवीर, कहीं विनय मोहताजी,[4]
कहीं चोर चुग़ल ठग, कहीं मसख़रा पाजी,[5]
कहीं चिन्ता दुख में, कहीं रज़ा[6] में राज़ी,[7]
'सामी' जिसने साजी,[8] वही हटाता पट है।

(7)

निर्गुण और सगुण, दोनों आकार अलख[9] के,
जिसको प्रेम प्रतीति[10] से, माने तेरा मन,
उसका कर तद्रूप बन, बिना भेद भजन,
प्रीति से प्रसन्न, 'सामी' होंगे प्रभुजी।

---

1 दांव वाला खेल, 2 जादूगर, 3 मठ का अधिष्ठाता, 4 दूसरे की आश्रयता, 5 नीच, 6 प्रभु इच्छा, 7 प्रसन्न, 8 सजाई, 9 अदृष्य, भगवान, 10 विश्वास

(8)

देखे मन ठरे,[1] कुदरत[2] तेरी प्रभु जी,
कहीं बने राजा, कहीं दर दर भीख करे,
लाख लुटाये दिन में, कहीं कौड़ी हेतु मरे,
कहीं सुन्दर सरदार, कहीं करके शौक[3] जरे,[4]
कहीं स्वयं ज़ालिम[5] बने, कहीं देख रूप डरे,
कहीं छैला अवधूत[6] बन,कहीं चिन्ता मन भरे,
कहीं खुश हो ज्ञान दे, कहीं रोवे सिसक झरे,
मन वाणी से परे, है सिफ़त[7] तेरी प्रभु जी।

(9)

आया नागर नट, वेष बदल बाज़ार में,
'बाभन' कहे द्वेत बिन, खोले बैठा हट्ट,[8]
स्वयं वणिक् धंधा बना, स्वयं तराजू बट,[9]
राजा प्रजा स्वयं हुआ,कायर शूर सुभट,[10]
स्वयं कुम्हार, अवां[11] बना, चाक मिट्टी और घट,
खुद फल फूल पत्ता बना, स्वयं डाल बीज वट,[12]
अन्दर बाहर दस दिशा, खेले गुप्त प्रकट,
खुश हो खोले पट, ख़ुद[13] को दिखाये ख़ुद में।

1 ठंडा हो, 2 प्रकृति, 3 प्रवृति, व्यसन, 4 जले, 5 अत्याचारी, 6 सन्यासी, 7 विशेषता, 8 दुकान, 9 बांट, 10 योद्धा, 11 मिट्टी के बर्तन पकाने का गड्डा, 12 वृक्ष, 13 स्वयं

(10)

पाले में पानी, त्यों व्यापक बसे सब में,
सूक्ष्म संधि प्रभु की, दक्ष ने पहचानी,
'सामी' समानी,[1] उसकी सुरति स्वरूप में।

(11)

नाना रूप धरे, कल्पित खेले स्वयं से,
बना मूर्ति मिट्टी की, ज्यों बच्चा खेल करे,
रहे स्वयं परे, नट नचावे पुतलियां।

(12)

जिसमें से संसार, उपजा वह है विश्व में,
मन मन्दिर में झांक कर, दीप जला तू यार,
आलस भ्रम निवार,[2] तो 'सामी' मिले प्रभु से।

(13)

कृपालु भगवान, दूर न होते हैं कभी,
बैठूं तो बैठे सम्मुख, देखूं तो देखे महान,
'सामी' पुरूष सुजान, छूने को न कभी मिले।

(14)

'सामी' सब रचना, है यह यश जगदीश का,
वेद पुराण सिद्ध साधु जन, सब का है कहना,
समझे आत्म संधि को, बिरला महामना,[3]
पिरो कर पहना, जिसने हार है भक्ति का।

---

1 समाई, 2 निवारना, हटाना, दूर, करना, 3 महात्मा, महान पुरूष

(15)

सब रहते प्रसन्न, अपने अपने हाल में,
कोई छोड़े कुल कोई, पंक फंसे चेतन,
कोई पंडित दक्ष कोई, मूढ़ मति दुर्जन,
कोई अधम कुलच्छना, कोई अपरस[1] है जन,
कोई शीतल चित कोई, तप्त रहे पूरन,
कोई दुखी धर्म में, कोई मस्त सज्जन,
कोई झूठ प्रपंच में, कोई आत्म रंग मगन,
'सामी' कहे दर्शन, सब है परमेश्वर का।

(16)

'सामी' सब दीदार, है यह परमेश्वर का,
देखे सुने स्वयं ही, बोले बोलनहार,[2]
निराकार आकार, धर कर आया जगत् में।

(17)

निश दिन देखे देह, परमेश्वर तेरी छवि,
जैसे सीप समुद्र में, सदा चाहती मेह,
त्यों ही तेरा नेह, चारों ओर जगमग करे।

(18)

ऐसा नेह लगा, नूरमहल[3] के नाथ से,
रात न दिन कोई जहाँ, सूर्य न चन्द्र उगा,
'सामी' मस्त चंगा, रहे मेघ बिन मेह में।

---

1 अछूत, जो छूने योग्य न हो, 2 बोलने वाला, 3 प्रकाशित महल

ईश्वर महिमा (ब)

(1)

अलख पुरूष आया, भ्रमण करने जगत् का,
क्षण में एक विचार से, रंग है रचाया,
गुरू ने शिष्य सुजान को, लग्न से दिखाया,
'सामी' समाया, जल बुदबुदा जल में।

(2)

अलख पुरूष आया, डेरा[1] करने देह में,
'सामी' सुख अगम्य का, जान न कोई पाया,
दर्दमंद पहचानता, सब कुछ है माया,
ख़ुद को मिलाया, ज्यों पतंग ने दीप से।

(3)

अलख ने बनाया, रंग भर कर संसार को,
अपने आगे अदृष्य[2] है, परदा लगाया,
बिरला प्रेमी प्रेम से, उसे देख पाया,
रहता मस्ताया, सर्वदा 'सामी' कहे।

(4)

कल्पित पट फैला, कर छिप बैठा देह में,
ढूंढे सच्ची लग्न से, कोई भिक्षुक भोला,
देखे और सुने वही, 'सामी' वही बोला,
जिसने पट खोला, वह आनन्द ले दरस[3] का।

---

1 निवास, 2 जो नही दिखाता, 3 दर्शन

(5)

अविनाशी का नाश, कभी भी होता नहीं,
खड़े सहारे जिसके, पृथ्वी और आकाश,
सूर्य चन्द्र पानी पवन, तेज पुंज प्रकाश,
बना अनन्त विलास,[1] सैर करे 'सामी' कहे।

(6)

परमेश्वर प्रतिपाल,[2] सब के साथ सदा रहे,
मूर्ख भटके बुद्धि बिन, लेकर व्यर्थ ख़्याल,
करता मौज मुक्ति की,बिरला साधु रसाल,[3]
नज़र से निहाल,[4] 'सामी' सतगुरू ने किया।

(7)

परमेश्वर पूरा, रहे सब के साथ में,
किसी से होता नहीं, गहरा अधूरा,
समझे कोई 'सामी' कहे, साधु जन शूरा,[5]
लोभ तानपूरा, दूर रखे जो दिल से।

(8)

सज्जन सदा ही, रहे साथ में सबके,
अंधे नहीं देखते, छानें नित छाई,[6]
जागृतों ने समझ कर, लगन लगाई,
'सामी' समाई, जाकर लहर समुद्र में।

---

1 आनन्द, 2 पालक, 3 रसीला, 4 संतुष्ट, 5 शूर, वीर, 6 राख

(9)

प्रियतम है झीना,[1] खड़ा बीच बाज़ार में,
'सामी' दिखाता सब को, निर्मल नगीना,[2]
हटा आवरण परखता, कोई प्रेमी परबीना,[3]
हठ कपट दीना, मिटा मस्त मगन हुआ।

(10)

हरि बिन मददगार,[4] किसी का कोई नहीं,
काया माया कुल पर, मूढ़ करे एतबार,[5]
पार करता भंवर को, 'सामी' सन्त होश्यार,
जिसको हुआ प्यार, ज्ञान से प्रभु चरण में।

(11)

हरि बिन मददगार, किसी को देखा नहीं,
काया माया कुल पर, मूढ़ करे एतबार,
समझे कोई 'सामी' कहे, दर्दमंद होश्यार,
सदा अलेप उदार, रहे अचाह स्वभाव में।

(12)

जो कर्ता को कर्म, अर्पण करे विश्वास से,
मिटे उसके मन के, 'सामी' दुख और ग़म,[6]
देखा उसने ज्ञान मय, स्वतः सूरज सम,
रहे बीच आलम,[7] सदा अलेप आकाश ज्यों।

---

1 पतला, बारीक, सूक्ष्म, 2 रत्न, मणि, 3 प्रवीण, 4 सहायक, 5 विश्वास, 6 शोक, 7 संसार

(13)

घट घट में गोपाल, रहता है आकाश ज्यों,
घुस देखे विश्वास से, कोई चतुर रसाल,
जिस को 'सामी' नज़र से, सतगुरू करे निहाल,[1]
काटे कल्पित काल, करता मौज मुक्ति की।

(14)

घर में घर वारा,[2] गुरू ने दिखाया ज्ञान से,
लेता जिसका आसरा, 'सामी' जग सारा,
ज्ञान अज्ञान भला बुरा, तमस[3] उजियारा,
मिल गया न्यारा, जो स्थित आकाश ज्यों।

(15)

ज्वाला चमकाये, जैसे गला लौह को,
वैसे चेतन सब से, क्रिया करवाये,
मन में तू 'सामी' कहे, यदि झांक पाये,
दीपक जलाये, तिमिर[3] मिटा कर अंदर का।

(16)

प्रभु ने है रखी, सता छिपाकर सब में,
किसी जागृत वीर ने, साधु संग देखी,
चाखे चेतन बूंद वह, 'सामी' होत सुखी,
जैसे अनल पखी,[4] पलट चढ़े आकाश पर।

---

1 सतुष्ट, 2वाला, 3 अधेरा, 4 अनल पक्षी जो कहते है कि सदैव आकश
में रहता है तथा वहीं अंडे देता है,

(17)

क्षण भर में कल्प,[1] लांघ लाखों दूर गये,
अकह[2] सुख स्वरूप का, होंठ हैं रहते चुप,
साक्ष्य दें 'सामी' कहे, रोमासर[3] रिखप,[4]
ज्ञान ध्यान जप तप, निकट रहते प्रभु के।

(18)

प्रभु छवि वर्णन, क्या मैं करूं मुख से,
'सामी' सहस्रों सूर्य चन्द्र, लज्जित बीच गगन,
उन से देखो पूछ कर, जिनने किया दर्शन,
पार करें वे जन, संशय का सागर सहज।

(19)

नयनों में निवास, प्रत्यक्ष परमेश्वर का,
कहीं भी छिपता नहीं, ज्यों अलेप आकाश,
सुखी हुआ 'सामी' कहे, दर्शन पाकर दास,
जिसको कारावास, से सतगुरू ने मुक्त किया।

(20)

प्रभु छवि वर्णन, क्या मैं करूं मुख से,
लाखों सूर्य चन्द्र दीप, लज्जित बीच गगन,
'सामी' मोहित शूर ही, करता है दर्शन,
पार हुए वे जन, अविद्या के भंवर से।

---

1 कालखड का नाम, समय, 2 अकथ, जो कहा न जा सके, 3 एक ऋषि का नाम , 4 एक ऋषि का नाम, ऋषभ,

(21)

बेअन्त का अन्त, कोई पाता है नहीं,
समझे कोई 'सामी' कहे, जागृत जन सन्त,
देखे अपनी आंखों से, भेद रहित भगवन्त,
ज्यों कामिनी, कन्त,[1] प्राप्त करके मस्त हो।

(22)

बेअन्त का अन्त, पावे पीर फ़कीर कोई,
साक्ष्य दें 'सामी' कहे, दक्ष पुरूष महन्त,
देखे जो आकाश ज्यों, भेद रहित भगवन्त,
बिलावल[2] बसन्त,[3] गाता फिरे हर गांव में।

(23)

छोड़ न तू मझधार, भव सागर में प्रभु जी,
डुबा रही लालच लहर, असीमित हर बार,
कोई तिल मात्र नहीं, तुझ बिन मददगार,
तेरा ही आधार,'बाभन' समझूं नाव तोहि[4]।

(24)

पूर्ण रख विश्वास , पलट कर प्रभु पर,
'सामी' भोजन सब को, दे जो बारह मास,
अन्दर बाहर एक है, ज्यों अलेप आकास,
लग्न लगा बन दास, तो सम्मुख देखे सूर्य ज्यों।

1 पति 2 राग का नाम, 3 राग का नाम, 4 तुझे

उपदेश (अ)

(1)

विचित्र उपदेश, 'सामी' दिया गुरू ने,
नूर महल निर्वाण में, हर्ष से किया प्रवेश,
मिटे कलह क्लेश, सब घट देखा प्रभु को।

(2)

वेद पुरान कुरान में, सब में है इक सूत,[1]
समझ देख 'सामी' कहे, लगा मन मज़बूत,
ज्यों घटा नभ में, त्यों सब में साक्षी भूत,
आत्म रत अवधूत, समझे इस वचन को।

(3)

है यह सब आभास, जगत् ही जगदीश का,
जैसे सूर्य चन्द्र में, 'सामी' रहे प्रकास,
करके देखो भ्रम बिन, नयनों में निवास,
तो चेतन चिदाकास, प्रत्यक्ष दिखे सामने।

(4)

देह में है दीया, है देह भी दीप में,
गुरूगम्य 'सामी' कहे, जो रहस्य समझ गया,
अहंकार अविद्या, मिटे उसके मन से।

(5)

नाहक[2] मन न हार,[3] सांप रस्सी मे देखकर,
निर्मल देख नयनों से, मन का भ्रम निवार,[4]
अपना आप संभार,[5] तो 'सामी' मिले स्वरूप से।

---

1 धागा, सूत्र, ततु, 2 व्यर्थ, फजूल, 3 हारना, साहस न छोड 4 हटा, दूर कर, 5 संभाल,

(6)

अविद्या रोग असार,[1] ज्ञान बिना जाता नहीं,
जागे बिना न लुप्त हो, ज्यों स्वप्न संसार,
समझ देख 'सामी' कहे, करके शुद्ध विचार,
यही साधन सार, सन्त बताते स्नेह से।

(7)

प्रेम, बुद्धि होते, दोनों पंख पक्षी के,
अनुभव के आकाश में, गुरू गम्य पहुंचाते,
दर्शन सार स्वरूप का, लग्न से दिखलाते,
ममत्व मिटवाते, 'सामी' सब अंदर का।

(8)

तीक्ष्ण तीव्र प्रवाह, है यह अविद्या सिन्धु[2] का,
पीठ दिखाकर स्वयं को, दुख की सहो न दाह,
युक्ति पूछो उनसे, जो पहुंचे पार मल्लाह,
आठों प्रहर अल्लाह,[3] रहे जिनके मन में।

(9)

अविद्या जल अपार, कर्म खुटाते हैं नहीं,
इसी को सच मानकर, डूब रहा संसार,
समझ खोज 'सामी' कहे, तू साक्षी सृजनहार,
मानुष जन्म अवतार, नहीं मिलेगा फिर कभी।

---

1 सार रहित, तत्व रहित, 2 समुद्र, 3 खुदा, प्रभु,

(10)

प्रेम और अक़ल, दोनों साधन सम के,
'सामी' कर तप खोज लो, आत्म पद अमोल,
जीवन में ना डोल, मूर्ख मन की भांति तू।

(11)

करो न खोटा काम, किसी से तिल मात्र भी,
मृत्य सिर पर देख तज, खोटे काम तमाम,[1]
घूंघट खोल कर देख ले, भ्रम बिन प्रभु राम,
फिर तू कर आराम, मुक्त हो यम जगाती[2] से।

(12)

चिन्ता चिता समान, मूढ़ करे क्यों मन में,
होगा कम ज़्यादा नहीं, निश्चित से नादान,
'बाभन' फसल वही मिले, बीज डले जो जान,[3]
चाहे यदि कल्यान, तो स्थित हो जा अन्दर में।

(13)

झूठा मोह न कर, बह जायेगा लहर में,
तज कर नाना भाव तू, ध्यान प्रभु का धर,
बिना भजन ईश्वर, व्यर्थ हैं कार्य सभी।

(14)

'सामी' समझाओ, गुरू गम्य अपने आप को,
पाकर सुख स्वरूप का, ना दर दर सुनवाओ,
कहीं बह न जाओ, मूर्ख मन की भांति तुम।

---

1 सम्पूर्ण, 2 कर वसूलने वाला, 3 समझ

(15)

ज्यों नाव में ग़ार,[1] त्यों हैं लोग कुटुम्ब के,
कहते जो अपना इन्हें, दुखी होते हर बार,
अविद्या के अंगूर को, 'सामी' तोड़ होश्यार,
मूल धन रख तैयार, ताकि न बात सुने बुरी।

(16)

मन से हठ निकार,[2] दुख न मिले कहीं विरह का,
अपने घर में घुस कर, जग का छोड़ विचार,
सखियों से तू पूछ, कर मिलन का श्रंगार,
तो प्रभु आकर द्वार, देंगे सुख सुहाग का।

(17)

लज्जा हर्ष तज यार, झूठे माया मोह का,
ले जायेगा भ्रम में, तुझे व्यर्थ विचार,
स्वतः सिद्ध स्वरूप का, गुरू गम्य देख विस्तार,
जिसमें यह संसार, उपजे पले लीन हो।

(18)

अविद्या सिंधु पार, नहीं कराते कर्म त्रण,[3]
अस्तित्वहीन भंवर करे, सदा तीक्ष्ण प्रहार,
'सामी' नैया सत्य की, ले निश्चय[4] पतवार,
तो गुरू कर उपकार, पार लगायेंगे क्षण में।

---
1 गड्डा, 2 निकाल, 3 तिनके, 4 विश्वास

(19)

इसमें नहीं दो राय, प्रभु सदेह[1] है सब में,
स्वयं देखता स्वयं को, देख तू मन में जाय,
प्रभु की वह मूर्ति, नस नस ले छुपाय,
'सामी' ज्ञान प्रदाय, तभी करेंगे प्रभु जी।

(20)

झूठे काम न कर , मूर्ख मन की भांति तू,
है यह अविद्या सिंधु की, तीक्ष्ण लोभ लहर,
वचन सत्पुरूषों के, जग कर मन में धार,
तो प्रकट परमेश्वर, 'सामी' मिलेंगे सब में।

(21)

क्यों करता है छल, मूर्ख मन की भांति तू,
प्रभु के दरबार में, होगा सब अदल,[2]
रक्त बहा कर आंखों से, पायेगा तू फल,
'सामी' समझ कर चल, दीक्षा ले गरू से।

(22)

लज्जा पंक[3] न डाल, मूर्ख ला कर घर में,
दुविधा देती है सदा, जन्मों का जंजाल,[4]
दौड़ न तू 'सामी' कहे, ले धीरज की ढाल,
तो इक सूर्य विशाल, प्रकट होगा स्वयं ही।

---

1 देह सहित, 2 न्याय, 3 कीचड, 4 प्रपच, झझट, बखेडा

(23)

क्यों तू मांगे अधिक, मूर्ख माया राम से,
कई गये हें पीट कर, माथा अभी तलक,[1]
ले जाता कोई नहीं, कौड़ी सीखं सबक़,[2]
रब की रख ललक, खुश होगे 'सामी' कहे।

(24)

पागल छोड़ कथन, हर क्षण तू प्रयास कर,
सहज कर 'सामी' कहे, साक्षी का सुमरन,
भ्रम छोड़ निकाल तू, प्रेम सहित मक्खन,
भोंकन और भटकन, दोनों काम कुतों के।

(25)

जोगी सन्यासी, बैरागी, ब्रह्मण कई,
नाना बेख[2] जगत् में, सेवड़े[4] उदासी,[5]
उन्हीं में से हो कोई, दर्शन का प्यासी,[6]
जिसका फंद फांसी, 'सामी' काटे सतगुरू।

(26)

जीव यदि मानो, तो जुड़े रहो जगदीश से,
खुद को मानों देह तो, ख़ाक जाकर छानो,
संशय शीत निकाल कर, ख़ुद[7] को पहचानो,
'सामी' फिर छानो, प्याले भर कर राम रस।

---

1 तक, 2 पाठ, 3 स्वांग, नकल, 4 जैन साधुओं की एक जाति, 5 सिख साधुओं की एक जाति, 6 प्यासा, 7 स्वयं,

(27)

पूजे क्यों पत्थर, पागल चेतन छोड़कर,
जिसने साधन सिद्ध किये, उस पर डाल नज़र,
साक्षी बोले सब में, व्यापक चर अचर,
'सामी' अजर अमर, छोड़ न पूजो पिंड[1] तुम।

(28)

'सामी' कर भक्ति, तर जाओगे जगत् से,
चढ़ निश्चय की नाव पर, डांड ले प्रेम मतिं,
गुरू को बना मल्लाह तू, घाट छोड़ कुमति,
साक्षी देखे यति, तो होवे पार भ्रम से।

(29)

प्रभु रहता पार, मन बुद्धि वाणी कर्म से,
व्यर्थ हाथ यहां वहां, मूर्ख अंध न मार,
गुरू गम्य दीपक जला, अपने घर में यार,
हीरा जन्म न हार, 'सामी' कहे समझ बिना।

(30)

वह नद[2] बीच शरीर, जिसकी हैं नहरें कई,
डरो न लहरें देख कर, घुसो देख कर तीर,[3]
पानी है उस पार का, बुद्धि बीच शरीर,
चाहत आर व पार की, 'सामी' छोड़ सुधीर,[4]
वहीं उड़ेलो नीर, जहां नहीं जल बूंद इक।

---

1 देह, शरीर, 2 बडी नदी, 3 किनारा, 4 अच्छे धैर्यवान

(31)

सब मार्गों को छोड़, प्रभु दर पर जाये यदि,
'सामी' प्रभु का तुझे, मिल जायेगा मोड़,
रिश्ते नाते तोड़, मांगेगा न जगात[1] यम।

(32)

एक ही अक्षर पढ़, दूजे क्यों पढ़ता पन्ने,
मन मन्दिर में झांक कर, देख तू उस में जड़,
उस पहाड़ पर चढ़, जिससे तू लौटे नहीं।

(33)

होगी तभी ख़बर, जब आयेंगे शक्तिमान,
फुलवायेंगे श्वांस को, 'सामी' धमका कर,
होगा भाग्य प्रखर, तो दुख न मिलेगा रती भर।

(34)

मूर्ख क्यों कहता, डाल स्वयं को खाई में,
खलबल की इस पोट को, 'सामी' क्यों लेता,
बिना प्रभु मिलन के, काम नहीं बनता,
मिटे नहीं ममता, चाहे जो कोई करे।

(35)

महा तीक्ष्ण बहाव , है यह अविद्या सिंधु का,
छोड़ो आलस ऊंघ को, उठ कर करो उपाव,[2]
जा हिम्मत से ढूंढ लो,'सामी' पुरूष मल्लाह,
ऐसा प्यारा दांव,[3] फिर न मिलेगा तुझको।

---

1 कर, महसूल, 2 उपाय, 3 बाज़ी.

(36)

महा तीक्ष्ण प्रवाह , है यह अविद्या सिंधु का,
'सामी' कष्ट न सहन कर, रख कर दिल में चाह,
लग्न से जा ढूंढ ले, प्रेमी पुरूष मल्लाह,
पार लगने की राह, प्रसन्न हो दें क्षण में।

(37)

जो बेमुख अक्षर,अखण्ड पढ़े वह औलिया,[1]
बिन वाणी है वाणी में, सूक्ष्म सहज सुभर,[2]
जिसका क्षय[3] होता नहीं, अनुभवी रूप अमर,
बिरला वणिक प्रियवर, कोटि में से कोई लहे।[4]

(38)

नहीं बने स्थूल, जो सूक्ष्म साक्षी सदा,
बीज बिना होता नहीं, वट पत्ता फल फूल,
ज्ञान मय आत्म मूल, तू समझ देख 'सामी' कहे।

(39)

साधु न कहलाना, यह फिसलन भारी समझ,
इसने कई भ्रमित किये, मन न भटकाना,
मन मन्दिर में झांक तू, 'सामी' समझ जाना,
कभी न बतलाना, तो परिचय होगा प्रभु से।

(40)

सबको रिझाता, है तू वेद पुराण पढ़,
मन मन्दिर में प्रेम से, झांक नहीं पाता,
चाह न मिटाता, कैसे मिलेगा प्रभु से?

---

1 मुसलमान मत का सिद्ध पुरूष, 2 शुभ्र, उज्जवल 3 अन्त, 4 पावे, प्राप्त करे

(41)

'सामी' नहीं कहला, ज्ञानी पंडित स्वयं को,
ठगे ममत्व ने कई, तू अपना आप बचा,
आज्ञा मान अगस्त्य ज्यों, अविद्या सिंधु सुखा,
झांक झरोखे जा, तो सम्मुख देखे प्रभु को।

(42)

हीरा जन्म न हार, मूर्ख जीव मर्म बिन,
चार गंवाता नींद में, झूठ कपट में चार,
रोओगे तुम बिलख जब, काल करेगा वार,[1]
शीघ्र सुरति संभार,[2] 'सामी' कहे साधु संग।

(43)

हाथ न बहुत चला, गांठ न चुटकी से खुले,
सुमरन सेवा हठ भरा, देगा तुझे हिला,
चला नहीं 'सामी' कहे, चतुराई कला,
मन ने दिया जला, उलझा कर करोड़ों को।

(44)

हाय हाय क्यों करता, मूर्ख मन की भांति तू,
अस्तित्वहीन संसार की, ममता में मरता,
देख सार स्वरूप को, धीर न क्यों धरता,
किसी से न रहता, 'सामी' प्रभु दूर पग।

---

1 आक्रमण, 2 सभाल,

(45)

अस्तित्वहीन हरकत,[1] माया रचे ममत्व से,
बंधन मुक्ति जन्म मरण, 'सामी' सब तत्व मत,
यूं कहते हैं अनुभवी, पीर[2] फ़कीर पंडित,
छोड़ झूठ कल्पित, जग कर देख तू प्रभू को।

(46)

क्यों करती श्रंगार, झूठी बिना सुहाग के,
मानुष देह ममत्व में, भटका नहीं बेकार,
जाग निकाल अंदर से, अविद्या द्वैत अहंकार,
लग्न लगा होश्यार, 'सामी' मिल सुषुम्ना[3] से।

(47)

या प्रभु की बात, या फिर बातें प्रभु से,
बात न निकले प्रभु की, आये न वह दिन रात,
'सामी' कहे संभल ज़रा, प्रीति रख हो शांत,
कहीं पुकार न तात,[4] बिछड़ कर करनी पड़े।

(48)

जब था यहां प्रवाह, तब तू मच्छ लौटा नहीं,
सूखे में अब क्यों रखे, तू घुसने की चाह,
सुख सागर से बिछड़ कर, 'सामी' रो अब शाह,[5]
अब जो कष्ट मल्लाह, दे उन सबको सहन कर।

---

1 बुरा व्यवहार, 2 महात्मा, 3 हठ योग मे शरीर की तीन प्रधान नाडियो मे से एक जो नासिका के मध्य भाग (ब्रह्म रंध्र) मे स्थित है, 4 पूज्य व्यक्ति 5 मुसलमान फ़कीरों की उपाधि

(49)

भक्ति, ज्ञान में भेद, तिल मात्र भी है नहीं,
साक्ष्य दें शोधक सच्चे, साधु जन सफ़ेद,[1]
'सामी' देखो शोध[2] कर, सच्ची विधि से वेद,
मिटा विधि निषेध,[3] स्थित हो आकाश ज्यों।

(50)

वही साधन साध,[4] 'सामी' कहा गुरू ने,
जिसके साधे[5] सुख मिले, मिटे सब उपाध,[6]
अनुभव में आवे सहज, आत्म पद अगाध,
उत्थान और समाध, रहें सहारे जिसके।

(51)

प्रेंम, समझ, हरख,[7] चौथा संग साधु का,
करें निर्मल काट कर, काल कल्पना दुख,
साक्ष्य दें 'सामी' कहे, प्रेमी जन मुमुक्ष,[8]
आत्म पद अपरोक्ष,[9] देखा जिसने देह में।

(52)

राम मिलन की रीति, दक्ष देख तू कृपा से,
जिसका रंग न रूप है, नाम न कोई नीति,
सामी जग में जाग कर, जीत सुरति निरति,
रख तू लग्न प्रीति, पलट देख आकाश में।

---

1 उज्जवल, साफ, निर्मल, 2 जाच, परख, 3 मनाही, 4 कार्य कर 5 करने से, 6 छल, कपट 7 हर्ष, प्रसन्नता, 8 मोक्ष के इच्छुक, 9 प्रत्यक्ष, समक्ष, सामने

(53)

प्रियतम का डेरा, निर्जन बस्ती बीच में,
प्रेम प्रतीति बिन कठिन है, पहुंचना शूरा,[1]
सन्त जनों के पास जा, खोज प्रभु गंभीरा,
करेंगे पूरा, जन्म सफल 'सामी' कहे।

(54)

परे से परे, महिमा मानुष देह की,
साक्ष्य देते समझ कर, 'सामी' सन्त खरे,
प्याला पीवे प्रेम का, जो पावन पूर्ण भरे,
बैठा ध्यान धरे, निर्मल नारायण का।

(55)

ख़ुद को परख संभाल, प्राणी चढ़ मचान पर,
बाड़ लगा विश्वास की, प्रेम से पानी डाल,
भगा क्षमा गुलेल से, भ्रम का झुंड निकाल,
ले लो उपज विशाल, 'सामी' ज्ञान के अन्न की।

(56)

कहना और सुनना, रीता क्या समझे इसे,
पंडित समझ स्वयं को, शूल[2] न तू चुनना,
पलट देख निज आंखों से, प्रभु परबीना,[3]
आना और जाना, होते नहीं हैं गगन में।

---

1 शूर वीर, 2 कांटे, 3 प्रवीण.

उपदेश (ब)

(1)

'सामी' प्रभु पूरन, छिपा कल्पित पटल में,
अंधे देखते हैं नहीं, बोले सुने चेतन,
बिरला जागृत ही करे, हटा पट दर्शन,
प्रेम से वही सज्जन, पल पल पीवे प्रेम रस।

(2)

प्रियतम का दीदार, कैसे मिलेगा गुरूजी?
कहा न जाये मुख से, रहस्य मय चमत्कार,
जिसका रंग न रूप कोई, और न अंग आकार,
जब मिलेंगे यार, तब सुध होगी 'सामी' कहे।

(3)

परमेश्वर प्रत्यक्ष, 'सामी' सूर्य ज्यों रहे,
अंध देखते हैं नहीं, खोल अपने चक्षु,[1]
उसी को तद्रूप बन, तू लग्न सच्ची से देख,
क्यों करता बक बक, दीवानों की तरह तू।

(4)

हर्ष से ख़ास विचार, गुरू ने दिया शिष्य को,
अस्तित्वहीन नद में नहीं, डूबना मझधार,
भान[2] भुलाकर अपना, हो मग्न प्रेम में यार,
तो ख़ुद सृजनहार,[3] प्रभु तेरा तुझको मिले।

---

1 आंख, 2 ज्ञान, 3 सृष्टिकर्ता,

(5)

सूक्ष्म से सूक्ष्म, है यह मार्ग प्रभु का,
बढ़ा हर्ष के साथ तू, संशय रहित कदम,
तो आत्म पद अगम, 'सामी' मिले सहज ही।

(6)

अरे हठ न कर, शोकार्त[1] तू प्रभु से,
पीस चक्की भर पानी तू, प्रेम से मुट्ठी भर,
तो प्रभु तेरे घर, स्वतः आयेंगे घुस कर।

(7)

इच्छा मुक्त जीवन, 'सामी' कर तू कृपा से,
भक्ति बूंद से कर ठंडी,त्रितापों[2] की तपन,
उठा निर्मल नयन, देख अंधेरा है नहीं।

(8)

प्रभु दिल मांगा करे, दिल बिन मांगे न कुछ,
दिल से तर्क निकाल यदि, 'सामी' भेंट धरे,
तो प्रभु तोहि धरे, आ खड़ा हो सामने।

(9)

किसे बताऊँ हाल, पूरब देश मलार का,
जहां न भूख न प्यास है, और न खाये काल,
निश दिन होते हैं नहीं, और न नभ पाताल,
प्रभु का ख़याल,[3] सम वृति[4] 'सामी' कहे।

---

1 शोक से व्याकुल, 2 तीन ताप (शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक)
3 ख़्याल, विचार, 4 प्रवृति, स्वभाव,

(10)

छोड़ छल कपट, जाये यदि प्रभु की तरफ़,
तो सहज परमेश्वर का, 'सामी' मिलेगा तट,
आकर यम निकट, लेगा कर न तुझसे।

(11)

बिरला बड़ भागी, पहुंचे प्रेमनगर में,
जिसने मिल कर गुरू से, ममता मति त्यागी,
वही अनुरागी, देखे स्वयं को आंखों से।

(12)

दिया यही उपदेश, 'सामी' पूर्ण गुरू ने,
समझ सब स्वप्न ज्यों, परिवार परिवेश,[1]
जाग करो तुम ज्योति में, पलकों से प्रवेश,
जिसकी स्वयं महेश, स्तुति करे अभेद बन।

(13)

नहीं बताना ज्ञान, ज्ञान फंसाता जाल में,
प्रभु देखन के लिये, छोड़ सकल अभिमान,
रख प्रमाण सुजान, कहीं धिकारें न प्रभु जी।

(14)

अरी हठ को छोड़, कहीं मिले न दुख विरह का,
विनती कर विनीत बन, सिर झुका कर मोड़,
मन की कुमति त्याग कर, चित चरणों से जोड़,
ईश को, रिझा दौड़, तो 'सामी' पावे सेज सुख।

1 घेरा, परिधि,

(15)

मनुष्य का अवतार, मिला है यह पुण्य से,
उसकी मैं कितनी करूं, प्रशंसा विस्तार,
'सामी' बिरला समझता, कोई सन्त सचियार,[1]
जिसने किया दीदार,[2] स्वयं में स्वयं अपना।

(16)

सदा मान आभार, 'सामी' द्वारे प्रभु के,
रूखा सूखा मिले या, छप्पन भोग आहार,
रख कर इच्छा मन में, मांग न कुछ बेकार,
ऐसा कर व्यवहार, ताकि उत्तम एकांती[3] बने।

(17)

भ्रम खोखला, उपजा मालिक के मन में,
'सामी' राजा स्वप्न में, दास बना भोला,
पहन बैठा स्वयं ही, चिन्ता का चोला,
नहीं भगे रोला,[4] अपने जागरण बिना।

(18)

कल्पित अविद्या छल, उपजा चेतन के चित में,
ज्यों सूरज के तेज से, मृग तृष्णा का जल,
समझ सार स्वरूप को,'सामी' तोड़ ख़लल,[5]
तो आठों प्रहर अचल, रहोगे स्वभाव में।

---

1 सच्चा, 2 दर्शन, 3 भक्ति को मन मे रखने वाला भक्त, 4 कोलाहल, धमासान, झंझट, 5 रूकावट

(19)

उद्यम[1] और किस्मत, तेरे हैं दोनों कर्म,
समझ देख 'सामी' कहे, निकाल ममता मत,
तुझ में सत,[2] न असत,[3] तू साक्षी निर्मल सदा।

(20)

महल में रहते, है सुनहरे प्रभुजी,
कहीं छिपते हैं नहीं, सुनते और कहते,
साक्षी बन कर सब को, निश दिन देखते,
जो मन में घुसते, वे परिचित मनो विनोद के।

(21)

मढ़ी में मढ़ी, उसमें मढ़ी प्रभु की,
उसने मढ़ी पार की, जिसने पहाड़ी चढ़ी,
तोड़ भ्रम घड़ी,[4] नाथ मिला स्वयं नाथ से।

(22)

संशय एक महान, उपजा मेरे मन में,
'सामी' आया कहां से, सतगुरू यह जहान,
पीठ दिखाकर स्वयं को, करे सिद्ध सुजान,
नहीं अन्य पहचान, बुदबुदे की जल बिना।

(23)

देह में दीया, अचल जल रहा आदि से,
हटा अविद्या पट को, जिसने देख लिया,
'सामी' उसने किया, प्रसन्न मन स्वरूप में।

---

1 प्रयास, प्रयत्न, 2 सत्यता, 3 अस्तित्वहीनता, असत्य, 4 छोटी मटकी, छोटा घड़ा

(24)

'सामी' घर में घर, उसमें घर अघर[1] का,
मन बुद्धि वाणी से परे, इन्द्रिय अगोचर,[2]
निर्मल न्यारा नभ ज्यों, प्रभु सम सुभर,[3]
ऐसा पद अमर, गुरू दिखावे ज्ञान से।

(25)

समझो नहीं परे, और समीप न आत्मा,
निर्जन बस्ती बीच में, भ्रमण सदा करे,
समझ देख 'सामी' कहे, आंख उठा कर रे,
दुविधा रहित जरे,[4] दीपक तेरी देह में।

(26)

मूर्ख क्यों निवास, करता माया नहर में,
सहसा काल बनायेगा, गरज कर ग्रास,
जग कर अविद्या नींद से, करो भ्रम का नास,[5]
चेतन चिदाकास,[6] स्वयं देखो 'सामी' कहे।

(27)

हर कोई सुनाये, मुख से बात स्वरूप की,
पलट कर देखे न वह, मन में झांक पाये,
हीरा तोड़ कर हर्ष से, हर कोई गंवाये,
जिस को जगाये, 'सामी' पूर्ण सतगुरू।

---

1 जिसका घर न हो, अर्थात् प्रभु. 2 अदृष्य. 3 शुभ्र, उज्जवल. 4 जले
5 नाश. 6 ब्रह्म

(28)

न कुछ खा न भूख मर, जाग न सो गुम सुम,
नाहीं हार न हठ कर, ना गिर ना हो गुम,
मिलकर साधु संग से, अर्थ कर मालूम,
जिसका चले हुकम,[1] 'सामी' वही बादशाह।

(29)

दे न किसी को ज्ञान, और न धारण मौन कर,
घूम न जाकर घरों में, और न धर ध्यान,
समझ बिना 'सामी' कहे, है सब कुछ अभिमान,
पाकर पद निरवान,[2] जाकर मिल ईश्वर से।

(30)

बनो नहीं विरक्त, और न फंसो गृहस्थ में,
जा कर मिलो प्रभु से, 'सामी' कहे तुरन्त,
नहीं मिलेगा फिर कभी, ऐसा अच्छा वक्त,[3]
बहाओगे रक्त,[4] आंखों से विनीत बन।

(31)

न कुछ खा न भूख मर, जाग न सो गुम सुम,
न त्याग न ग्रहण कर, और न बैठ न घूम,
सब को किस का आसरा, 'सामी' कर मालूम,
ज्ञान सूर्य बिन गुम, अविद्या तम[5] होता नहीं।

---

1 आदेश, 2 निर्वाण, मुक्त, 3 समय, 4 लहू, खून,
5 अंधेरा

(32)

पहन न तन पर चोल,[1] और न खा न भूख मर,
जाग न, कभी नींद कर, चुप रह और तू बोल,
जहां 'तू' 'मैं' है नहीं, ऐसा ठौर[2] टटोल,[3]
तो 'सामी' अनमोल, स्वतः मिलेंगे प्रभुजी।

(33)

हज़ारों की एक, बात बतायी गुरू ने,
ख़लक[4] बसे प्रभु में, प्रभु बीच ख़लक,
'सामी' देख तू आंखें से, रख कर प्रेम अथक,[5]
क्यों चाटता पंक,[6] दर दर दीवाने ज्यों।

(34)

पागल नित चोटी,[7] क्यों नुचवाता काल से,
बल होते निर्बल बना, इच्छा रख खोटी,
खाकर बना न ईश का, रूखी सूखी रोटी,
कभी नहीं लौटी, 'सामी' जो बीती घड़ी[8]।

(35)

घर का हुआ नुक़सान, माँ मारेगी लाज की,
अवधूतों[9] का समझ ले, 'सामी' है यह ज्ञान,
मिट्टी लगा शिव लिंग को, खा पेड़े पकवान,
जग कर देख जहान, रहे सहारे जिसके।

---

1 चोला, कुर्ता, 2 स्थान, 3 टटोलना, खोजना, 4 ससार, जनता, 5 जिसमे थकन न हो, 6 कीचड, 7 चुटिया, 8 समय, अवसर, 24 मिनट का समय 9 सन्यासियों

(36)

किसको मिले कहां, सच्ची समझ स्वरूप की,
साजन रहता सामने, उसको मिले वहां,
चोला चेतन रँग से, योगी रंगे जहां,
कहते सन्त तहां, 'सामी' मिलते प्रभुजी।

(37)

परूषार्थ का पैर, 'सामी' दिखाया गुरू ने,
समझ लो स्वप्न का, कर्ता कौन दिलेर,[1]
जाग निकालो मन से, अविद्या रूपी अंधेर,
सब को देखे सुमेर,[2] लग्न लगा उस प्रभु से।

(38)

प्रश्न परम[3] सुन्दर, पूछा भ्रमवश शिष्य ने,
कहां रहे? कैसे मिले? अन देखा ईश्वर,
'सामी' दिया गुरू ने, स्पष्ट अभेद उत्तर,
घर वाले का घर, घर में घर वाला बसे।

(39)

श्रवण मनन निदिध्यास[4], सहारे हैं जिसके,
उसे देख तद्‌रूप बने, स्नेही पुरूष निरास,
पावे गुरू गम्य ज्ञात को, कर अनन्य अभ्यास,
सुख स्वरूप में वास, कर जा कर 'सामी' कहे।

---

1 शूर, साहसी, बहादुर, 2 सुमेरू पर्वत, भगवान, 3 सर्वश्रेष्ठ, 4 बार बार स्मरण,

(40)

गुरू ने साधन चार, कहे सुख स्वरूप के,
प्रेम समझ विश्वास सत्य, हरि यश बारम्बार,
पहुंचायेंगे स्वयं ही, ये प्रभु के द्वार,
कर ले आंखे चार, तो शीतलता 'सामी' मिले।

(41)

हाथ न लगा हर बार, गांठ न चुटकी से खुले,
'सामी' कहा गुरू ने, जाते को लौटा यार,
पलट देख तू आंखों से, भ्रम का चमत्कार,
गुरू करे उपकार, तो भागे भ्रम अधम का।

(42)

गुरू की बात गहर,[1] प्रेम न कर पयाल[2] से,
काल अचानक मारेगा, ढायेगा कहर,[3]
बात यही है ज्ञान की, समझ सत्य चतुर,
'सामी' सारा नगर, तथा सन्त दें साक्ष्य।

(43)

मैं तो हूं वही, जागरण स्वप्न सुषुप्ति[4] में,
ब्रह्मण क्षत्रिय शूद्र, वैष्य, जो भी कहे कोई,
'सामी' मैं बदला नहीं, देह हंसी रोई,
लौंकार,[5] कंबल, लोई,[6] साफ़ न हों गुरू ज्ञान बिन।

---

1 गूढ, गहरी, 2 धान, कोदो आदि के सूखे डंठल जिनके दाने झाड दिये गये हों, पुवाल, 3 विपति, संकट, 4 गहरी नींद, 5 मालवा के एक कबल का प्रकार 6 शाल

भाग – 3

भक्ति (अ)

(1)

भक्ति पद भारी, 'सामी' है यह सब से,
जाकर पूछो उनसे, ममता जिन ने मारी,
पाकर ज्ञान गुरू का, बने जो दरबारी,
खुदी[1] ख़वारी,[2] निकाल देखा स्वयं को।

(2)

बड़ी बड़ाई, 'सामी' समझो भक्ति की,
कई नीच ऊँचे बने, करके कमाई,
मोची चमार जुलाहे, पंजयारे[3] नाई,[4]
जिन ने लगाई, लगन वे सब सुधर गये।

(3)

कर के भाव भक्ति, 'सामी' तर जा जगत् से,
नाव बना विश्वास को, पतवार प्रेम मत्ति,
सतगुरू को नाविक बना, घाट छोड़ कुमति,
समझो सत्य अति, तो पहुंचे पार भ्रम से।

(4)

भगवत् के भक्त, लेते सुख स्वरूप का,
जो समझे 'सामी' कहे, यह उलट संकेत,
चढ़े चेतन नभ पर, काट कर कल्पित,
ठीक अभेद अद्भुत, वाणी कहे असीम की।

---

1 अहंकार, 2 तिरस्कार, बदनामी, 3 रूई धुनने वाले, 4 इस पूरी पंक्ति का संकेत भक्त रविदास, कबीर, दादू और सैना नाई की ओर है.

(5)

ज्यों हरा दरख़त,[1] छांव फूल फल सुख दे,
वैसे सब कारज करे, भगवत् का भक्त,
रखे न तिल मात्र कभी, माया मोह ममत्व,
हो अभेद उपरत,[2] 'सामी' रहे स्वभाव में।

(6)

भगवत् का भक्त, कहीं भी छिपता नहीं,
देखा जिसने देह में, ज्ञान मय आत्म तत्व,
करता मौज मुक्ति की, मिटा कर ममत्व,
राई और पर्वत, सम समझे 'सामी' कहे।

(7)

भक्तों से भगवान, क्षण भर दूर न हो कभी,
अन्दर बाहर सर्वगत, देता दर्शन दान,
काटे कोटि जन्म का, अन्दर का अभिमान,
पाकर पद निरवान,[3] 'सामी' लेता शांति सुख।

(8)

भक्तों से भगवान, क्षण भर दूर न हो कभी,
बना उनको सर्वगत,[4] देता दर्शन दान,
मिटा जिन के मन से, तन का सब अभिमान,
पाकर पद निरवान, 'सामी' लेते सहज सुख।

---

1 पेड वृक्ष, 2 उदासीन, विरक्त, 3 निर्वाण, मुक्त 4 सर्वव्यापी,, सब जग रहने वाला

(9)

भक्त प्यारा जान, नारद मुझको सबसे,
करता मेरे नाम पर, जो अपने को दान,
संशय निकाल मन से, सम रहता सुजान,
मैं उनका स्थान, 'सामी' छोड़ता नहीं।

(10)

नारद सब क़बूल,[1] भात पानी भक्तों का,
जो देते हैं मुझको, प्रीति से मन मूल,
लय[2] करते हैं लग्न से, सूक्ष्म में स्थूल,
तू भी जाकर झूल, प्रेम झूले में उन संग।

(11)

भक्ति दे भगवान, जिसको अपनी रीझ कर,
उसने 'सामी' सब किये, जप तप दान स्नान,
जन्म मरण सुख दुख का, भ्रम न रखे सुजान,
यूं ही वेद पुरान, कहते सन्त विचार कर।

(12)

भक्ति बिना न ज्ञान, ज्यों न मोती जल बिना,
बोध[3] बिना मिटता नहीं, अविद्या का अभिमान,
समझ देख 'सामी' कहे, छोड़ सकल अनुमान,[4]
निर्मल पद निरवान,[5] फिर लो हाज़िर हाथ में।

---

1 स्वीकार, 2 विलीन, लुप्त, 3 ज्ञान, 4 अंदाज, कयास 5 निर्वाण मुक्ति

भक्ति (ब)

(1)

जिसका आदि न अंत, तोल मोल न नाप कोई,
प्रसन्न हुआ वह स्वयं ही, भक्ति वश भगवंत,[1]
'सामी' जो रखता पकड़, ज्ञान सच्चा गुरूमंत,[2]
बिलावल, बसंत,[3] गाता रहता गांव में।

(2)

दर्शन ठंडा करे, नारद मुझे भक्तों का,
ध्यान रखूं मैं उसका, जो मेरा ध्यान धरे,
ओत प्रोत समझ कर, होता नहीं परे,
'सामी' नहीं गुज़रे, निश दिन भक्ति आहार बिन।

(3)

समझो शुद्ध स्वरूप, नारद मेरे भक्तों को,
तारण हेतु जगत् के, धारण करें वे रूप,
'सामी' वचन अनूप,[4] सत्य अकाट्य कहता हूं।

(4)

प्रभु का प्यारा, प्रभु से मिलकर रहे,
जाना उसने सुख का, चेतन चौबारा,[5]
जाग जगत् सारा, निकाल फेंका मन से।

(5)

भक्त भागवती, करोड़ों में एक हो,
जिसने देखा रीझकर, 'सामी' प्राण पति,
त्यों डूबे महामति, ज्यों चद्दर डूबे रंग में।

---

1 ईश, परमेश्वर 2 गुरूमंत्र, 3 रागों के नाम, 4 जिसकी उपमा न हो, सुंदर
5 कोठे के ऊपर की खुली कोठरी

(6)

हरि भक्त की चाल, न्यारी नाना भ्रम से,
अन्दर चतुर सूरमा, बाहर रहे बेहाल,
शरण पड़े हर किसी का, 'सामी' बने प्रतिपाल,[1]
कृपा सहित कलाल,[2] पिये पिलावे प्रेम रस।

(7)

भगवत्[3] के भक्त, दूर न होते पिया से,
जिन को दे दी गुरू ने, मधु भरी मुहब्बत,[4]
'सामी' लेते सेज सुख, काट सब कल्पित,
रहें बीच जगत्, सदा अलेप आकाश ज्यों।

(8)

भगवत् के भक्त, दूर न होते पिया से,
सहज जिनका गुरू ने, काटा सब कल्पित,
सदा रहें 'सामी' कहे, जागृत में सुषुप्त,[5]
गोरख, नारद दत्त, साक्ष्य दें सुखदेव की।

(9)

बिरला व्यापारी, सौदा करे सत्य का,
भरे खेप[6] क्षमा से, भक्ति की भारी,
'सामी' लोक परलोक की, सुधि रखे सारी,
रखे विनय जारी, सम्मुख रह कर प्रभु से।

---

1 पोषक, राजा पालक, 2 शराब बनाने और बेचने वाली एक जाति का व्यक्ति, 3 प्रभु, ईश्वर 4 प्रेम, 5 नींद में, 6 लदान

(10)

'सामी' जो बोये, भक्ति बीज भुवन[1] में,
रीझ कर तद्रूप बन, अमृत फल खाये,
रहे विदेही देह में, नभ ज्यों अलग छाये,
घटे न बढ़ पाये, ज्ञान झूठ भ्रम का।

(11)

नारायण के नाम का, धरा जिन्होंने ध्यान,
जड़ से फेंके काट कर, अंदर का अभिमान,
'सामी' रहे स्वच्छ सदा, पाकर गुरू ज्ञान,
उन्हीं को भगवान, स्वतः मिले स्वयं में।

(12)

जिन ने लगाई, लगन लाल गुलाल हुए,
जाट पंजारे रजक, मोची शूद्र नाई,
चढ़े ज्ञान के नभ पर, वाणी गंवाई,
'सामी' सदा ही, लेते आनन्द दरस[2] का।

(13)

पूजा वस्तु कमाल,[3] कोटि में बिरला करे,
मिटा जिसके मन से, 'सामी' जगत् जंजाल,
तिल मात्र भी न रहा, मन में शोर धमाल,[4]
मिल कर हुआ निहाल,[5] पूर्ण परमेश्वर से।

---

1 संसार, 2 दर्शन, 3 अद्भुत, अनोखी, 4 धमार, उपद्रव, उत्पात, 5 सतुष्ट

(14)

जिसको मिला रहस,[1] गुरू गम्य भक्ति अभेद का,
मिटी उसके मन की, 'सामी' पूर्ण तमस,[2]
करता वही दरस,[3] चींटी और कुंजर[4] में।

(15)

वे जन आर न पार, जिनका मुख प्रभु की तरफ़,
करें ठिकाना वे जहां, नाव न हो पतवार,
शोर लहर मझधार, दिखे न उनको प्रेम बिन।

(16)

प्रभु का प्याला, बूंद जलधि[5] सम उसकी,
जो पीता है भर कर, होता मतवाला,[6]
कहे न कुछ लाला, दक्ष बने वह जलधि का।

(17)

घर में किया वासा, 'सामी' आकर प्रभु ने,
कैसे छोडूं मैं भला, हूं दर्शन प्यासा,
चेत[7] हुई गुम देह की, देखा तमासा,[8]
जैसे बतासा,[9] पानी में पानी हुआ।

(18)

उपजा भक्ति अंगूर, सतगुरू की कृपा से,
वह बढ़ बोध वृक्ष हुआ, दसों दिशा भरपूर,
उसमें साक्षी फल लगा,उगा ज्ञान का सूर,[10]
प्रकट हुए हुजूर, 'सामी' जगत् विलीन हुआ।

---

1 रहस्य, 2 अंधेरा, 3 दर्शन, 4 हाथी, 5 सागर, समुद्र 6 मस्त, मतमत, उन्मत, 7 चेतना, 8 तमाशा, मनोरंजन, नाटक, 9 बताशा, 10 सूर्य

ललक (अ)

(1)

वेदों और पुराणों में, चर्चा एक चली,
परमेश्वर के ललक की, जा तू ढूंढ गली,
'सामी' वह मिली, जिसने चहुंदिश देखा रब,[1]।

(2)

हज़ारों में एक, बात बताई गुरू ने,
मिलते वे ईश्वर से, जिनको प्रेम ललक,
नहीं होते वे कभी, 'बाभन' कम अधिक,
दूजे सब बालक, भूले निज को भ्रम में।

(3)

जो भी इस वेला,[2] आये सच्चे प्रेम से,
उसको दूं तत्काल मैं, मन मोहन मिला,
बिना ख़लल[3] खेला, 'सामी' वह संसार में।

(4)

थके हुए ने थोक,[4] पाया प्रभु ललक से,
मिटा उस के मन का, 'सामी' संशय शोक,
लोक के बीच अलोक,[5] देखा पद प्रभु का।

(5)

ललक ने ढूंढ लिया, दर्शन किया प्रभु का,
संशय शुभ्र[6] प्रवाह में, 'सामी' बह गया,
आत्म लाल किया, प्राप्त और सुखी हुआ।

---

1 ईश्वर, प्रभु. 2 समय, घडी, पल, 3 रूकावट, 4 ढेर, इकट्ठा
5 अदृष्य, 6 उज्जवल,

(6)

ललक सहस्रों अंध, 'सामी' रखाते प्रभु की,
एक कदम बढ़ते नहीं, माया में मदंध,[1]
हद छोड़ बहेद, तक पहुंचते प्रेमी जन।

(7)

बिना ललक सज्जन, किसी को मिलता नहीं,
निकले दही बने बिना, दूध से नहीं मक्खन,
फल दे पेड़ सघन,[2] 'सामी' फिर रीता रहे।

(8)

लाते हैं फ़कीर, सत्य खोजकर ललक से,
बरसे कृपा घन जहां,वहां बनाते कुटीर,[3]
मौज करें वे धीर,[4] आठों प्रहर प्रभु से।

(9)

ललक बिन सफ़ाई, आती नहीं अंदर में,
चाहे सब साधन करे, सिर में डाल छाई,[5]
यही बात समझ में, बिरले को आई,
गुरू गम्य लगाई, जिसने लग्न स्वरूप से।

(10)

सच्ची ललक पाई, सागर तरण सुगम हुआ,
सन्तों के संग ज्ञान से, ममता मिटाई,
संधि बताई सम की, शीतल सुखदाई,
'सामी' समाई, लहर झूमकर समुद्र में।

---

1 मदांध, नशे में चूर, 2 घना 3 कुटिया, 4 धैर्यवान 5 भस्म, राख, धूल, मिट्टी

(11)

आंखों में स्थान, प्रभु परमेश्वर का,
सदैव देखे ललक से, प्रेमी जन भगवान,
जीते जी जग से हुआ,'बाभन'[1] कहे निरवान,[2]
सन्त जनों का ध्यान, लगाकर वह लाल हुआ।

(12)

ऐसी ललक बढ़ी, परमेश्वर के दरस[3] की,
दीक्षा लेकर गुरू से, बांधी गांठ कड़ी,[4]
'सामी' नेकी बदी[5] की, ली सिर पर पोट[6] बड़ी,
नस नस में जड़ी,[7] मूर्ति अपने पिया की।

(13)

जिसको पूर्ण प्रीति, परमेश्वर की मन में,
वह मन्दिर घूमे नहीं, और न घूमे मसीत,[8]
समझे वह संसार की, झूठी कल्पित रीति,
प्रभु बिन प्रतीति,[9] किसी पर करता नहीं।

(14)

कोई आर न पार, परमेश्वर की ललक का,
स्वाति बिना सीप को, आता नहीं करार,[10]
मछली के मन में बसे, पानी प्राण आधार,
'सामी' सृजनहार, पल भर दूर न हो कभी।

---

1 ब्रह्मण, कवि का उपनाम, 2 मुक्ति, छुटकारा, 3 दर्शन, 4 कठोर 5 अच्छाई, बुराई 6 पोटली, 7 जड़ना, नस नस में बिठाई, 8 मस्जिद, 9 विश्वास, 10 आराम

ललक (ब)

(1)

छिपे न प्रेमी जन, सूर्य ज्यों संसार में,
गांठ बांध रखता वही, गुरू की शिक्षा वचन,
ज्ञान सिंहासन बैठ कर, करता रिपु[1] दमन,
'सामी' ललक लगन, रखे प्रभु पूर्ण से।

(2)

जिनको ललक लगन, वे कभी छिपते नहीं,
काया माया कुल में, मरें न जल कर जन,
निरति[2] करें नारद ज्यों, नाना भांति प्रसन्न,
रहते मस्त मगन, 'सामी' परमेश्वर से।

(3)

तुझको यदि लगन, सच्ची ललक प्रभु की,
लोक लज्जा को छोड़कर, घुस जा तू आंगन,
'सामी' चढ़ जा फांसी पर, भ्रम का कर हनन,
देख प्रत्यक्ष पूरन, पटल हटा कर प्रभु को।

(4)

प्रेमी जन चले, ललक को पथ प्रदर्शक बना,
'सामी' देखा साध संग, ज्ञान से पट खुले,
जला बैठे पद में, दरस धुनी चेले,
तू ही तू बोले, स्वतः ही 'सामी' कहे।

---

1 शत्रु, 2 अप्रेम

(5)

मोहन मेरा मन, जकड़ा तेरी ललक ने,
रोम रोम[1] में लग रही, आग तड़पता तन,
पूछूं पुकारूं सहन करूं, लोगों के लांछन,
दुखिया को दर्शन, शीघ्र दो 'सामी' कहे।

(6)

करके ठिकाना, बैठी ललक अंदर में,
पुचकारे, तसल्ली दे,[2] बनाये बेगाना,
कृपा कर प्रभु देखने, पीड़ित को आना,
छोड़ नहीं जाना, 'सामी' भव[3] की भीड़ में।

(7)

दब गया अदना,[4] प्रभु तेरे प्रेम में,
लग गया विस्मय भरा, बाण है डरावना,
'सामी' सर्व जगत् लगे, नाशवान रचना,
जीते जी मिलना, मरा तो मिलोगे किससे।

(8)

पल भर हो न परे, ललक तेरी प्रभु जी,
बाण धंसाती दिल में, बेहद[5] नित करें[6],
'सामी' मिले अधम से, यदि तू कृपा करे,
तो यह मन ठरे,[7] जब देखूं इन आंखों से।

---

1 पूरे शरीर में, 2 ढाढ़स दे, 3 संसार, 4 क्षुद्र, तुच्छ, नीच, 5 असीम
6 कठोर, 7 ठंडा हो

(9)

पल भर हो न परे, ललक तेरी प्रभु जी,
सदा गड़ाये[1] दिल में, असीम बाण गहरे,
'सामी' रोवे रक्त नित, धीर न कभी धरे,
मारोगे मरे, या मिलोगे मृतकों से।

(10)

भेजे ललक साजन, 'सामी' सुरति सखी को,
सहसा घुस कर घर में, आ बैठे आंगन,
ले जाती है महल में, दे सम्मान पूरन,
चिन्ता मुक्त चेतन, विवाह करता पिया से।

(11)

चेतन प्रेम ललक,[2] ढूंढ़ लेता गांव में,
'सामी' लेता सार सुख, वही प्रेमी पुलक,[3]
फंसे नहीं भुलक्कड़ ज्यों, लालच में पथिक,[4]
समझे वह नाटक, चारों ओर ही एक है।

(12)

ऐसी लगी ललक, प्रभु तेरी मन को,
छोड़े सुख संसार के, तेरे लिये मालिक,[5]
उठत बैठत नींद में, तेरा ही जप इक,
'सामी' कहे झलक, शीघ्र दिखाओ, आ मिलो।

---

1 चुभाये, 2 उत्कंठा, 3 प्रसन्न होकर, 4 यात्री, राही,, 5 प्रभु

प्रेम

(1)

आओ पिलाऊँ, भर कर प्याला प्रेम का,
'सामी' इस अवसर पर, तन मन ठंडा करूं,
इस दिश् दिखाऊँ, परमेश्वर को आंखों से।

(2)

सब के घर छाया, प्रेम पदार्थ राम धन,
मन मन्दिर में झांक कर, देख नहीं पाया,
'सामी' दिखाया, गुरू ने पद नयन से।

(3)

प्रभु ख़ुद आये, मृतकों की सभा में,
सच्चा शौक जिस को, वह मन को समझाये,
पतंग ज्यों वह दीप को, देख ख़ुशी पाये,
रंग में रंग जाये, 'सामी' स्वतः प्रभु के।

(4)

'सामी' ठग लाधा,[1] जिसने ठगा सब को,
कसकर मन को खंभे से, प्रेम फंदा बांधा,
तब ठग ढीला हो गया, छल को छोड़ योद्धा,
खाये नित पाधा,[2] साग[3] पका कर हर्ष से।

(5)

'सामी' जो चखे,[4] गुरूगम्य प्याला प्रेम का,
प्रभु के आगे वही, सिर को काट रखे,
सब में सार[5] लखे,[6] ध्यान भुलाकर अपना।

---

1 ढूढकर पाया, 2 पुरोहित, पंडित, 3 सब्जी, 4 चाखे, 5 तत्व, 6 देखे

(6)

पुनी[1] पुण्य करे, भोगे भोग स्वर्ग के,
पापी घोर नरक में, बहाये रक्त डरे,
पावन प्रेमी सब से, 'सामी' रहे परे,
पूर्ण ध्यान धरे, देखे प्रत्यक्ष आत्मा।

(7)

लाखों करें हज़ार, बातें नित वेदान्त की,
'सामी' सौदा प्रेम का, बिरला करे होश्यार,
बैठ ज्ञान के हाट पर, देत द्वैत को मार,
पिलाता है प्यार, सब को भेद भ्रम बिन।

(8)

बजी अवाच्य अभंग,[2] मुरली मन मन्दिर में,
सुनने से 'बाभन' कहे, भ्रम भय गया भग,
खण्ड ब्रह्मण्ड विचार की, हुई सुधि सर्वग,[3]
मांगे भीख निहंग,[4] चाहे पेट भरा रहे।

(9)

बेहद बजाये, मोहन मुरली मद भरी,
सुन कर बुद्धिमानों को, भली भांति भाये,
छोड़ व्यर्थ विचार जो, लगन लगाये,
'सामी' हो जाये, मस्त वही भव[5] सिंधु में।

---

1 पुण्यवान, 2 रूकावट रहित, 3 सर्वव्यापी, 4 अकेला, 5 संसार, जगत्

(10)

तुरंत लगा लगन, 'सामी' परमेश्वर से,
रह जाओगे मार्ग में, जल्दी करो जतन,[1]
जीवन मरण दुख सुख की, चिन्ता छोड़ सज्जन,
घट घट में दर्शन, कर तू परमेश्वर का।

(11)

बीती सो बीती,[2] बाक़ी[3] रहो रहन[4] से,
पूछो प्रेमी जनों से, सच्ची रस रीति,
'सामी' सावधान हो, जिसने बाज़ी जीती,
पावनता पलीती,[5] लांघ पहुंचा लक्ष्य पर।

(12)

प्रेमी हुआ प्रियतम, आकर प्रेम नगर में,
प्राप्त किया प्रभु का, 'सामी' सहज मर्म,
भुला कर भ्रम, ख़ुद को देखा खुद में।

(13)

प्रेम प्रवाह बहा, डूबी बुद्धि उस में,
बिना दर्शन प्रभु के, 'सामी' नहीं रहा,
सन्त ने जो कहा, वह सहज मिला हाथ में।

(14)

प्रेम पिशाच लगा, द्वैत न रहा दिल में,
विधि निषेध व्यवहार का, संशय सब भगा,
'सामी' पीछा आगा, छोड़ बैठा मस्त बन।

---

1 यत्न, 2 बीत गई, 3 शेष, 4 रहने का ढंग, सही ढंग से, 5 गंदगी, अपवित्रता,

(15)

प्रेम बिना प्रकास,[1] किसी ने देखा नहीं,
यूं कहते हैं नामदेव, संत कबीर रविदास,
करके देख भ्रम बिन, 'सामी' अनन्य अभ्यास,
तो चेतन चिदाकास,[2] प्रकट होवे स्वयं ही।

(16)

बेगमपुर नगर, है ठीक आकाश में,
मन बुद्धि वाणी वाच्य से, अगम्य[3] अगोचर,[4]
'सामी' प्रेम प्रतीति से, देखे जो जाकर,
अनुभवी पुरूष अमर, मिले उस को भ्रम बिन।

(17)

बिरला ही बूझे,[5] 'बाभन' भाषा जगत् की,
चाहे चतुर शूर हो, पंडित नहीं समझे,
बिरले ही विश्वास से, सुलझाते सुलझे,[6]
कभी नहीं उलझे, वे अविद्या के तिमिर में।

(18)

जो प्रेमी पूरन, वह योगेश्वर जगत् में,
पावे जो प्रतीति से, गहरा ज्ञान अंजन,[7]
घुस कर पावे घर में, अनुभवी आदि धन,
मिटाकर मनन, 'सामी' लेता सेज सुख।

1 प्रकाश, 2 ब्रह्म, 3 जहां जाया न सके, 4 जो न दिख सके 5 समझे,
6 सुलझे हुए लोग, सन्तजन, 7 काजल

(19)

मधुर मधुर मुरली, कान्हा बजाये मुख से,
सुन कर गोपी ग्वालों की, 'सामी' सुधि भुली,
अविद्या गांठ खुली, देख मुख प्रियतम का।

(20)

देख प्रेम प्रभाव, भाग गये हैं कर्म सब,
ज्यों गरज सुन शेर की, भगे मृग उलटे पांव,
'सामी' देख कर राव, सभी चोर लज्जित हुए।

(21)

देखे बिरला जन, देखने वाला देव को,
जिसका प्रेम प्रतीति से, नहीं उचटता मन,
सुनता सन्त वचन, 'सामी' पूरब देश का।

(22)

रातों दिन जरे,[1] बिरहिन कारण पिया के,
स्वाति के कारण ज्यों, सीप विलाप करे,
चकोर कारण चकोरी, सिसके आह भरे,
प्यास न मिटे मीन[2] की, बिना नीर मरे,
तभी जीव ठरे,[3] जब 'सामी' मिले प्रभु से।

(23)

जिसने भी पढ़ा, पूरा अक्षर प्रेम का,
मन की वह ममता मिटा, ज्ञान के नभ चढ़ा,
'सामी' अनगढ़ा,[4] देव देखता देह में।

---

1 जले, 2 मछली, 3 ठंडा हो, 4 अनिर्मित

(24)

लेकर एकांतवास, मुक्त हुए बंधन से,
जिन्होंनें किया प्रेम से, अन्तर्मुख अभ्यास,
सही समझे सम बन, चेतन चिदाकास,[1]
पाकर पद निरास, रोते हंसते हैं नहीं।

(25)

अनुभवी अटक,[2] नहीं रखते मन में,
पूर्ण अक्षर प्रेम का, पढ़कर हुए परिपक्व,
फेंक पन्ने निरर्थक, 'सामी' घुसे प्रवाह में।

(26)

प्रेमी से पिय्रतम, क्षण भर दूर न हो कभी,
साधे जो अस्तित्व में, दीवाने ज्यों दम,[3]
नहीं बताता किसी को, 'सामी' सुख अगम,[4]
जो भी करे करम, तो भी रहे आकाश ज्यों।

(27)

प्रेमी से प्रियतम, क्षण भर दूर न होत है,
जिस पर कृपा गुरू की, मान[5] उसे दे यम,
बेच देता विश्वास से, जग कर सब जोखिम,[6]
लेता जीत जनम, 'सामी' कहे संसार से।

(28)

पढ़े जो पूरा , गुरूगम्य अक्षर प्रेम का,
मिटा उसके मन से, अविद्या अंधेरा,
'सामी' वह शूरा,[7] जीत बैठा जगत् को।

---

1 ब्रह्म, 2 रूकावट, 3 श्वास, 4 दुर्गम, जहा पहुचा न जा सके, 5 सम्मान,
6 विपति की आशंका, विपदा, 7 शूरवीर

(29)

प्रेमी का प्रताप, छिपे न लोक परलोक में,
मिटा जिस के मन से, अविद्या का पुण्य पाप,
भक्ति करे अभेद बन, अनगिनत अमाप,[1]
'सामी' वर श्राप, लांघ लाल गुलाल हुआ।

(30)

जो पावन प्याला, पिये प्रेम का मांग कर,
उसने है संसार का, भ्रम तोड़ डाला,
सदा रहे 'सामी' कहे, मगन मतवाला,
बन भोला भाला, दिल देता है प्रभु को।

(31)

प्रीतिवान बेबस, कभी भी होते नहीं,
चांहे कोई निन्दा करे, चाहे दे शाबस,[2]
लेते सुख स्वरूप का, तज कर लोभ तमस,
सर्वदा सम रस, 'सामी' रहें स्वभाव में।

(32)

'सामी' सन्त सुलझा, वचन कहे विश्वास का,
करोड़ों में एक ही, प्रेमी सत्य समझा,
सुख दुख में संसार के, जो न कभी उलझा,
मर कर वह बूझा,[3] परमेश्वर की प्रीति को।

---

1 जिसकी नाप न हो सके, 2 शाबास, 3 समझा

स्नेही

(1)

पल भर हो न परे, स्नेही नारायण से,
मन में चन्द्र चकोर ज्यों, दर्शन ध्यान धरे,
भ्रमर रहे न गंध बिन, जल बिन मीन मरे,
'सामी' तभी ठरे,[1] जब पड़े बूंद पपीहे पर।

(2)

कर्म फल मूर्ख जन, भोगे स्वतः बुद्धि बिन,
मकड़ी ज्यों ब्रह जाल में, स्वयं फंसाये तन,
'सामी' पहुंचे लक्ष्य पर, स्नेही मुक्त सज्जन,
जिसे ज्ञान पूरन, देता गुरू स्वरूप का।

(3)

भुलक्कड़ से भ्रम, मिटता नहीं मरण का,
मान बैठा स्वयं को , हाड़[2] मांस रक्त चर्म,[3]
कोई स्नेही निडर रहे, 'सामी' सम सूक्ष्म,
कैसे हारे यम, यह बतलाता सतगुरू।

(4)

ख़ुश होकर पतंग, ज्यों जल मरे ज्योति में,
त्यों प्रभु के साथ में, प्रेमी रहे निहंग,[4]
लगा लाल गुलाल हो, रहन सच्ची का रंग,
सहन शील सर्वग,[5] 'सामी' बनाये सतगुरू।

---

1 ठंडा हो, 2 हड्डी, 3 चमड़ा, 4 अकेला, 5 रहने की क्रिया,
5 सर्वव्यापी

(5)

स्नेही जन मतलब,[1] किसी से रखते नहीं,
रहता जिनके रूह[2] में, रातों दिन इक रब,[3]
बातें करते गगन की, चमत्कारी अजब,[4]
लोक लगाये लक़ब,[5] तो भी मस्त हों मन में।

(6)

स्नेही जन मरे, दर्शन हेतु प्रभु के,
जैसे मछली नीर से, पल भर हो न परे,
चातक कारण मेघ के, सदा विलाप करे,
'सामी' ध्यान धरे, सीप सर्वदा स्वाति का।

(7)

स्नेही निराधार, करोड़ों में एक हो,
समझा जिसने जागकर, सपनों का संसार,
दे उपदेश ज्ञान का, देख सही अधिकार,
सर्वदा फुलवार,[6] 'सामी' रहे स्वभाव में।

(8)

स्नेही जन निरास, आस न रखे किसी की,
रखे चन्द्र चकोर ज्यों, सदा दर्शन प्यास,
करता चरण कमल में, सच्ची विधि से वास,
रहता उसके पास, 'सामी' सदैव प्रभु ख़ुद।

---

1 स्वार्थ, प्रयोजन, 2 आत्मा, 3 प्रभु, 4 विचित्र, अद्भुत, विलक्षण, 5 दोष, लांछन, 6 प्रसन्न

(9)

स्नेही रहे निरास, सर्वदा संसार में,
करता भ्रम निकाल कर, नयनों में निवास,
पूर्ण देखे प्रेम से, चेतन चिदाकास,[1]
जिसमें प्रेम प्रकास,[2] 'सामी' रहे स्वरूप का।

(10)

स्नेही नर निष्काम, करोड़ों में एक हो,
काटे जो गुरू ज्ञान से, लालच भ्रम तमाम,[3]
अन्दर बाहर नभ ज्यों, देखे रमता राम,
स्वर्ग जैसा धाम, 'सामी' समझे सपना।

(11)

निर्विकल्प[4] स्नेही, सदैव सम शीतल रहे,
नहीं पूछता घुस कर, घर घर बात विरही,
देखे प्रभु हर चीज़ में, विद्यमान वही,
'बाभन' विदेही, दावा[5] करे न देह का।

(12)

जिस पर दृष्टि धरे, स्नेही उसको जोड़ दे,
सहज बन 'सामी' कहे, उसका पेट भरे,
जैसे भृंग[6] कीट को, बदले भृंग करे,
दुविधा बिना जरे,[7] जैसे दीप से दीप मिल।

---

1 ब्रह्म, 2 प्रकाश, 3 सम्पूर्ण, 4 एकाग्र, 5 हक, अधिकार, 6 भौंरा, 7 जले

(13)

स्नेही नाना भांति,[1] भक्ति करे भगवान की,
बिरले किसी शूर[2] को,'सामी' मिले शांति,
साजन से मिल मन की, मिटाये भ्रान्ति,[3]
प्रगति एकांती,[4] करता सच्ची रहन से।

(14)

स्नेही निरभिमान, रखे अहंग[5] न मन में,
साधु संगति के यहां, विधि से बिके महान,
ख़ुश हो पावे अपना, प्रियतम पहचान,
सुख दुख समझे समान, 'सामी' जो दे प्रभुजी।

(15)

स्नेही निष्कर्म, कर्म करे संशय बिना,
माया मोहित न करे, उसे न जोहे[6] यम,
बोले बंधन द्वैत बिन,ज्ञान का वाक्य अगम,[7]
'सामी' देखे सम, अन्दर बाहर आत्मा।

(16)

रोकर लगाते गल, स्नेही नारायण को,
मरों को तू माया के, छल से कर न विकल,[8]
डोरी तन की डाल कर, डूबे निकाल सबल,
'बाभन' अपना बल, पहुंचा रहा न पद में।

---

1 प्रकार, 2 वीर, 3 शका, धोखा, भ्रम 4 जो केवल भगवतप्रेम को अन्त करण में रखे, 5 अहकार, 6 प्रतीक्षा करे 7 दुर्गम, 8 व्याकुल

(17)

हर कोई पावे फल, बो कर बीज भला बुरा,
रहे अलेप आकाश ज्यों, कोई स्नेही निर्मल,
'सामी' मन को साधु संग, मोड़े करे अचल,
दूर न होवे पल, स्वतः सिद्ध स्वरूप से।

(18)

निगले बना ग्रास, सब को माया मोहनी,
पल भर दूर न होत है, पापिन रहती पास,
करे उसे गुम ज्ञान से, बिरला नेही निरास,[1]
सदैव इक आभास, जिसे अन्तर्रात्मा का।

(19)

कर्म उपासना ज्ञान, तीनों विषय निकास के,
समझे कोई 'सामी' कहे, स्नेही निरभिमान,
करता जो कृपा से, ज्ञान का अमृत पान,[2]
जग कर सर्व जहान,[3] लय[4] देखता लक्ष्य में।

(20)

मानुष जन्म अमोल,[5] हठ कर तू न गंवा हठी,
जीते बाज़ी[6] प्रेमी जन, मन का पर्दा खोल,
रहे ईश के निकष[7] पर, 'सामी' खरा अडोल,[8]
भ्रम पोट बेडोल, फेंक मिले स्वरूप से।

---

1 जिसे कोई आशा न हो, निराश 2 पीना, 3 संसार, 4 लीन, 5 जिसे क्रय न किया जा सके, जिसका मोल नहीं हो, 6 दांव, खेल, 7 कसौटी, परखने का पत्थर, 8 जिसे हिलाया न जा सके

(21)

झूठा नहीं वसन,[1] गुरू गम्य पहना तन पर,
सहज परमेश्वर की, लागी प्रेम लगन,
मुक्त हुए जंजाल[2] से, छोड़ा सारा धन,
भगा भ्रम पूरन, 'सामी' घर से ली विदा।

(22)

वह स्नेही निर्मल, वह अवधूत[3] अग्रणीय,
करता जो गुरू ज्ञान से, परूषार्थ प्रबल,
सुखी हुआ 'सामी' कहे, पाकर पद अचल,
जल में ज्यों कमल, त्यों रहे विदेही[4] देह में।

(23)

लग्न की लंगोटी, पहने जो प्रतीति[5] से,
मारे भ्रम कुते को, 'सामी' सम सोंटी,[6]
गाता फिरे गांव में, जंगला, झिंझोटी,[7]
रखता वह लोटी,[8] अनुभव के आनन्द की।

(24)

स्नेहियों का नगर, सतगुरू बताओ कौन सा?
भरा भाव भक्ति से, शीतल सहज सुभर,[9]
पूछ देखो उन्हीं से, जो गहरे गये अंदर,
सदैव ख़ुश वे नर,'सामी' रहें स्वभाव में।

---

1 वस्त्र, 2 प्रपच, झझट, 3 सन्यासी, 4 शरीर रहित, 5 विश्वास, 6. मोटी डडी, 7 दो रागो के नाम, 8 छोटा लोटा, 9 उज्जवल, शुभ्र, पवित्र

(25)

कल्पित खाई[1] प्रबल, गिरा हुआ मिले नहीं,
कई गिर गये इसमें, शूर वीर सबल,
लांघ पहुंचा लक्ष्य पर, कोई स्नेही निर्मल,
आठों प्रहर अचल, 'सामी' रहे स्वभाव में।

(26)

चारों ओर भगवन, स्नेही देखे अपना,
रक्त बहाये आंखों से, बुलाये नम्र बन,
तेरे विरह ने भस्म किया, नस नस में है जलन,
तुरन्त मिल साजन, 'सामी' भुला न पतित को।

(27)

स्नेही निरभिमान, करोड़ों में एक हो,
जिसने मिल कर प्रभु संग, किया अमृत पान,
सुखी हुआ 'सामी' कहे, पाकर पद निरवान,
समझे सब जहान, है इक परमेश्वर का।

(28)

स्नेही निरबन्धन,[2] किसी को बांधे नहीं,
पावे जो प्रतीति से, गहरा ज्ञान अंजन,[3]
'सामी' देखे सर्वगत,[4] परमेश्वर पूरन,
करे अभेद भजन, रोम रोम[6] को लाल कर।

---

1 खादक, नाला, 2 बंधान मुक्त, 3 काजल, 4 सर्वव्यापी
5 सारा शरीर, तन मन

(29)

स्नेही सब निहाल,[1] रहते अपने हाल में,
जिन्हें बताता सतगुरू, 'सामी' रहन रसाल,
बैठ ज्ञान के तख़्त[2] पर, काटें कल्पित काल,
जहां करें ख़याल,[3] वहां साजन सम्मुख हो।

(30)

प्रभु ने किया ज़ख़्म,[4] भाला धंसा कर नेह का,
खाकर उसने ख़तम[5] किये, हाड़ मांस रक्त चर्म,
कहीं पर दिखता नहीं, प्रभु बिन मरहम,
'सामी' आवे शरम,[6] केवल इसी बात की।

(31)

स्नेही नरभिमान, करे न कोई कल्पना,
देखा जिसने आंखों से, पलट अनुभवी भान,[7]
है जिसके आधार पर, शून्य समाधि उत्थान,
सर्वदा निरवान, 'सामी' रहे स्वभाव में।

(32)

गहरी गत गोपाल, बीन बजाये मद भरी,
साज़[8] बजे सुर सार के, सभी राग रसाल,
सुन कर दोनों कान से, स्नेही हुए निहाल,
सदैव लाल गुलाल, 'सामी' रहे स्वभाव में।

---

1 सतुष्ट, 2 सिंहासन, 3 विचार, 4 घाव, 5 समाप्त 6 शर्म, लज्जा, 7 चमक, प्रकाश, 8 वाद्य यंत्र

मुहब्बत

(1)

मुहब्बती मस्तान, प्रसन्न रहते स्वयं में,
बिना ललक प्रभु की, रखें न कोई ज्ञान,
आठों प्रहर गगन में, जपते बिना ज़बान,
जगत कहे नादान, 'सामी' साक्षी सब के।

(2)

वेदान्ती सब वाक,[1] कहते अनन्त ज्ञान के,
समझ कर 'सामी' कहे, हुए मुहब्बती मुश्ताक़,[2]
चढ़ते चेतन नभ पर, कर ख़्याल[3] सब ख़ाक,[4]
मगन रहते पाक,[5] मन मन्दिर में झांक कर।

(3)

मुहब्बत मिठाई, मिली मूल्य अपार से,
जा कर पूछो उन से, जिन्होंने खाई,
चढ़े ज्ञान के नभ पर, वाणी गंवाई,
'सामी' सदा ही, सम्मुख देखें प्रभु को।

(4)

मुहब्बत मिठाई, खाकर देखी जिसने,
मिटी उसके मन से, बातें पराई,
उसने मन में झांक कर, लगन लगाई,
'सामी' सदा ही, लेता सुख स्वरूप का।

---

1 वाक्य, 2 इच्छुक, 3 विचार, ध्यान, 4 भस्म, राख, 5 पवित्र

(5)

मुहब्बती मेहमान, सदा समझते स्वयं को,
देखें काल कंधों पर, निश दिन साथ सुजान,
मन में तिल भर न रखें, ममत्व अभिमान,
पाकर पद निरवान,[1] शीतल हुए 'सामी' कहे।

(6)

मुहब्बती मुल्क,[2] 'सामी' बना दे अपना,
रखता गुरू ज्ञान से, संशय रहित सिदिक़,[3]
प्रभु देखता इक, चढ़ कर नूर[4] महल पर।

(7)

मुहब्बती मुल्क, जीते सारा युक्ति से,
द्वैत निकाले मन से, रखे सम सिदिक़,
अन्दर बाहर इक, 'सामी' देखे प्रभु को।

(8)

मुहब्बती व्याकुल, कभी भी होता नहीं,
अन्तर्मुख वह यत्न से, कर दे मन चपल,[5]
शंका से निश्चल,[6] 'सामी' रहता सर्वदा।

(9)

चले जो हठ छोड़, मुहब्बती मर्म[7] में,
वाद,[8] बड़ाई, लोभ से, मन को देता मोड़,
'सामी' ललक बेजोड़, बताये न किसी को।

---

1 निर्वाण, मुक्ति, 2 देश, 3 विश्वास, 4 प्रकाश, ज्योति, आभा, 5 चचल, 6 अचल, 7 रहस्य, भेद, सार, तत्व, 8 विवाद

(10)

सज्जन मुहब्बती, मस्त रहे भव सिंधु में,
चढ़ी जिसके चित पर, मुहब्बत की मस्ती,
सूक्ष्म हुआ 'सामी' कहे, मार मन हस्ती,[1]
निर्जन और बस्ती, में रहे अलेप नभ ज्यों।

(11)

मुहब्बती मस्तान, घूरते रहते घर में,
जिनको देता हर्ष से, भक्ति है भगवान,
'सामी' कहे जगत के, भ्रम का करें निदान,[2]
बनें निपट[3] नादान, चलते विधि निषेध बिन।

(12)

मुहब्बती मलंग, करोड़ों में एक हो,
लगा पट भ्रम को, करता जो सत्संग,
अन्दर बाहर आत्मा, देखे ऐन[4] अभंग,[5]
नस नस लगा रंग, 'सामी' लाल गुलाल हुआ।

(13)

कृपा कर मुहब्बत, सतगुरू ने की शिष्य से,
लगा लाल गुलाल हुआ, कृपा की राहत,
सब घट देखे प्रभु को, बिना किसी हुज्जत,[6]
एकत्व और बहुत्व, निकट समझे नाक से।

---

1 हाथी, 2 रोग की पहचान, 3 निरा, केवल, एकमात्र, 4 ठीक, सटीक,
5 अखंड, 6 व्यर्थ का तर्क,

(14)

मुहब्बती मगन, रहता अपने हाल में,
पावे जो प्रतीति से, गहरा ज्ञान अंजन,[1]
'सामी' देखे सर्वगत, परमेश्वर पूरन,
मिटा सब मनन, मुख से बोले कुछ नहीं।

(15)

मुहब्बती मलंग,[2] मिले रहते प्रभु से,
जलकर ज्यों लौ रूप हो, दीपक में पतंग,
समा जाये 'सामी' कहे, जल में ज्यों तरंग,
सदा अलेप असंग, रहें विदेही देह में।

(16)

मुहब्बती मसला,[3] गिनता नहीं अंदर में,
चढ़ कर नूर[4] महल पर, तसल्ली[5] करे चेला,
छोड़ ग़ैर[6] गिला,[7] जा मिलता एकत्व में।

(17)

मुहब्बती भरपूर, रहता अपने हाल में,
सतगुरू की कृपा से, करे चित को चूर,
कहे न दुख क्रूर,[8] जिस कारण योगी बना।

(18)

मुहब्बती मेला,[9] करे भ्रम बिन प्रभु से,
रहे अपने हाल में, सहज ही सुहेला,[10]
समय और वेला, 'सामी' देखे वह नहीं।

---

1 काजल,2 एक प्रकार के मुसलमान साधु, मस्त,3 समस्या, 4 ज्योति, प्रकाश, कांति, 5 आश्वस्त हो, 6 अन्य, 7 निन्दा, 8 निर्दयी, 9 मिलन, 10 सुखदाई

(19)

मुहब्बती माणिक, खोजे अपने घर में,
अन्दर बाहर आत्मा, चहुं दिश देखे इक,
सहज हुआ 'सामी' कहे, संशय को पटक,
लग्न से लगा ललक, पल पल पीता प्रेम रस।

(20)

मीठा लगे ईश्वर, मुहब्बती को मन में,
समझे इस को औषधि, कष्टों की चतुर,
गहरे जल में तर,[1] पहुंचा लक्ष्य अगम्य पर।

(21)

मुहब्बती मस्तान, रहते अपने हाल में,
बिना प्रभु ललक के, दूजा रखें न ज्ञान,
ज्यों बालक नादान, 'सामी' रहे संसार में।

(22)

उसने सब दिया, जिसने मन दिया प्रभु को,
अविद्या भ्रम अन्दर का, सभी निकाल लिया,
जल ने जल किया, ज्यों खिलौना शक्कर का।

(23)

मुहब्बती मगन, रहते अपने हाल में,
'सामी' नहीं समझते, ललक बिना साधन,
करते हैं विश्वास से, वश में मन पवन,
समझें सब स्वप्न, दीप देखते देह में।

---

1 तैर कर,

(24)

मुहब्बती लाचार, कभी न होता जगत् में,
रखे न कोई कामना, सिवा[1] प्रभु दीदार,
'सामी' वह अर्पण करे, प्रभु को सब भार,
शब्द न इक बेकार, भक्त निकाले भाव बिन।

(25)

मुहब्बती परमान,[2] खोज लेते पूरबी,
जहां 'तू' 'मैं' है नहीं, और न दान स्नान,
न है जीव न ईश कोई, और न ज्ञान ध्यान,
सब में एक समान, 'सामी' बसे परमात्मा।

(26)

मुहब्बती का मीत, पल भर दूर न होत है,
लक्ष्य दिखावे सतगुरू,जिसको परम पुनीत,[3]
लगा पट भ्रम को, शीतल हुआ अजीत,
गृहस्थ में अतीत,[4] सदा रहे 'सामी' कहे।

(27)

भागा झूठ कपट, मुहब्बती के मन से,
हटा देता लगन से, गहरा अविद्या पट,
जिसने देखा स्वयं में, परमेश्वर प्रकट,
तोड़ ममत्व मट,[5] 'सामी' मिला स्वरूप से।

---

1 के अलावा, 2 प्रमाण, 3 पवित्र, 4 पृथक, अलग, 5 मटका

(28)

मुहब्बती का मन, शीतल रहे स्वभाव में,
'सामी' करे स्वरूप का, बिना भेद भजन,
व्यर्थ वाणी वाच्य को, दुखी न देता कन,[1]
निकाल कर अनबन,[2] अनुभवी देखे प्रभु को।

(29)

बहा लोभ लहर, करोड़ों को है गई,
'सामी' बिरला डांड[3] से, मोड़े नाव चतुर,
बंधन सभी द्वैत के, तोड़ बने स्थिर,
मन से झगड़ा कर, पहुंचे पास प्रभु के।

(30)

फंसते कई चतुर, अविद्या के भंवर में,
'सामी' जिसमें बूंद भी, आती नहीं नज़र,
चढ़ता चेतन नभ पर, प्रेमी जन प्रखर,[4]
जिसकी गांठ सतगुर, खोले साधु संग में।

(31)

कह कर झूठे कथन, 'सामी' सभी बह गये,
रखते ललक समझ बिन, पढ़कर पन्ने सज्जन,
मक्खन पावे मन को, मथकर बिरला जन,
करता है दर्शन, अपना खाता बन्द कर।

---

1 कान, 2 झगड़ा, विरोध, 3 पतवार, नाव खेने का बल्ला, 4 तीक्षण, पैना, खरा,

(32)

बिरला ही मथकर, मक्खन पावे मन से,
बिरला मथनी प्रेम की, पकड़े बन स्थिर,
सिर पर बांधे सत्य की, युक्ति से चूनर,[1]
मुख को मोड़ चतुर, खुद को देखे आंखें से।

(33)

मुहब्बती सब मत, गुम करता है लक्ष्य में,
जिसमें 'तू' मैं' है नहीं, और न पांचों तत,[2]
हद से परे अनन्त, पावे पद 'बाभन'[3] कहे।

(34)

सत्पुरूष चेतन, बात बताते सत्य की,
'बाभन; है सुनता वही, जिसका प्रेमी मन,
तोड़ सभी अटकन, द्वारे पहुंचे प्रभु के।

(35)

मुहब्बत का महल, जिसने खोजा श्रम से,
लगी उसको प्रेम की, लोभ रहित सांकल,
देखे नित अचल, 'सामी' परमेश्वर को।

(36)

बिरला कहलाये, प्रेमी अतिथि जगत् में,
जो मिल साधु संग से, ममत्व मिटाये,
सुधि भुलाकर अपनी, लगन लगाये,
मन में घुस जाये, जुड़ा रहे जगदीश से।

---

1 चुनरी, 2 तत्व, 3 ब्रह्मण, कवि का उपनाम

(37)

शुद्धता बिन सुख, किसी को मिलता नहीं,
समझे कोई 'सामी' कहे, मुहब्बती पारख,[1]
काटा जिसने भ्रम का, बुद्धिमता से दुख,
शुद्धता सम्मुख, रखे सार स्वरूप के।

(38)

ज्ञान का लक्ष्य अपरोक्ष,[2] सन्त दिलाते सब को,
समझे कोई 'सामी' कहे, प्रेमी जन मुमुक्ष,[3]
जिसने देखा स्वयं को, नित निर्मल निरद्वेष,[4]
सत्य और संतोष, मुख पर रख मस्ती करे।

(39)

शुद्ध करे ज्यों अन्न, कचरा सूप निकाल कर,
वैसे तत्व कुरान का, समझे प्रेमी जन,
रखे न चिन्ता मन में, किसी से न जलन,
प्रभु संग चेतन, 'सामी' हज करता वही।

(40)

जैसे शूर सज्जन, चिन्ता करे न जान की,
वैसे मर कर प्रभु से, मिले मुहब्बती जन,
जिसको देता सतगुरू, सच्ची प्रीति लगन,
पाकर परम आसन्न,'सामी' लेता सेज सुख।

---

1 पारखी, अन्वेषक, 2 प्रत्यक्ष, समक्ष, 3 मुक्ति पाने का इच्छुक, 4 शत्रुता रहित, बैर रहित, ईर्ष्या रहित

(41)

दीपक देख पतंग, जल कर ज्योति रूप हुए,
समाये 'सामी' कहे, जल में ज्यों तरंग,
वैसे मिलता ईश से, मुहब्बती मलंग,
सदा अलेप असंग, रहे विदेही देह में।

(42)

चोट्टे[1] बैठ चरस, मिलकर पीते मुहब्बती,
तन मन धन देकर रखें,मन में प्रीति सरस,[2]
मुक्त होकर नाना से, देखें नभ कलस,[3]
दस दिश द्विय दरस, 'सामी' देखें स्वरूप का।

(43)

मुहब्बती मिलाप, करते हैं जो स्वयं से,
पियें पिलावें प्रेम का, प्याला सदा अनाप,[4]
नस नस लाल गुलाल हुई, जपें अजपा जाप,
मिटा कर संताप, 'सामी' लेते शांति सुख।

(44)

मुहब्बती मधुर, वाणी कहें असीम की,
लेता जो विश्वास से, गुरू ज्ञान अमर,
देखे वह आकाश ज्यों, तन में पद स्थिर,
बुला भला चक्कर, 'सामी' छोड़कर लीन हुआ।

---

1 चोर, 2 रसीली, मीठी, 3 कलश, 4 जिसकी नाप न हो सके

अनुराग

(1)

अनुराग अक़ल,[1] साथ कभी रहते नहीं,
ज्यों शून्य आकाश से, मिला रहता जल,
जैसे अग्नि छिपा रखे, मेह भरा बादल,
'सामी' चल अचल, दोनों रूप पवन के।

(2)

अनुराग पीछे आया, बुद्धि घुसी स्वयं ही,
सूरज संग लगी रहे, ज्यों उसकी छाया,
मिला अनुराग, बुद्धि से, 'सामी' समाया,
मोरचा[2] खोल भाया,[3] बैठा अपने मन से।

(3)

अनुराग ईश की ज़ात,[4] 'सामी' निःशंक एक है,
जाकर पूछो उनसे, जो रहते रत तात,[5]
लगे रहते लक्ष्य में, देखें दिन न रात,
मांगें दर्शन दात,[6] आठों प्रहर प्रभु से।

(4)

जिन को लगी लगन, अनुरागी वे प्रभु के,
बात न करते दूसरी, सिवाय प्रभु भजन,
प्रभु इच्छा से जो मिले, वही खायें भोजन,
'सामी' रहें मगन, दीवाने दरबार में।

---

1 बुद्धि, 2 युद्ध करना, 3 प्रिय, प्रियवर, 4 जाति, 5 पिता, पूज्य व्यक्ति, 6 दान,

(5)

ऐसी हवा चली, रहस्य मयी अनुराग की,
उसने अपनी गति से, 'तू' 'मैं' उड़ा दी,
बरसा मेह कृपा का, चैतन्यता खुली,
मिटी खलबली, शीतल हुआ 'सामी' कहे।

(6)

ज्यों लकड़ी घुन खाये, त्यों अनुराग मन को,
'सामी' ले जा शून्य में, लगन लगवाये,
जैसे गागर नमक की, सिंधु में समाये,
सागर सुखाये, अटल ज्योति प्रभु की।

(7)

फांसी करें सहन, वे ही अनुरागी सच्चे,
अपनी चमड़ी स्वयं ही, दें उधेड़ हरिजन,
जीवन और मरण का, करते नहीं मनन,[1]
रहते सदा मगन, 'सामी' तत्व स्वरूप में।

(8)

जो आहत दे कन,[2] सुने बात अनुराग की,
'सामी' रिमझिम मेह वह, देख हुआ प्रसन्न,
दस दिश करता प्रभु का, द्वैत बिना दर्शन,
मिटा कर मनन, चढ़ बैठा चहुंडोल पर।

---

1 चिंतन, 2 कान

(9)

अनुरागी अनेक, रूप धरे नित नट ज्यों,
मन में परमेश्वर की, लिये रहता टेक,[1]
बरते सहित विवेक, साक्षी बन 'सामी' कहे।

(10)

छोड़े सब कल्पित, अनुरागी चढ़ नभ पर,
किसी से रखता नहीं, 'सामी' मोह ममत्व,
परख पांचों तत,[2] स्थित हुआ आकाश ज्यों।

(11)

विचित्र सिंहासन, रहता सब के तन में,
'सामी' उस पर प्रभु जी, बैठ करे शासन,
पलट देखे मन में, कोई झांक सज्जन,
करता है दर्शन, फ़िक्र[3] मिटा कर मन की।

(12)

अनुरागी धरना, देते द्वारे प्रभु के,
आगे पीछे समझते, 'सामी' है मरना,
काया का करना, मिटा बैठे मन से।

(13)

छोड़ दे पड़ोसी, अनुरागी चढ़ नभ पर,
कभी ढूंढता है नहीं, पंडित और जोषी,[4]
मुख रख देता मन में, ले क्षमा ख़ामोशी,
बनता नहीं दोषी, 'सामी' सुख दुख सब सहे।

---

1 सहारा, 2 तत्व, 3 चिंता, 4 ज्योतिषी

(14)

असीम बाण लगा, जिसे अनुराग अगम्य का,
मिलकर परमेश्वर से, उसका भ्रम भगा,
गिनता नहीं अंदर में, परिच्छिन्न[1] पीछा अगा,
सब कुछ बेच नंगा, 'सामी' लेता सेज सुख।

(15)

विचित्र प्रेम घूंटी,[2] पीकर मन प्रसन्न हुआ,
अविद्या तमस न रही, उषा किरण फूटी,[3]
'सामी' देख स्वरूप को, ज्ञान सम्पति लूटी,
स्वतः सिद्ध छूटी, बाधाएं सब द्वैत की।

(16)

मूर्ख नहीं मज़ाक,[4] यह अनुराग प्रभु से,
पूछ देखो उससे, जिस घर फांसी पाक,[5]
खाल खींच दे अपनी, भाग्यवान तड़ाक,[6]
'सामी' होता ख़ाक,[7] तो भी जपता प्रभु को।

(17)

बिना विशेष ख़रीद, हो अनुराग न प्रभु से,
यूं कहते हैं औलिया, 'सामी' सब शहीद,
मर कर लें जो गुरू से, दर्शन दृष्टि मुरीद,[8]
करें अभेदी[9] ईद, मिल कर नित ईश्वर से।

---

1 सीमित, 2 बच्चों के पीने की दवा, 3 प्रकट हुई, 4 हंसी, परिहास, 5 पवित्र, 6 तुरन्त, झट, 7 राख, 8 चेले, 9 भेद रहित रहने वाले, संशय रहित रहने वाले

अनुरागी

(1)

अनुरागी की राह,[1] अलग सब संसार से,
चले हठ को त्याग कर, बिना चिन्ता चाह,
किसी की करता नहीं, प्रभु सिवा परवाह,[2]
सदैव करे सलाह,[3] 'सामी' परमेश्वर की।

(2)

निथार कर[4] नयन, खोज लेता पलकों में,
नाना भांति छोड़ कर, सम्मुख लखे भगवन,
प्रभु के मुख से घड़ी, दूर न होता सज्जन,
सदा रहे निमग्न, 'सामी' सार स्वरूप में।

(3)

जिस को लगे तीर, नोकदार अनुराग के,
देखन हेतु प्रभु के, आहत फिरे फ़कीर,[5]
काट देता भ्रम की, जग कर वह ज़ंजीर,
'सामी' धीर गम्भीर, सम्मुख देखे प्रभु को।

(4)

धनवानों का दम, छिपा रहे न गांव में,
जिन्होंने की जाग कर, बलाएं भस्म,
रखें न तिल मात्र कभी, किसी का भी ग़म[6],
'सामी' सब आलम[7], मरने पर नमन करें।

---

1 मार्ग, 2 चिन्ता, 3 मंत्रणा, 4 कचरे को तल में बिठाना, नयन धोना, 5 साधु, योगी, 6 दुख, शोक, 7 संसार, जगत्

(5)

सुनकर असीम बीन, अनुरागी अलग हुए,
प्रभु का मुख देखकर, कुछ भी कहें न दीन,
रहें अपने हाल में, 'सामी' सदा लवलीन,
जैसे जल से मीन, पल भर दूर न हो कभी।

(6)

अनुरागी ज्ञान मग,[1] 'सामी' ढूंढें घर में,
उसमें वे तदरूप[2] बन, ख़ुश हो रखते पग,
पहुंचे पूर्ण पद में, 'सामी' कहे सर्वग,[3]
जग कर देखें जग, 'सामी' सब स्वप्न ज्यों।

(7)

अनुरागी उत्तम, पावें संधि समझ की,
अहं[4] निकालें मन से, 'सामी' बन सूक्ष्म,
चढ़ बैठे चहुंडोल पर, मिटाकर सब ग़म,
प्रभु बिना दम, ख़ाली लेते हैं नहीं।

(8)

दे दिल की दौलत, अनुरागी मिले प्रभु से,
लगा लगन नयनों से, नित लेते लज्ज़त,[5]
समझे कोई 'सामी' कहे, ज्ञान का यह संकेत,
मिटा कर ममत्व, चढ़ बैठे चहुंडोल पर।

---

1 मार्ग, 2 उसी का रूप, 3 सब जगह जाने वाले, सर्वव्यापी, 4 अहंकार, 5 स्वाद

(9)

अनुरागी ग़रक,[1] रहते अपने हाल में,
निकालते हैं जाग कर, 'सामी' मन के शक,
इक पट से आशिक,[2] ढांक देते दस द्वारों को।

(10)

प्रेमी नहीं हटे, शूर ज्यों संग्राम से,
आंखें आंखों से मिला, मारे वह चोटें,
'सामी' लूट लूटे, युक्ति से सुख सार की।

(11)

प्रेम का नुक्ता,[3] समझे जो 'सामी' कहे,
जीते जी जग का करे, सब हिसाब चुकता,
कर के मन मुक्ता,[4] सोता सुषुप्ति सेज पर।

(12)

अनुरागी सुजान, 'सामी' सिसक पुकारता,
तेरे प्रेम ने दूर किया, लगा अनन्त बान,[5]
आकर मिलो मृत से, दीनों के भगवान,
तुझ बिन कोई भान,[6] रहा नहीं तिल मात्र भी।

(13)

अनुरागी गवाह, नहीं बनाते किसी को,
सिर हथेली पर रखें, चलें उलटी राह,
सम रखते हैं श्वास को, रख फांसी की चाह,
'सामी' अजीब[7] अथाह[8], पंद पाते हैं प्रेम से।

---

1 निमग्न, डूबा हुआ, 2 अनुरागी, 3 बिंदी, 4 मुक्त, 5 बाण, 6 चमक, ज्ञान, 7 विचित्र, 8 जिसका अन्त न पाया जा सके

(14)

अनुरागी सवारी, करता है संशय बिना,
'सामी' वह गिनता नहीं, पुरूष और नारी,
देखे सब में प्रभु की, मूर्ति मनुहारी,
पाकर पद भारी, मस्त रहे संसार में।

(15)

हद बेहद भरपूर, तुरन्त दिखाते प्रभुजी,
बिरला अनुरागी लखे,[1] प्रत्यक्ष हुजूर,[2]
जिसको देवे सतगुरू, 'सामी' निर्मल नूर,[3]
हटा भ्रम को दूर, स्थित हो आकाश ज्यों।

(16)

'सामी' विश्व बहे, अविद्या के भंवर में,
पूर्ण समझ कर पिया को, प्रेमी अचल रहे,
उठा खड्ग[4] क्षमा की, पांचों दूत दहे,[5]
सुख दुख सब सहे, 'सामी' समझ प्रभु इच्छा।

(17)

छोड़ जगत् जंजाल,[6] अनुरागी नभ पर चढ़े,
होली खेले पिया से, लगा ज्ञान गुलाल,
भ्रम रहित प्रेमी सुने, 'सामी' शब्द रसाल,[7]
नहीं बताये हाल, अदृष्य आश्चर्य का।

---

1 देखे, 2 सम्मान सूचक शबद, प्रभुजी, 3 प्रकाश, 4 तलवार, 5 जलाये, धंसाये, 6 प्रपंच, झझट, बखेड़ा, 7 रस भरा

(18)

छोड़ लोक लज्जा, अनुरागी नभ पर चढ़े,
माने परमेश्वर की, 'सामी' सब रज़ा,[1]
सन्नाटे[2] में गाढ़ कर, बैठा ध्यान ध्वजा,[3]
मिल कर करे मज़ा, स्वतः सिद्ध स्वरूप से।

(19)

सहन करे प्यारी, जो भी कसौटी कुशल की,
'सामी' उसको घर की, सुधि हुई सारी,
लांघ पहुंचा लक्ष्य पर, भव सागर भारी,
समता सचियारी,[4] मुख पर रख मस्ती करे।

(20)

चढ़ा नशा प्रबल, जिस को प्रेम अभेद का,
मिटा उसके मन से,'सामी' ख़्याल[5] खलल,[6]
स्वतः सिद्ध स्वरूप से, दूर न होता पल,
आठों प्रहर अचल, रहे अपने हाल में।

(21)

सागर से न्यारी,[7] नहीं लहर सागर की,
समझे कोई 'सामी' कहे, उत्तम अधिकारी,
जिसको है अनुराग की, चढ़ी ख़ुमारी,[1]
परिच्छन्न[9] पोट भारी, फेंक समाया सम में।

इच्छा,2 निर्जनता, नीवरता, 3 पताका, झंडा, 4 सच्ची, 5 विचार,
रूकावट, 7 प्रथक, अलग, 8 हलका नशा, 9 ढकी हुई, छिपी हुई

(22)

जीवित योग बैराग, तप तीर्थ करे तन से,
स्वतः सिद्ध स्वरूप का, मृतक खोजें मार्ग,
असीम अविद्या नींद से, 'सामी' गये जो जाग,
भ्रम रहित वे फाग,खेलें नित ख़्याल[1] बिन।

(23)

दाना[2] दीवाना, करोड़ों है भटकते,
'सामी' मिले स्वरूप से,कोई आलसी सयाना,[3]
मिटा बैठा मन से, निरपेक्ष[4] बन नाना,
ख़ुशी से परवाना,[5] जैसे जलता ज्योति में।

(24)

दूत लेकर ख़त,[6] आया मन मोहन का,
जिसमें लिखा प्रेम से, पगली छोड़ ममत्व,
हर्ष से अपने आपको, 'सामी' देख तुरंत,[7]
क्यों बहाती रक्त, आंखें से विनीत बन।

(25)

मृतकों से मग,[8] जाकर पूछो मरों का,
जीते जी अभिमान से, अनुरागी अलग,
समझ लेते साधु संग, 'सामी' प्रभु है ठग,
जिसने सारा जग, ठगा है ठग की तरह।

---

1 ध्यान, विचार, स्मरण, 2 बुद्धिमान, 3 चतुर, 4 तटस्थ, 5 पतग, 6 पत्र
7 चटपट, 8 रास्ता

(26)

ज्यों घुन लकड़ी खाये, त्यों प्रेम लगा मन को,
पोला कर दिया पिंजड़ा, सब अंग सुखाये,
नयन सहारे के लिये, हैं टकटकी लगाये,
प्रभु मिलवाये, तुरंत गुरू 'सामी' कहे।

(27)

आंखें पहुंची पार, आई जो कुछ देखकर,
खड़ा मिला परमेश्वर, उनको बीच बाज़ार,
'सामी' शुद्धता भरी, करते हर कोई कार,[1]
द्वैत को आर व पार, नहीं देखते ज्ञान बिन।

(28)

अनन्य[2] उपासक, दूर न होते प्रभु से,
आनन्द लेते दरस[3] का,लग्न से कसें लंक,[4]
पियें पिलावें प्रेम का, प्याला भर अथक,
सदा पाक[5] परिपक्व,[6]'सामी' रहें स्वभाव में।

(29)

रातों दिन तके,[7] प्रेमी मुख ईश्वर का,
रहता अखण्ड ध्यान में, 'सामी' नहीं थके,
भान भुलाकर अपना, नस नस रस चखे,[8]
बिना मुख बके, चढ़ अदृष्य गगन पर।

---

1 कार्य, 2 एक निष्ठ, 3 दर्शन, 4 कमर, 5 पवित्र, 6 निपुण, कुशल, 7 ताके, घूर कर देखे, 8 चाखे

(30)

प्रेम नहीं आसान, 'सामी' कहा सतगुरू ने,
पूछो उनसे हाल जो, सब करते कुर्बान,[1]
रखें न तिल मात्र कभी, अन्दर में अभिमान,
चाहे बके जहान, तो भी मस्त रहें जग में।

(31)

अनुरागी अकाली, करे न परवाह[2] किसी की,
मन में वह रख देता है, क्षमा ख़ुशहाली,[3]
बरतता है विधि से,'सामी' सुखाली,[4]
मूर्ति मतवाली,[5] पूर्ण देखे स्पष्टतया।

(32)

नयनों में नयन, उनमें नयन ज्ञान के,
उनमें नयन युक्ति से, रखें अनुरागी जन,
करोड़ों में एक ही, देख कराये दर्शन,
'सामी' बन चेतन, पांच सखियां वश में रखे।

(33)

जो प्रभु की ज़ात, वही ज़ात अनुरागी की,
मिटती उसके मन से, सभी पराई बात,
करे बसेरा नित वहां, जहां दिन न रात,
पाकर दर्शन दात,[6] समर्थ हुआ'सामी' कहे।

---

1 न्योच्छावर, 2 चिन्ता, 3 सम्पन्नता, 4 सुखदाई, 5 मस्त, 6 दान

(34)

स्वर्ग और नरक, अनुरागी नहीं जानते,
रहते हैं संशय बिना, गगन में ग़रक,[1]
अन्दर बाहर इक, 'सामी' देखें प्रभु को।

(35)

कर न व्यर्थ बक बक,'सामी तू एकांत[2] की,
अनुरागी ईश्वर पर, सदैव रखते हक,
आठों प्रहर ग़रक, रहते अपने हाल में।

(36)

प्रभु का दीदार, किया जिसने भ्रम बिन,
निकला उसके मन से, काम क्रोध अहंकार,
सर्वदा फुलवार,[3] 'सामी' रहे स्वभाव में।

(37)

पंडित ज्योतिषी, व्यस्त रहते गणित में,
अनुरागी चढ़ नभ पर, त्यागे बेहोशी,
मुख रखता है मन में, क्षमा ख़ामोशी,
सुख दुख सब जोषी,[4] सहन करे 'सामी' कहे।

(38)

प्रभु बुलाये, तू परवाह करे शीष की,
रहस्यमयी आग में, जान न जलाये,
कैसे बनाये, प्रभु तुझको अपना बता?

1 निमग्न, डूबा, 2 नीरवता, 3 प्रसन्न, 4 ब्रह्मण ज्योतिषी

(39)

छोड़ लोक लज्जा, रख इच्छा अनुराग की,
सम सूक्ष्म आकाश में, गढ़ा ध्यान ध्वजा,
'सामी' परमेश्वर की, मान सब रज़ा,[1]
उसके बाद मज़ा, तू प्रभु के साथ कर।

(40)

आंखें में आंखें, उनमें आंखें ज्ञान की,
जोड़ युक्ति अनूप[2] से, प्रभु ने है रखी,
करोड़ों में एक ने, दिखाकर देखी,
'सामी' जो सखी, पांचों को वश में रखे।

(41)

अनुरागी अक्षर, पढ़कर के परिपक्व हुआ,
'सामी' करता साफ़ सब, द्वैत का दफ़्तर,
खोजे अपने आप में, बेगमपुर नगर,
कोई दिशा चतुर, नहीं देखता गगन में।

(42)

अनुरागी छैला,[3] परवाह करे न किसी की,
लांघ पहुंचा लक्ष्य पर, सागर सुहेला,[4]
बाहर 'तू' 'मैं' में रहे, अन्दर अकेला,
गुरू औरं चेला, 'सामी' बनता सत्य का।

---

1 इच्छा, 2 उपमा रहित, 3 शौकीन, सजीला, 4 सुखदाई

(43)

विचित्र प्रेम घूंटी, पीते ही मन खुश हुआ,
अविद्या सब अंदर की, क्षण भर में छूटी,
'सामी' मिली छुट्टी, जन्म मरण के दुख से।

(44)

पाया जिसने मर्म,[1] हर्षित हो प्रतीति से,
खाना खावे प्रभु का, प्रेमी करे न ग़म,[2]
प्रभु बिना दम, 'सामी' लेता है नहीं।

(45)

जिसने प्रेम रखा, 'सामी' वह काते नहीं,
एकत्व [3] में देखता, तोड़ चाह चरखा,
चारों ओर देखा, उसने प्रकाश प्रभु का।

(46)

प्रेमी आंखें चार, करते ललक समझ की,
देखते वे प्रभु को, खड़ा बीच बाज़ार,
भेद भ्रम बिन समझते, पूर्ण आर व पार,
'बाभन' बारम्बार, पीते प्याला प्रेम का।

(47)

'सामी' कहे स्वाद, जिसको आया सहज का,
किसी से करता नहीं, बातें भरी विषाद,[4]
हार जीत सुख दुख से, प्रेमी रहे आज़ाद,
करके मुद्दई[5] माद,[6] मिले स्वतः स्वरूप से।

---

1 सार, भेद, 2 चिन्ता, 3 एक होने का भाव, 4 खेद, दुख, 5 दावादार
6 मद, नशा, हर्ष

(48)

चाह ने किया आजिज़[1], अंधे जीव जगत् के,
सकें उतार न लक्ष्य बिन, झूठा भ्रम कर्ज़,
अनुरागी चढ़ नभ पर, जलाये द्वैत बीज,
'सामी' सम सूरज, देखा जिसने आंखों से।

(49)

अनुरागी उदास, बहाये रक्त आंखों से,
पुकारे प्रभु को सिसक, सिसक ले श्वास,
उतारता है प्रेम कर, अपने तन का मांस,
जाने वही सुवास,[2] स्वतः ही 'सामी' कहे।

(50)

आकर अचानक, प्रेम जगाये जिसको,
उसे पहुंचाये पद में, लूटे दिखा लचक,
'सामी' हो न स्वरूप से, कभी दूर पलक[3]
बजे ढोल ढोलक, तो भी मस्त भव सिंधु में।

(51)

बात अति बारीक, है यह प्रेम अगम्य की,
करोड़ों में एक ही, जिज्ञासु[4] करे तहक़ीक़,[5]
सहज हुआ 'सामी' कहे, देखकर प्रतीक,[6]
नयनों से नज़दीक, स्वतः देखे प्रभु को।

---

1 विनीत, 2 सुगध, 3 पल क्षण, 4 इच्छुक, अन्वेषक 5 अनुसधान, जाच,
6, चिन्ह

(52)

अदृष्य आया, प्रेम रंगीला दूत बन,
एक थपाड़ा मार कर, आगे वह लाया,
मिलवा कर ईश्वर से, 'सामी' समाया,
अनगया[1] आया, जैसे कंगन हाथ में।

(53)

कर्मफल पाता, 'सामी' जग में हर कोई
अनुरागी चढ़ नभ पर, मोड़े मन रीता,
प्याला प्रेम अगम्य का, ख़ुश होकर पीता,
जग कर जग जीता, देख ज्ञान मय आत्मा।

(54)

घुन लकड़ी खाये, वैसा प्रेम है प्रभु का,
खींच कर वह युक्ति से, पकड़ ले जाये,
शोधन कर मन शुद्ध करे, खलबल[1] हटवाये,
पद पर पहुंचाये, समा जाये 'सामी' कहे।

(55)

करके एतबार, अनुरागी नभ पर चढ़ा,
काटता वह भ्रम का, रहस्यमय अहंकार,
ख़ुश हो परिच्छिन्नता[3] बिना,पीता प्याला सार,
अन्दर बाहर यार, स्वयं देखे 'सामी' कहे।

---

1 जो गया ही नहीं था, 2 हल्ला, हलचल, खलबली, 3 सीमितता

(56)

करके प्रेम अमुंड,[1] चढ़े अनुरागी नभ पर,
समर्थ बन दे फेंक वह,परिच्छिन्नता[2] का पिंड,[3]
भुलक्कड़ ज्यों नहीं भोगता, देह बन कर दंड,
सदा अभेद अखंड,[4]'सामी' रहे स्वभाव में।

(57)

प्रभु में ख़लक[5], और ख़लक में प्रभु बसे,
साक्ष्य दें 'सामी' कहे, अनुभवी आशिक,[6]
देखा जिसने नभ ज्यों, मन शोधन कर इक,
मिटा कर फ़रक,[7] आनंद लेता महंत बन।

(58)

शूर वीर बली, ख़ाली हाथ गये जग से,
जिनको अपने बल से, पूर्ण पृथ्वी मिली,
'सामी' बात समझते, हैं अनुरागी असली,
मिटा बुरी भली, मिले जा सार स्वरूप से।

(59)

पढ़ कर हुए परिपक्व, आशिक अक्षर प्रेम का,
रखे जिन्होंने रहन से, समेट सब वरक़,[8]
चढ़े चेतन नभ पर, लांघ ओट अटक,
पाकर युक्ति रसिक, समाये 'सामी' कहे।

---

1 सिर हीन, 2 सीमितता, 3 शरीर, 4 सम्पूर्ण, निरतर, खड रहित, 5 जनता, लोग, 6 अनुरागी, प्रेमी, 7 अन्तर, 8 पन्ने

(60)

पढ़ कर हुए परिपक्व, आशिक अक्षर प्रेम का,
'सामी' मिले स्वरूप से, समेट सब वरक़,
आनन्द लेते सम का, लगा लग्न ललक,
रखते याद अलख, दूजे को न पहचानते।

(61)

जिसने लगाया, सच्चा अनुराग प्रभु से,
जीते जी सब जगत् का, ममत्व मिटाया,
नहीं समझता अंदर में, अपना पराया,
'सामी' समाया, जल बुदबुदा जल में।

(62)

दाना[1] दीवाना, अनुरागी है ईश का,
मिटी जिसके मन से, नाना अनाना,[2]
सदा रहे 'सामी' कहे, अलसाया सयाना,
जैसे परवाना, जलकर ज्योति रूप हो।

(63)

अनुरागी अघोरी, पल पल पीता प्रेम रस,
जिसने अदृष्य सुनी, नस नस में लोरी,[3]
'सामी' पायी साधु संग, प्रेम की गगरी,
खेले सदा होरी, मिलकर वह प्रियतम से।

---

1 बुद्धिमान, 2 जिसमें नाना न हो अर्थात् एकत्व हो 3 बच्चों को सुलाने हेतु गाया जाने वाला मधुर गीत

(64)

अनुरागी छैला,[1] परवाह करे न किसी की,
प्रेम के मैदान में, मुक्त जन करे मेला,[2]
उसने देह अभिमान बिन, ज्ञान है उड़ेला,
गुरू और चेला, 'सामी' बनता सत्य का।

(65)

अनुरागी अजीब, मौज करे ममत्व बिना,
'सामी' सुरति को करे, जो गगन में ग़ायब,
सदैव देखे एक ही, प्रभु सच्चा साहब,
जिसका मन नायब, आज्ञा में हाज़िर रहे।

(66)

अनुरागी अजीब, वाणी कहे वेदान्त की,
चींटी और कुंजर[3] में,सम देखे साहब,
समझे कोई 'सामी'कहे, बन स्नेही नायब,[4]
लज्जा करे ग़ायब, जो सब ज्ञान गगन में।

(67)

नयनों की निगाह,[5] ने कई प्रेमी दिये मार,
चिल्लाते न कराहते, रहते बेपरवाह,[6]
आठों प्रहर प्रभु से, करते सहज सलाह,
छोड़ चिन्ता चाह, 'सामी' घुसते प्रवाह में।

---

1 शौकीन, सजीला, 2 मिलन, 3 हाथी, 4 सहायक, 5 दृष्टि, 6 निश्चिन्त

(68)

अनुरागी मलंग,[1] परवाह करे न किसी की,
पीता जो प्रतीति[2] से, 'सामी' समता भंग,[3]
सोता सुषुप्ति सेज पर, टंग पर रख कर टंग,[4]
निश दिन लगा रंग, मिल कर रहता प्रभु से।

(69)

अनुरागी असली, प्रभु पाये अपना,
शीतल हो 'सामी' कहे,मिटा भ्रम किल्ली,[5]
आनन्द लेता दरस का, खुश हो गली गली,
कभी न भ्रम छली,[6] भटकाता है उस को।

(70)

मृतकों का मग,[7] जाकर पूछो मरों से,
जीते जी अभिमान से, प्रेमी हुए अलग,
'सामी' परमेश्वर बिना, नहीं बढ़ाते पग,
चाहे बके जग, तो भी मस्त भव सिंधु में।

(71)

अनुरागी अनुभवी, वाणी कहे असीम की,
'सामी' नहीं समझता, वादी और विषयी,[8]
बिरले ने तज भ्रम को, मन से ग्रहण की,
लोक परलोक दो ही, लांघ पहुंचा लक्ष्य पर।

---

1 एक प्रकार के मुसलमान साधु, मस्त, 2 विश्वास, 3 भांग, 4 टांग, 5 कील, 6 कपटी, छलने वाला, 7 मार्ग, 8 विषय विकारों में लिप्त

सुहागिन

(1)

पार्वती परे, कभी न होती महेश से,
सीता सदैव राम के, मन में चरण धरे,
त्यों सुरति स्वरूप में, रख प्रेमी यत्न करे,
तब हो काम पूरे, जगत् में 'सामी' कहे।

(2)

प्रभु को भानी,[1] उसे सुहागिन मैं कहूं,
आंखों से आंखें लड़ा, देखे निमानी,[3]
पीहर[2] और ससुराल में, सहज समानी,[4]
बन कर महारानी, 'सामी' लेती सेज सुख।

(3)

कन्त[5] को रिझाये, उसे सुहागिन मैं कहूं,
रहे सदा वह आज्ञा में, सिर को झुकाये,
अहं[6] निकाले अदब से, लगन लगाये,
सहज वह पाये, 'सामी' सुख सुहाग का।

(4)

जो रिझाये कन्त, उसे सुहागिन मैं कहूं,
चढ़े सुषुप्ति[7] सेज पर, खेले नित वसन्त,[8]
पावे सुख बे अन्त, 'सामी' कहे कुछ नहीं।

---

1 पसद आई, भायी, 2 नैहर, मायका, 3 विनीत, नम्र, 4 समाई, 5 पति, 6 अभिमान, गर्व, 7 गहरी नीद 8 वसन्त ऋतु, फाग,

(5)

सुहागिन सोई,[1] कन्त जिसके निकट हो,
ममता मैल अन्दर में, रखे नहीं राई,
'सामी' सदा ही, रहे प्रभु इच्छा में मस्त।

(6)

वही महारानी, जो पाये सुख सुहाग का,
नैहर[2] और ससुराल में, सहज सुहानी,[3]
'सामी' वर को भानी,[4] उससे पल न हो परे।

(7)

सुहागिन को सत्य, 'सामी' बताया गुरू ने,
भान भुलाकर अपना, आज्ञा मान तुरंत,
रह प्रभु में रत,[5] दूजा काम तू कर न कर।

(8)

सिर पर हाथ रखे, प्रभु यदि निहाल[6] कर,
प्रसन्न हो अपनी करे, सुहागिन सखे,
आत्म रस चखे,[7] 'सामी' नस नस लाल हो।

(9)

सहस्त्रों करें श्रंगार, सुहागिन हो एक ही,
पहने जो प्रतीति से, गंभीरता का हार,
चढ़ सुषुप्ति सेज पर, भेंटे[8] नित भर्तार,[9]
अन्य पावें तिरस्कार, ललक रहित रीती सभी।

---

1 वही., 2 पीहर, मायका, 3 अच्छी लगी, 4 पसंद आई, भायी, 5 अनुरक्त, आसक्त, 6 संतुष्ट, 7 चाखे, 8 मिले, 9 पति

(10)

भर्तार[1] को भायी, वही महारानी बनी,
'सामी' उसको ही मिली, बहुत बड़ाई,
रिद्धि सिद्धि सेवा करें, खुश रहती माई,
साजन सदा ही, रहे उसी को देखता।

(11)

सुहागिन श्रंगार, करती नहीं कपट के,
जिसने अपने पिया से,जोड़ दी लय[2] तार,
आठों प्रहर अंदर में, 'सामी' रखे संभार,[3]
भोगे सुख अपार, रहे अलेप आकाश ज्यों।

(12)

जिस पर धूप तपती, उसे पिया शीतल करे,
तपन तीनों तापों की, उसे न छू सकती,
भान[4] भुला कर अपना, हो प्रेम मयी सती,
पाकर प्राण पति, 'सामी' झूले झूलों में।

(13)

दुहागिन को दुख, बारम्बार मिले कई,
साजन जिसके कक्ष में, उसको दुख न भूख,
पाला[5] नहीं जला सके,लगे न लू की तीख,
सभी मिटाकर झींख,[6] सम्मुख देखे पिया को।

---

1 पति, 2 मग्नता, 3 सभाल, देख रेख, खबरदारी, 4 आभास, ज्ञान, 5 हिम, तुषार, नीहार, 6 कुढ़न

(14)

पड़ गई दुहागिन, पलट कर फिर दुख में,
होंठ चाटते बीत गई, ताकते निश पूरन,
'सामी' सुहागिन को, कोई भय न तपन,
जिसने तन मन धन, देकर रिझाया पिया को।

(15)

सखी से सखी, पूछे सुख सुहाग का,
वह कुछ भी बोली नहीं, गुप्त बात रखी,
'सामी' उसने ललक से, मंज़िल सच्ची देखी,
जिसने चाट चखी,[1] उससे गुप्त न बात कोई।

(16)

बियाहता से कुंआरी,[2] पूछे सुख सुहाग का,
वह मुस्कराकर मर्म से, बोली बात भारी,
विवाह बाद हो जायेगी, 'सामी' सुध सारी,
एकांत की ख़्वारी,[3] मिलती नहीं बाज़ार में।

(17)

सुहागिन श्रंगार, करे सम संतोष का,
चढ़ सुषुप्ति सेज पर, भेंटे[4] नित भर्तार,[5]
नहीं बताती किसी को, 'सामी' सुख का सार,
रखती लोकाचार, बरते[6] विधि विचार से।

---

1 चाखी, 2 अविवाहित, 3 तिरस्कार, 4 भेंट करना, मिलना, 5 पति, स्वामी, 6 व्यवहार करे

(18)

नारी पिया प्यारी, दूर न होती पिया से,
जिसे सुहाग के सुख की सुधि हुई सारी,
किसी से कहती नहीं, असीम सुख भारी,
नभ ज्यों न्यारी, वृति[1] रखे विचार से।

(19)

वही निर्मल नार,[2] प्यारी लगती पिया को,
हाज़िर रहे हुक़म[3] सुन, करे सत्य श्रंगार,
रखे न तिल मात्र कभी, दंभ भ्रम अहंकार,
'सामी' सुख अपार, लेती अपने पिया से।

(20)

वही सुहागिन, जो ले सुख सुहाग का,
मुहब्बत की मेहन्दी लगा, रंग दे पूर्ण बदन,
सेज शील संतोष की, बिछाये बन ठन,
'सामी' वर निश दिन, वही बिठाये गोद में।

(21)

सुहागिन सयानी, सेवा करे सभी की,
तोड़े भेद भ्रम का, भर्ता[4] को भानी,[5]
चढ़ सुषुप्ति सेज पर, बनती महारानी,
'सामी' समानी,[6] रहे समता सुख में।

---

1 इन्द्रिय निग्रहकी ओर प्रकृति, 2 नारी, 3 आदेश 4 पति, स्वामी, 5 अच्छी लगी,, भायी, 6 समाई

छह[1] अठारह[2] चार[3]

(1)

आठों प्रहर प्रचार, वेद करें विस्तार से,
रच कर नाना रूप हैं, सन्त दिखाते सार,
चींटी और कुंजर[4] में, रहे एक ओंकार,
'सामी' भक्ति भंडार, मिलता भाग्यशाली को।

(2)

यही कहते चार, चल नम्रता मार्ग पर,
मारे जाते ऊँचाई पर, अहंकारी अपार,
करती ख़ुदी[5] ख़्वार,[6] झुक कर लेना रास्ता।

(3)

सब कह रहे यही, छह अठारह बात इक,
'सामी' अविद्या जल में, बहता मूढ़ वही,
जिससे दूर रही, मूर्ति परमेश्वर की।

(4)

विमल वेद कथन, है वाणी से निर्वाण तक,
'सामी' निकाले वचन से, सही सार पूरन,[7]
कुल मिलाकर वचन, हैं ये शुद्ध स्वरूप के।

(5)

'सामी' सिद्ध साधन, वेद ने किया विचार से,
जन्मों से है जीव को, लगी मैल मनन,
शान्त न होता मन, बिन जगदीश जगत् में।

---

1 छह शास्त्र, (1 वेदान्त, 2 सांख्य, 3 योग, 4 मीमानसा, 5 न्याय तथा 6 वैशेषिक) 2 हिन्दुओ के चार वेद, (1 ऋगवेद, 2 सामवेद, 3 यजुर्वेद, 4 अथर्ववेद) 3 हिन्दुओ के 'अठारह पुराण, (1 ब्रह्म, 2 पद्म, 3 ब्रह्मानन्द, 4 अग्नि, 5 विष्णु, 6 गरूड, 7 ब्रह्म वैवृत, 8 शिव, 9 लिंग, 10 नारद, 11 स्कंद, 12 मारकण्डेय, 13 भविष्यत, 14 मतस्य, 15 वराह, 16 कुर्म, 17 वामन, 18 भागवत) 4 हाथी, 5 परमात्मा का सूचक 'ओ' शब्द 6 अहंकार, 7 तिरस्कृत,

(6)

छह अठारह चार, बात बताते एक ही,
दीवाने ज्यों द्वार द्वार, देख नहीं बेकार,
गुरू गम्य अपने घर में, अदृष्य डुबकी मार,
फिर तुम आर पार, 'सामी' देखोगे प्रभु को।

(7)

छह अठारह चार, बात बताते एक ही,
'सामी' रहता ईश है, सीमितता के पार,
यहां वहां पर हाथ तू, मर्म बिना न मार,
निर्मल[1] नयन कर यार, तो घर में दिखे दीप्ति।

(8)

छह अठारह चार, बात बताते एक ही,
भक्ति कर भगवान की, नाना भ्रम निवार,[2]
मिल कर माया मोह से, हीरा जन्म न हार,
जल्दी हो तैयार, कहीं पड़े न कष्टों में।

(9)

करते वेद विवाद,[3] जीवों हेतु स्वरूप का,
दिखाते जीवन में, अविद्या की उपाध,[4]
बताते 'सामी' कहे, भक्ति बैराग समाध,[5]
दिलवाते घर याद, जो अपना है असल में।

---

1 स्वच्छ, साफ, 2 हटा, दूर कर, 3 वाद विवाद, झगडा 4 छल, कपट, 5 समाधि,

(10)

वेद ने सुनाया, वाक्य सम साक्षात्[1] का,
बिरला जागृत शूर ही, 'सामी' समझ पाया,
अनन्त प्याला प्रेम का, पीकर मस्ताया,
वही देख आया, मन मन्दिर में झांक कर।

(11)

वेदों की बानी, सार दिखाती सब को,
करोड़ों में एक ने, बात सही जानी,
कहे न दीवाने ज्यों, दर दर कहानी,
पाला[2] हुआ पानी,'सामी' मिल कर धूप से।

(12)

है बातों के पार, प्रभु बातों के गांव में,
यूं कहते हैं आदि[3] से, छह अठारह चार,
समझो तुम 'सामी' कहे, नाना भ्रम निवार,[4]
जला इक दीप अपार, तभी दिखेंगे प्रभु जी।

(13)

शास्त्र वेद पुरान, सिद्ध करते हैं साक्षी[5] को,
जुड़ने हेतु जगत् को, बताते जप तप दान,
समझ घुसे प्रवाह में, बिरला संत सुजान,
'सामी' भ्रम अज्ञान, रखे न तिल मात्र कभी।

---

1 साकार, 2 तुषार, हिम, नीहार 3 प्रारम्भ, 4 हटा, दूर कर, 5 गवाह,

(14)

वेदों का बखान, श्रुतियों ने किया साक्षी बन,
नेष्ठी[1] वेद विचार बिन, स्वतः तरे सुजान,
सब अंगों सहित कोई, श्रोत्रिय[2] नेष्ठी ज्ञानवान,
करोड़ों का कल्यान,'सामी'करे वह शक्ति से।

(15)

कर्म उपासना ज्ञान, बात बताते एक ही,
समझे कोई 'सामी' कहे, स्नेही निरभिमान,
जिसने देखा आंखों से, पलट ज्ञान का भान,[3]
पाकर पद निरवान, मस्त रहे भव सिंधु में।

(16)

गोरख नारद दत्त, बात बताते एक ही,
समझे कोई 'सामी' कहे, प्रेमी जन संकेत,
आनन्द लेता दरस का, काट सब कल्पित,
रहे बीच जगत्, सदा अलेप आकाश ज्यों।

(17)

छह अठारह चार, बात बताते एक ही,
बिना रीति नीति के, सब करते व्यवहार,
'सामी' समझो साधु संग,धीरज मन में धार,[4]
ख़ुश हो तू कर पार, अस्तित्वहीन खाई[5] को।

---

1 निष्ठावान, 2 वेदज्ञ, वेदपाठी, 3 चमक, प्रकाश, 4 धारण कर, 5 खदक

(18)

छह अठारह चार, बात बताते एक ही,
'सामी' इस संसार का, देखा सब बिसार,[1]
दीक्षा दान गुरू का, सदैव मन में धार,[2]
ताकि प्रभु दरबार, पहुंचो पूर्ण पवित्र बन।

(19)

बानी दिखाई बोध को, वह बोध स्वरूप बानी,
जल से उपजे बुलबुले, वे बुलबुले पानी,
'सामी' बिरले शूर ने, बात सच्ची जानी,
ले आनन्द ज्ञानी, अन्तर्मन में झांक कर।

(20)

सुन कर वेद वचन, माने जिस भी प्रेमी ने,
वह करता है विधि से, निर्मल निदिध्यासन,[3]
जग कर देखे ज्योति में, परमेश्वर पूरन,
सदैव मस्त मगन, 'सामी' रहे स्वभाव में।

(21)

वेदों की बानी, सार बताती सब को,
करोड़ों में एक ही, ज्ञानी ने जानी,
मिटी जिसके मन से, झूठी कहानी,
ले आनन्द ज्ञानी, अन्तर्मन में झांक कर।

---

1 भुला, 2 धारण कर, 3 बारम्बार स्मरण

(22)

वेदों की बानी, सार बताती सब को,
पाये खान[1] ख़ुशी की, कोई प्रियतम पुरानी,
सुनाये न किसी को, अनकही कहानी,
ले आनन्द ज्ञानी, अन्तर्मन में झांक कर।

(23)

कहते वेद वचन, विशुद्ध पवित्रता भरा,
करोड़ों में एक ही, गाहक[2] करे ग्रहन,[3]
पीता प्याला प्रेम का, प्रेमी हो प्रसन्न,
करता सुलह[4] सज्जन, 'सामी' सार स्वरूप से।

(24)

शास्त्र स्मृति[5] वेद, लक्ष्य दिखाते एक ही,
समझ कर 'सामी' कहे, प्रेमी बने अभेद,
तिल मात्र करते नहीं, कभी विधि निषेध,[6]
समझे काला सफ़ेद, सभी रंग हैं प्रभु के।

(25)

'सामी' सन्त कहते, बात केवल एक ही,
जिन्हें ललक है अन्दर वे, शोधक समझते,
प्राप्त कर पद अनुभवी, किसी से न कहते,
सदा ग़रक[7] रहते, अपने आप में रात दिन।

---

1 खदान, 2 इच्छुक, चाहक, ग्रहण करने वाला, 3 ग्रहण, स्वीकार, 4 सधि, मिलाप, शांति, 5 याद, हिन्दु शास्त्र 'स्मृतिया' 6 मनाही, 7 निमग्न, डूबे हुए

लक्षाण

(1)

वाणी भुलवाये, जाकर घुसे भंवर में,
वाणी पकड़ हाथ से, सिन्धु पार करवाये,
यह छल बिरला सन्त जन, समझे समझाये,
समझ कर समाये, तब हो सुखी 'सामी' कहे।

(2)

बिरला विचारी,[1] 'सामी' शिष्य गुरू का,
पावे जो प्रतीति से, भक्ति पद भारी,
जिसने असि[2] ले ज्ञान की, ममता मति मारी,
जान सत्यता सारी, चढ़े ज्ञान के नभ पर।

(3)

वह प्रेमी पूरन, वह योगी जीवन मुक्त,
पावे जो प्रतीति से, गहरा ज्ञान अंजन,[3]
अलख देखे सिन्धु में, छोड़े दर्श[4] दर्शन,
सदैव मस्त मगन, 'सामी' रहे स्वभाव में।

(4)

वह प्रेमी प्रबल, वही अवधूती आत्मा,
जो मारे अपने मन का, 'सामी' सारा दल,[5]
बैठ ज्ञान के तख़्त[6] पर, न्याय करे निर्मल,[7]
जैसे जल से जल, वैसे मिले ईश से।

---

1 विचारवान, 2 तलवार, 3 काजल, 4 अमावस्या तिथि, 5 गिरोह, सेना झुंड, 6 सिंहासन, 7 स्वच्छ, मैल रहित

(5)

वह नेही[1] निष्काम, वह अवधूती आत्मा,
'सामी' साधु जनों को, झुक कर करे प्रणाम,
प्रसन्न हो पावे वही, अनुभवी पद इनाम,
करे अनन्य आराम, सोवे सुषुप्ति सेज पर।

(6)

वह नेही निर्बैर, वह अवधूत अनुभवी,
जो खोजे घुस घर में, पैर रहित का पैर,
मिटा दे मालूम कर, सब अज्ञान अंधेर,
राई[2] और सुमेर,[3] सम समझे 'सामी' कहे।

(7)

वह नेही निर्बैर, वह अवधूत अनुभवी,
मिटा दे जो मन का, 'सामी' सब खलल,[4]
अन्दर बाहर आत्मा, देखे एक अचल,
दूर न हो इक पल, आनन्द लेता मर्म से।

(8)

वह नेही निरवान,[5] वह अवधूती[6] आत्मा,
देखा जिसने आंखों से, पलट अनुभवी भान,[7]
अन्दर बाहर नभ ज्यों, स्वतः सिद्ध समान,
जगकर सब जहान, विलीन करता लक्ष्य में।

---

1 स्नेही, प्रेमी. 2 छोटी सरसो, बहुत कम मात्रा. 3 सुमेरू पर्वत,
4 रूकावट. 5 निर्वाण, मुक्त. 6 सन्यासी, योगी. 7 चमक, प्रकाश

(9)

वह नेही निरवान, वह साधु जन सूरमा,
जीते जो गुरू ज्ञान से, मन के पांच पठान,
बैठे काया गृह में, लेकर ज्ञान की आन,[1]
सब कुछ बने सुजान, 'सामी' मन में झांक कर।

(10)

वही सत्संगी, मर्म जिसके मन में,
जाग निकाले मन से, 'सामी' चाह नंगी,
प्रभु सर्वगी,[2] देखे भेद भ्रम बिन।

(11)

वह संगत[3] परमान,[4] जो ममत्व मिटाये मन का,
जो जगत् से जोड़ कर, प्रकट दिखाये भान,[5]
'सामी' जो भगवान, जीते मरते संग रहे।

(12)

'सामी' वह बुद्धिमान, जो करे संग साधु का,
अनुभवी वाक्य सुनकर, तजे देह अभिमान,
रहे सावधान, सर्वदा स्वरूप में।

(13)

वही जन सर्राफ़, वही योगी जगत् में,
परखे अपने आप को, करे भ्रम को साफ़,
कर दे सब को माफ़,साक्षी[6] बन कर सब का।

---

1 शपथ, सौगंध, प्रतिज्ञा, 2 सर्वव्यापी 3 संगति, साथ, मित्रता,
4 सबूत, प्रमाण, 5 चमक, प्रकाश, 6 गवाह

(14)

वही जिज्ञासी, जो रहता गुरू ज्ञान में,
माया छाया की तरह, समझे सब नासी,
'सामी' बेगमपुर का, बनता निवासी,
अनुभवी आकासी, देखे पद वह आंखों से।

(15)

वह दरबारी दास, सत्य जिसके अंदर में,
'सामी' करता सर्वदा, खलबल[1] को ख़लास,[2]
देखे वह गुरू ज्ञान से, अनुभवी आकास,
जिसमें प्रेम प्रकास, साक्षी सूर्य ज्यों रहे।

(16)

मोमिन[3] मुसलमान, करोड़ों में एक हो,
मिले जो एकत्व में, निकाल ग़ैर[4] गुमान,[5]
नूर महल[6] की नींव पर, भ्रमण करे सुजान,
उसको सर्व जहान, समझे मित्र प्रभु का।

(17)

वह गुरूमुख ज्ञानी, वह अवधूत अनुभवी,
देखा जिसने आंखों से, दिल में दिल जानी,
वाणी बोले अनन्त की, शीतल शाहानी,[7]
सदैव सैलानी,[8] 'सामी' रहे स्वभाव में।

---

1 हलचल, शोरगुल, 2 समाप्त, 3 मुसलमान जुलाहो की एक श्रेणी 4 अंधेर, अत्याचार, 5 घमंड, अहंकार, 6 प्रकाश महल, 7 शाही, राजसी, 8 पर्यटक

(18)

वह गुरूमुख ज्ञानी, जो रहे अलेप क़मल ज्यों,
समझे सुख संसार के, नश्वर बेमानी,[1]
'सामी' देखे सम बन, लोगों में जानी,[2]
बोले सत्य बानी,[3] वाक्य कहे वेदान्त के।

(19)

'बाभन' वह बुद्धिमान, साधु जन संसार में,
देखा जिसने आंखों से, चार अंगुल[4] आसमान,
जिसमें सम शीतल रहे, सदैव साक्षी भान,[5]
ऐसा पद निरवान,[6] पा प्रसन्न हो स्वयं में।

(20)

'बाभन' वह बुद्धिमान, जो समझे सार ज्ञान का,
'सामी' है वह समझता, नश्वर सर्व जहान,
चिन्ता चाह[7] निकाल कर, हो निर्मल निरवान,
पाकर दर्शन दान, सदा रहे संतोष में।

(21)

वही सौदागर, जो भरे खेप[8] क्षमा की,
दौलत दान गुरू का, 'सामी' रखे सुभर,[9]
कर तप लहे[10] लग्न से, बेगमपुर नगर,
घूमे नहीं घर घर, चाह मिटाकर चित[11] की।

---

1 अर्थहीन, 2 प्राण प्यारा, 3 वाणी, 4 आठ जौ के बराबर लम्बाई, नापने मे एक गिरह का तीसरा भाग, 5 प्रकाश, चमक, 6 निर्वाण, मुक्ति, 7 इच्छा, 8 लदान, 9 शुभ्र, उज्जवल, 10 प्राप्त करे 11 मन,

(22)

वही साहूकार, दे धन दान गुरू जिसे,
जाग निकाले मन से, विधि निषेध व्यवहार,
सर्वदा फुलवार,[1] 'सामी' रहे स्वभाव में।

(23)

अनुभव उपजाये, वही वाक्य श्रोमणि,[2]
'सामी' वही संगत करे, जो ममता मिटाये,
अविद्या हटाये, वही सतगुरु सूरमा।

(24)

वही निर्मल नर, 'सामी' इस संसार में,
रिपुओं को वश में करे, जावे निरति नगर,
खोले दसवां दर,[3] सम्मुख हो स्वरूप के।

(25)

वही साधु सुघड़,[4] 'सामी' इस संसार में,
जीते मन मवासी को, मारे उसे मरोड़,
खोज लेता तड़,[5] पलट आत्मा सर[6] का।

(26)

पट्टी पढ़ाये, वही शिक्षक अनुभवी,
समझा कर समर्थ करे, बेंत न चलाये,
जन्म मरण सुख दुख का, संशय मिटाये,
'सामी' दिखाये, ज्ञान की ज्योति आंखों से।

---

1 प्रसन्न, 2 सिर की मणि, मस्तक की मणि, 3 द्वार, 4 सुडोल, निपुण, कुशल, 5 स्थल, तट 6 सरोवर,

(27)

वह अवधूत उदार, वह योगी जीवन मुक्त,
जिसको साधु संग मिला, सम संतोष विचार,
जग कर देखा ज्योति में, स्वप्न का संसार,
प्रभु इच्छा होश्यार, सदा माने 'सामी' कहे।

(28)

जो जाता पहचान, 'सामी' अपने आपको,
समझे वही योगेश्वर, गुरूमुख ज्ञानवान,
वही पंडित अवधूत, वही प्रेमी परमान,[1]
वही निर्गुण निरवान,[2] वही साधु सतगुरू।

(29)

वही साधन साध, 'सामी' कहा गुरू ने,
जिसके साधे सुख मिले, मिटे सभी उपाध,[3]
पलट देख अन्दर में,अनुभवी पुरूष अगाध,[4]
आदि और युगादि, है सब जिसके आसरे।

(30)

वही साधु जान, जो साधे मन शुद्ध करे,
दुख सुख लाभ अलाभ की, रखे सम पहचान,
'सामी' चाहे सब का, जो केवल कल्यान,
अपना करे उत्थान, पिये पिलावे राम रस।

---

1 प्रमाण, सबूत, 2 निर्वाण, मुक्त, 3 छल, कपट,
4 अपार, असीम

(31)

वही सिपाही, जो मारे मन मवासी[1] को,
पांचों योद्धे जीत कर, हो घोड़े का ग्राही,[2]
चढ़ कर हो चहुंडोल पर, रामनगर राही,[3]
दस दिश दुहाई, देवे भ्रम की फ़ौज बिन।

(32)

वही शूर प्रधान, जो लेता खड्ग क्षमा की,
मारे मन मवासी को, जीते सर्व जहान
सर्वदा निरवान,[4] रहे काया गढ़[5] में।

(33)

वही जन शूरा,[6] जो जीते मन मवासी को,
'सामी' देखे सब में, परमेश्वर पूरा,
आधा अधूरा, कभी भी होता नहीं।

(34)

कहलाये बली,जो जीते मन मवासी को,
'सामी' इच्छा राम की, समझे सब भली,
गावे राम कली,[7] फेंक पोटली सिर से।

(35)

वही सन्त महन्त, वही सिद्ध ज्ञानी समझ,
देखे अपने आप को, करे अविद्या का अन्त,
'सामी' सदा वसन्त,[8] खेले भय निकाल कर।

1 गढ़पति, 2 ग्रहण करने वाला, 3 यात्री, 4 निर्वाण, मुक्त, 5 दुर्ग, किला, 6 शूरवीर, 7 राग का नाम, 8 राग का नाम, फाग

(36)

नित अनुरागी प्रभु के, दर्शन में ग़लतान,[1]
आप निकाले आप से,'सामी' नंग[2] निरवान,[3]
मुल्ला मन मस्जिद, ऐन[4] कारण ईमान,
कृपा जिसके मन में, वह दाता दयावान,
गायक गावे दीप राग, लगा अनहद तान,
ढिंढोरा दे सत्य का, साहब वह सुल्तान,
स्याही चलाये सत्य की, क़लम सत्य की खान,[5]
स्वर गले सिर से परे, जीते सर्व जहान,
सती समाई सत्य में, प्रभु देख प्रधान,
और सब अंध अज्ञान, समझ बिन 'सामी' कहे।

(37)

सन्तों ने फ़िक्र,[6] निकाल दी सब अंदर से,
अपनी सुधि भुला करें,प्रभु इच्छा पर शुक्र,[7]
नस नस में कर ज़िक्र,[8] सम्मुख देखें प्रभु को।

(38)

वही उदासी, जो सेवा करे संगति की,
'सामी' सदा ही रहे, दर्शन का प्यासी,
काटे यम फांसी, सम्मुख हो स्वरूप के।

---

1 निमग्न, लीन, 2 नगा, 3 निर्वाण, मुक्त, 4 ठीक, सटीक,
5 खजाना, 6 चिन्ता, 7 धन्यवाद, स्वीकार, 8 चर्चा, उल्लेख

(39)

वही सन्त भगत, वही पंडित ज्ञान वान,
मृग तृष्णा के जल ज्यों, देखे सर्व जगत्,
मिटा देता मन से, 'सामी' ममता मत,
पाकर आत्म तत,[1] ख़ुश हो अपने आप से।

(40)

वही सन्त सर्राफ़, है जागृत 'सामी' कहे,
देखे हीरा अनुभवी, हो संशय से साफ़,
बात न करे किसी से, सहमत हो न ख़िलाफ़,
सब को करे माफ़, सम होकर शीतल बना।

(41)

वही सन्त प्यारा, प्रेमी परमेश्वर का,
आंखों से जो देखता, ज्ञान का उजियारा,
रखे न तिल मात्र कभी, दम्भ कपट कारा,[2]
सदैव मतवारा,[3] 'सामी' रहे स्वभाव में।

(42)

वह वैष्णव चतुर, जो व्यापक समझे विषयों को,
माला श्वास अश्वास की, पहने पिरो कर,
'सामी' मन को शुद्ध करे, सुमरन से धोकर,
ज्यों रंग चढ़ी चद्दर, त्यों रत रहता रंग में।

---

1 तत्व, 2 काला, 3 मतवाला

(43)

वही सन्यासी, जो ममत्व रखे न मन में,
'सामी' काटे सम बन, भ्रम की फांसी,
हद से दूर असीम का, जो होता वासी,
अलख अविनासी, देखे नित निर्वाण में।

(44)

वही सन्यासी, जो भगवा पहने भाव का,
लगा रज क्षमा की, काटे यम फांसी,
करे नित दुविधा बिना, भिक्षा आकासी,
अलख अविनासी, 'सामी' देखे सब में।

(45)

वही सन्यासी, जो शीतल रहे स्वभाव में,
काटता जो कृपा से, संशय की फांसी,
सम देखे 'सामी' कहे, अलख अविनासी,
गंगा गया कासी, भटके नहीं भुलक्कड़ ज्यों।

(46)

जागृत सन्यासी, करोड़ों में एक हो,
'सामी' देखे ज्ञान से, काया में कासी,
ममत्व मिटा मन का, हो निर्मल निरासी,[2]
अलख[3] अविनासी,[4] से मिले नित भ्रम बिन।

---

1 काशी, 2 आशा रहित, निराश, 3 जिसे देखा न जा सके, अदृष्य,
4 अविनाशी, जिसका नाश न हो।

(47)

वही उदासी, जो रहे उदास अंदर में,
सेली[1] पहने सत्य की, टोपी आकासी,
क्षमा की कफ़नी[2] पहन, काटे यम फांसी,
अलख अविनासी, 'सामी' देखे सब में।

(48)

'सामी' वह सुलतान, जो बैठे अनुभवी तख़्त पर,
मारे मन मवासी[3] को, जीते सर्व जहान,
पीट ढिंढोरा[4] सत्य का,न्याय करे निरवान,[5]
सदैव विद्यमान, देखे सार स्वरूप को।

(49)

वह प्रेमी प्रबल, वह साधू जन सूरमा,
मारे मन मवासी को, कर दे उसे क़त्ल,[6]
अन्दर बाहर आत्मा, देखे सदा अचल,
जैसे जल में जल, समाया, 'सामी' कहे।

(50)

वह प्रेमी प्रबल, वह साधू जन सूरमा,
करे जो गुरू ज्ञान से, जग कर जन्म सफल,
बैठे अनुभवी तख्त[7] पर, मिटा कर ख़लल,
अलख को कुशल,[8] 'सामी' देखे सूर्य ज्यों।

---

1 छोटा दुपट्टा, 2 मेखला कपडे का टुकडा जो साधु लोग गले मे डालते हैं, 3 गढपति, 4 डोडी, मुनादी, घोषणा, 5 निर्वाण, मुक्त, 6 हत्या, 7 सिंहासन, 8 निपुण, दक्ष

(51)

वह प्रेमी परबीन,[1] वह योगेश्वर जगत् में,
जिसको दिया गुरू ने, पावन पूर्ण यक़ीन,[2]
सदा परमेश्वर के, रहे लग्न में लीन,
दर दर जाये न दीन, परिच्छिन्न[3] समझ स्वयं को।

(52)

वह प्रेमी पूरन, वह साधू जन सूरमा,
पावे जो प्रतीति से, गहरा ज्ञान अंजन,[4]
घुस कर लहे[5] घर में, अनुभवी आत्म धन,
मिटा कर मनन, 'सामी' लेता शांति सुख।

(53)

वह प्रेमी पूरन, वह साधू जन सूरमा,
लाये सिया को सुरति में, मारे मन रावन,
निकाले देह दही से, 'सामी' मथ[6] मक्खन,
वही आवागमन, देखे नहीं आकाश में।

(54)

वह प्रेमी पांडा,[7] वह साधु जन सूरमा,
उठाये जो हर्ष से, क्षमा का खांडा,[8]
मारे मनाये मन को, तोड़ भ्रम भांडा,[9]
करे कर्म कांडा,[10] 'सामी' दिखाये समता।

---

1 प्रवीण, 2 विश्वास, 3 सीमित, 4 काजल, 5 प्राप्त करे, 6 मथ कर, बिलोकर, 7 पंडा, 8 एक प्रकार का अस्त्र, 9 बरतन, मटका, 10 कांड, खण्ड

(55)

वह प्रेमी पंडित, वह योगी जीवन मुक्त,
देखे जो दीपक ज्यों, बिन दुविधा अद्वैत,
रखे न तिल मात्र कभी, मन में मोह ममत्व,
राई और पर्वत, सम समझे 'सामी' कहे।

(56)

वह प्रेमी पिंगल,[1] वह अवधूती आत्मा,
जिसने पाया अपना, अनुभवी घर असल,
'सामी' कहे संसार में, भूले नहीं अभुल,[2]
काटे भ्रम कुल,[3] स्थित हो आकाश ज्यों।

(57)

वह पंडित पुख़्ता,[4] वह स्नेही मुक्त जन,
समझे जो 'सामी' कहे, निराधार नुक़्ता,[5]
जग कर करे जगत् का, लेखा सब चुकता,
बन बैठा मुक्ता, निर्जन बस्ती बीच में।

(58)

वह प्रेमी निर्बैर, वह साधु जन सूरमा,
घुस कर देखे घर में, पैर रहित का पैर,
सोवे सुषुप्ति सेज पर, मिटा कर अंधेर,
राई और सुमेर,[6] सम समझे 'सामी' कहे।

---

1 छंद शास्त्र के आदि आचार्य प्राचीन मुनी पिंगल, 2 जो भूलता न हो,
3 पूर्ण, 4 दृढ़, 5 बिन्दी, 6 सुमेरू पर्वत

(59)

वह गुरूमुख ज्ञानी, वह अवधूत अनुभवी,
जिसको दी सतगुरू ने, समझ सुलतानी,
'सामी' देखे सम बन,दिल में दिल जानी,[1]
सदैव सैलानी,[2] बरते विधि निषेध बिन।

(60)

वह गुरूमुख ज्ञानी, वह अवधूत अनुभवी,
जिसको दी सतगुरू ने, निर्भय निशानी,[3]
देखे वही अभेद बन, दिल में दिल जानी,
चतुराई, नादानी, झूठी समझे भ्रम की।

(61)

जागा बाल यती, करोड़ों में एक ही,
संशय को फ़ुरसत[4] बिना, जो दे फ़ारख़ती,[5]
कौन आये जन्मे मरे, किसी ग़रज़[6] रती,[7]
मिटा मनौती,[8] 'सामी' मिला स्वरूप से।

(62)

मर को जो मुहब्बत, करे कर्ता पुरूष से,
वह साधु वह सूरमा, वह प्रेमी उपरत,[9]
चढ़े अनुभवी नभ पर, लांघ पांचों तत,[10]
गोरख नारद दत्त, साक्ष्य दें 'सामी' कहे।

से प्यारा, 2 पर्यटक, 3 स्मृति चिन्ह, 4 छुट्टी, अवकाश,
विच्छेद 6 प्रयोजन, आशय, मतलब, 7 आठ चावल का मान या
मन्नत, 9 उदासीन, विरक्त, 10 तत्व

पंडित उसको जान, जिसको सुधि स्वरूप की,
आठों प्रहर स्वरूप से, जुड़े योगी महान,
सन्यासी भ्रम बिन लखे, सब में विद्यमान,
आत्म जल में अछूत मन, को धोवे सुजान,
उदासी उदास बन, समझे जग मेहमान,
वही अवधूत अनुभवी, कहते वेद पुरान,
बैरागी नित स्वयं को, देखने हेतु हैरान,
होता वह नागा मुक्त, जो छोड़े अभिमान,
मुलाँ मन मस्जिद में, पढ़े पुनि पुनि कुरान,
मोमिन[1] समझे मन में, है साथ सदा भगवान,
दाता कृपालु वही, जो करे सिर कुर्बान,
गायक गावे दीप राग, दीप जले सुन तान,
सुलतानी साहब वही, जो न्याय करे समान,
सच्चा लेखा जो लिखे, उसे समझ सुलतान,
सच्चा शूर समझ उसे, जो जीते पांच श्वान,
मान ज्ञान गुरू का, सम समझे मान अपमान,
सती रहे पतिव्रत में, रखे पति का ध्यान,
ये बातें परमान,[2] 'सामी' समझे कोई सच्चा।

---

1 मुसलमान जुलाहो की एक जाति, 2 प्रमाण

(64)

वही सौदागर, जो घर लाता धन कमा,
ख़रीदता विश्वास से, दिल देकर दिलबर,
किसी का करता नहीं, कभी भी निरादर,
समझे सब गुज़र,[1] स्वप्न का 'सामी' कहे।

(65)

वही नागा निरवान, वही अवधूती आत्मा,
जो काटे फांस गले की, अविद्या आसमान,
पारदर्शी पट से, जो देखे अनुभवी भान,[2]
'सामी' सब जहान, रहे सहारे जिस के।

(66)

वही सन्त महंत, शीतल रहे स्वभाव में,
जग कर जो ख़ुद आंखों से, देखता भगवंत,
किसी से कहता नहीं, 'सामी' सुख बेअंत,
जैसे पाकर कंत, सोये सुहागिन सेज पर।

(67)

वह अवधूत उदार, वह योगी जीवन मुक्त,
पलट कर जो आंखों से, देखे पूर्ण सार,
रखे न तिल मात्र कभी, अंदर में अहंकार,
प्रभु इच्छा स्वीकार, सदा करे 'सामी' कहे।

---

1 निर्वाह, समय काटना, समय व्यतीत करना, 2 चमक, प्रकाश

(68)

'सामी' वही सेवक, बैठे जो गुरु गद्दी पर,
पढ़कर पट्टी प्रेम की, जो होता परिपक्व,
रखे न तिल मात्र कभी, मन में संशय शंक,
परमेश्वर पालक, स्वतः देखे सिर पर।

(69)

वही योगेश्वर, जो पहने मुद्रिका मर्म की,
सिंगी[1] बजावे सहज की, 'सामी' सदा सुभर,[2]
धरे ध्यान अनन्य वह, देख निरत[3] नगर,
जिसमें अजर अमर पुरुष बसे परमात्मा।

(70)

बुला पंडित उदार[4] सार दिखाते सब को,
समझ कर सच्चों का खुला मुक्ति द्वार,
जगत् देखकर देह में, हो जाते फुलवार,[5]
प्रभु इच्छा स्वीकार, सदा करें 'सामी' कहे।

(71)

लगन की लंगोटी, पहने जो प्रतीति से,
भगावे भ्रम कुत्ती को, मार सम सोटी,[6]
'सामी' खावे सार की, सच्ची रहन रोटी,
आत्मा नहीं लौटी, गर्भ योनि की गुहा[7] में।

---

1 फूंक कर बजाया जाने वाला बाजा, 2 शुभ, उज्ज्वल, 3 तल्लीन, लीन
4 बड़े दिल वाले, श्रेष्ठ 5 हर्षित, प्रसन्न 6 मोटी छड़ी, 7 गुफा, कंदरा

फ़कीर

(1)

करके फ़िक्र[1] फ़कीर,मुक्त हो गये फ़िक्र से,
'सामी' वे सुमरन करें, दिल को देकर धीर,
मिस्सी[2] समझें मिसरी, चिथड़ा[3] कोसा चीर,[4]
रहते बीच शरीर, विदेही आकाश ज्यों।

(2)

फ़कीर, ने फ़रमान,[5] माना परमेश्वर का,
उसने सब निकाल दिया, अंदर से अभिमान,
घुस कर लाधा[6] घर में, अनुभवी आत्म ज्ञान,
वे ही हुए परमान, समक्ष परमेश्वर के।

(3)

फ़कीर, ने फ़ज़ल,[7] मांगा मिल कर प्रभु से,
जाग निकाला मन से, 'सामी' सब ख़लल,
आंखें आंखों से लड़ा, दूर न होता पल,
सर्वदा शीतल, रहता अपने हाल में।

(4)

करके फ़िक्र फ़कीर, मुक्त हो गये फ़िक्र से,
जिन्हें बताया गुरू ने, साधन सार सब,
मिल कर रहते प्रभु से, तज कर हठ हुनर,[8]
अन्दर में स्थिर, 'सामी रहें सुमेर[9] ज्यों।

चिन्ता, 2 एक प्रकार का मजन जिसे सधवा स्त्रियां दांतों में लगाती हैं, फटा पुराना कपडा, 4 एक प्रकार का रेशमी कपडा, 5 राजा की आज्ञा, पाया, 7 अनुग्रह, कृपा, दया, 8 कला, 9 सुमेरू पर्वत,

(5)

फ़कीरों का दर, पकड़े जो विश्वास से,
मिटा उसके मन का, 'सामी' ममत्व मक्कर,[1]
ढूंढ लेता वह अपना, अनुभवी आदि[2] घर,
जिसमें अजर अमर, पुरूष बसे परमात्मा।

(6)

फ़कीरों ने फ़िक्र,[3] फेंक दिया सब साधु संग,
देखें पूर्ण परमात्मा, जग कर जो ज़ाहिर,
इच्छा लोक परलोक की, रखें न तिल मात्र,
'सामी' करें सब्र,[4] आनन्द लेवें मुक्ति का।

(7)

फ़कीरों ने फ़िराक़,[5] साधन कहा सुख का,
समझे कोई 'सामी' कहे, प्रेमी जन मुश्ताक़,[6]
फेंके आतंक जगत् का, दिल से सब चालाक,
सीमितता तज पाक,[7] मिल कर हुआ पिया से।

(8)

फ़कीरों ने फ़र्ज़,[8] छोड़ा लोक दिखावे का,
प्रभु से मिल कर किया,सदा ह्रदय में हज,
'सामी' लाल गुलाल हुए, काट भ्रम कर्ज़,[9]
अत्यन्त बेग़रज़,[10] रहें अपने हाल में।

---

1 छल, कपट, 2 प्रारम्भ काल का, मूल 3 चिंता, 4 धैर्य, 5 बिछोह,
6 इच्छुक, 7 पवित्र, 8 कर्तव्य, 9 ऋण 10 मतलब रहित, इच्छा रहित

दर्दमंद

(1)

पल पल करे पुकार, आहत दर्द वियोग[1] के,
देखन हेतु प्रभु के, सिसकें बारम्बार,
'सामी' कहे शरीर की, करते नहीं संभार,[2]
आ मिल जानी यार, नहीं तो देंगे जान हम।

(2)

क्या बताऊँ हाल, दर्दमंदों के दिल का,
जिन को मिला सतगुरू, दीनानाथ दयाल,
सदा रहें 'सामी' कहे, क्षमा में ख़ुशहाल,[3]
गगन और पाताल, भटकें नहीं भुलक्कड़ ज्यों।

(3)

क्या बताऊँ हाल, दर्दमंदों के दिल का,
'सामी' जिन्हें गुरू करे, नज़र से निहाल,
बातें करें अगम्य की, रातों दिन रसाल,
प्रभु बिना ख़याल,[4] करें न वे तिल मात्र भी।

(4)

दर्दमंद दुकान, नहीं खोलते भ्रम की,
जिन को दिया गुरू ने, विश्वास सब्र का दान,
घुसकर देखें स्वयं में, भेद रहित भगवान,
करके अमृत पान, समा गये 'सामी' कहे।

---

1 विरह, 2 सभाल, 3 सुखी, प्रसन्न, 4 विचार

(5)

दर्दमंद दोषी, कभी भी होते नहीं,
जिन को दिया गुरू ने, ज्ञान है अपरोक्षी,[1]
हार जीत बिन हंस ज्यों, चाल चलें चोखी,[2]
सदा संतोखी,[3] 'सामी' रहें स्वभाव में।

(6)

दर्दमंद दाना,[4] 'सामी' मिला सतगुरू,
जिसने दिखाया लक्ष्य का, खरा ख़ज़ाना,
पाकर उसे मग्न हुआ, ख़ुशी से सयाना,[5]
समाया अदना, जल बुदबुदा जल में।

(7)

दर्दमंद दाना, भ्रम न रखे मन में,
खोज ले गुरू ज्ञान से, एकांती[6] ख़ज़ाना,
सदा रहे 'सामी' कहे, अलसाया सयाना,
जैसे परवाना,[7] जल कर ज्योति रूप हो।

(8)

दर्दमंद दिलबर, प्रत्यक्ष देखे अपना,
'सामी' साधु संग वह, दिल का खोले दर,[8]
बताता न किसी को, अनुभवी सुख अजर,
कैसे प्रकट वह नर, करे धागा स्नेह का।

---

1 प्रत्यक्ष,समक्ष, सामने वाला 2 उत्तम, शुद्ध. 3 सतोषी. 4 बुद्धिमान
5 चालाक, चतुर 6 भक्त जो भगवत प्रेम प्रकट न करता हो. 7 पतग.
8 द्वार.

(9)

बिरहन बैरानी,[1] बहाये रक्त आंखों से,
याद करे 'सामी' कहे, दिलबर दिल जानी,[2]
लगा प्रेम का जिस को, बाण आसमानी,[3]
मुश्किल आसानी, मिल कर करो मरी की।

(10)

प्रभु मेरा मन, जकड़ा तेरी प्रीति ने,
आंखें लग्न लगा रहीं, तड़प रहा है तन,
चाहूं नहीं भला बुरा, कुटुम्ब कबीला धन,
दुखिया को दरसन, तुरन्त दो 'सामी' कहे।

(11)

दर्शन कर दर्दमंद, मिले और बिछुड़े नहीं,
समझे जो 'सामी' कहे, ताने बाने का द्वंद,[4]
दोनों रूप पवन के, स्पंद[5] और निःस्पंद,[6]
अनुभव का आनन्द, पाकर बैठा पद में।

(12)

क्या करे काज़ी, दावा[7] दर्दमंदों से,
मिटी जिनके मन से, विनती मोहताजी,
सदा रहें 'सामी' कहे, रज़ा[8] में राज़ी,
अस्तित्वहीन बाज़ी,[9] लांघ पहुंचे लक्ष्य पर।

---

1 पागल हुई, 2 जान से प्यारा, 3 आकाशीय, 4 उपद्रव, झगडा, 5 फडक, कपकपी, 6 शांत, स्पद का उलटा 7 हक, अधिकार 8 इच्छा, 9 शर्त, दांव,

(13)

दर्दमंद द्वेष, किसी से रखते नहीं,
'सामी' देखें सब में, अनुभवी पुरूष अलेख,
धार कर आया जगत् में, बाज़ीगर का वेष,
यही विवाद विशेष, यही ज्ञान गुरू का।

(14)

अलख धर अवतार, 'सामी' आया संत का,
करते प्रेम प्रतीति से, दर्दमंद दीदार,[1]
चढ़ते अनुभवी नभ पर, पाकर सम सुख सार,
सर्वदा फुलवार,[2] रहते निजी ख़्याल में।

(15)

दर्दमंद दातार, कहीं भी छिपते नहीं,
'सामी' जिनकी प्रेम से, नस नस करे पुकार,
बिना प्रभु प्रेम के, करें न कोई कार,[3]
करते हैं दीदार, सुधि गंवा कर अपनी।

(16)

दर्दमंदों का दर,[4] ले बैठो विश्वास से,
'सामी' करेंगे स्वयं ही, हर्ष से दया नज़र,[5]
दिलायेंगे देह में, अनुभवी आदि घर,[6]
जिसमें अजर अमर, पुरूष बसे परमात्मा।

---

1 दर्शन, 2 प्रफुल्ल हर्षित, प्रसन्न 3 कार्य, 4 दरवाजा, द्वार,
5 दृष्टि, 6 असली घर, प्रभु का द्वार, परलोक.

(17)

दर्दमंद का देश, सतगुरू है कौन सा?
सुखदाई शीतल सदा, जिसका शुद्ध परिवेश,[1]
पूछ देखो उनसे, जो घुसें करें प्रवेश,
काट भ्रम क्लेश, 'सामी' मिले स्वरूप से।

(18)

दर्दमंद दौलत,[2] रखते सच्ची, साथ में,
चढ़ते अनुभवी नभ पर, मिटा कर ममत्व,
समझें सुख संसार के, सब झूठे कल्पित,
मिल कर करें मुहब्बत, 'सामी' साधु संग से।

(19)

दर्दमंद दुकान, नहीं खोलते भ्रम का,
जिनको दिया गुरू ने, अनुभवी आत्म ज्ञान,
सुखी हुए 'सामी' कहे, छोड़ सकल[3] अभिमान,
चाहे बके जहान,[4] शीतल रहें स्वभाव में।

(20)

दर्दमंद दातार, करोड़ों में एक हो,
किया जिसने आंखों से, प्रियतम का दीदार,
खोल बैठा अहं बिन, अनुभवी सार भंडार,
जगा कर जयकार,[5] 'सामी' सेवक का करे।

---

1 घेरा, परिधि, वातावरण, 2 धन, सम्पति, 3 सम्पूर्ण, 4 जगत्, संसार,
5 विजय प्राप्ति का आर्शीवाद

(21)

दर्दमंद दातार, 'सामी' समदर्शी सदा,
दया धरे जो दिल में, 'सामी' करे उपकार,
हाथ थाम कर हिम्मत दे, तारे जीव अपार,
सदा रहे होश्यार, पिये पिलावे प्रेम रस।

(22)

दर्दमंद दीदार, प्रति पल करता प्रभु का,
रखे न तिल मात्र कभी, अंदर में अहंकार,
समझ लेता सम बन, स्वप्न है संसार,
'बाभन' जैसे बार,[1] मुक्त रहता मनन से।

(23)

दर्दमंद बन दीन, पी पी करे पपीहे ज्यों,
चकोर को चन्द्र बिना, सुख लगते हैं हीन,[2]
'सामी' मन मृग को सदा,मोहे अनन्त बीन,[3]
जैसे जल बिन मीन, तड़पे त्यागे तन को।

(24)

बहायें अश्रु धार, घायल जो विरह दर्द के,
शीष अलग हुआ धड़ से, मारी ऐसी तलवार,
हार जीत सुख दुख की, रखते नहीं संभार,
चढ़ा रहता ख़ुमार,[4] 'सामी' परमेश्वर का।

---

1 बाल, बच्चा, बालक, 2 बुरे, तुच्छ, 3 वीणा, मुरली बसरी, एक प्रकार का वाद्य यंत्र, 4 हलका नशा, मस्ती

(25)

बातें सुन गंभीर, दर्दमंद दाना[1] बना,
तोड़े संशय भ्रम की,जग कर वह ज़ंजीर,[2]
रहे अलेप आकाश ज्यों, 'सामी' बीच समीर,[3]
खाता मीठा खीर, लेटे लाल पलंग पर।

(26)

अतिथि को आदर, दर्दमंद दें दिल से,
जिन्हें पढ़ाया गुरू ने, हर्ष से प्रेम अक्षर,
देखते हैं गगन ज्यों, पूर्ण परमेश्वर,
सदैव तर–बतर,[4] 'सामी' रहें स्वभाव में।

(27)

दर्दमंद दातार, दया रखते दिल में,
जिन्हें बताये सतगुरू, अनुभवी मत अपार,
निकाल देते सब के, वचनों से विकार,
सदा रहें फुलवार,[5] 'सामी' निजी स्वभाव में।

(28)

दर्दमंदों को दोष, मूर्ख देते बुद्धि बिन,
जिनको दिया गुरू ने, 'सामी' सम संतोष,
देखें देह अभिमान बिन, अनुभवी पद अपरोक्ष,[6]
ममत्व मिटा कर मोक्ष,[7] सब का करें समझ से।

---

1 बुद्धिमान, 2 बेड़ी, 3 हवा, वायु , 4 भीगा हुआ, सराबोर, 5 प्रफुल्ल, हर्षित, प्रसन्न 6 समक्ष, प्रत्यक्ष, सामने 7 मुक्ति

अवधूत

(1)

जिसने समझा सूत्र, आत्म देव अनूप का,
वह बिना बेख[1] भभूत के, 'सामी' बना अवधूत,
उठ कर अविद्या भूत, भागा उसके घर से।

(2)

अलबेला[2] अवधूत, प्रेमी पावन प्रभु का,
अग्नि को अर्पित करे, पांच मार जो पूत,
प्रेमी जन मज़बूत,[3] प्रसन्न रहता स्वयं में।

(3)

जो बनी सो वाह, 'सामी' करे स्वीकार सब,
सदैव परमेश्वर की, करता सम सराह,[4]
यही सच्ची राह, असली अवधूतों की।

(4)

अवधूतों को आस, रहती नहीं अंदर में,
'सामी' काटते सम बन, सब भ्रमों की फांस,
रहें बीच आकास, आठों प्रहर अनल[5] पक्षी ज्यों।

(5)

कहते हैं अवधूत, ऊँची बात मर्म[6] की,
बिरला गुरूमुख ही उसे, सुनता है मज़बूत,
पैरों में जो प्रेम का, पहने जूता नूत,[7]
सम बरते सपूत, 'सामी' भगा द्वैत कुती।

---

1 स्वाग, वेष, 2 छैला, सजीला 3 सुदृढ. 4 सराहना, 5 एक पक्षी, जिसके सबध में कहा जाता है कि सदैव वह आकाश मे रहता है, और वही अंडे देता है. 6 भेद, रहस्य, 7 नया, नूतन, अनूठा.
7 नूतन, नया, अनूठा

(6)

अवधूती ऐन,[1] वाक्य कहें वेदान्त के,
कोई जागृत सूरमा, 'सामी' समझे सैन,[2]
देखे वह सम सूर्य को, उठा निर्मल नैन,
कल्पित काली रैन,[3] पूर्ण निकाले मन से।

(7)

अवधूत आसन,[4] लगाते उस पद में,
जहां 'तू' 'मैं' नहीं, और न जाति वर्ण,
अंधेरा न प्रकाश है, चुप्पी और न कथन,
मिटा जन्म मरन, शीतल हुए 'सामी' कहे।

(8)

अवधूत आसन, लगाते उस पद में,
मिटा जिन के मन से, भुलावा भ्रम,
'सामी' स्वतः देखते, परमेश्वर पूरन,
रती मासा मन,[5] सभी सहारे जिसके।

(9)

कहते हैं अवधूत, एक अकेली आत्मा,
बिरला गुरूमुख मन को, रखता है मज़बूत,[6]
लेन देन चुकता करे, रखे न कोई छूत,[7]
'सामी' वही सपूत, सोता सुषुप्ति सेज पर।

---

1 ठीक, सटीक, 2 इशारा, सकेत, निशान, 3 रात्रि, 4 बैठक, 5 ये सभी तौल के वजन अथवा बाट है, 6 दृढ, 7 अशुद्धता,
7 अपवित्रता, अशुद्धता,

(10)

अनुभव का आराम, आया जिस अवधूत को,
मिटी उसके मन से, दूजी सब ख़ुदी[1] ख़ाम,[2]
दीवाने ज्यों दर दर, करता नहीं सलाम,
सर्वदा निष्काम, 'सामी' रहे स्वभाव में।

(11)

कहते सौदाई,[3] अंधे अवधूतों को,
जिसने घुस मन में लग्न, स्वतः लगाई,
अविद्या भ्रम अंदर में, रखा नहीं राई,
वाणी गंवाई, 'सामी' घुस प्रवाह में।

(12)

अवधूत अश्वमेध, करते वध कर मन का,
'सामी' चढ़ते नभ पर, तज कर विधि निषेध,
नहीं बताते किसी को, अनुभवी सुख आभेद,[4]
जैसे कहें गुरू वेद, वैसे चलें विनीत बन।

(13)

ज्यों गुलाब का फूल, देता सुगंध खिल कर,
त्यों अवधूत अनुभवी, दे उपदेश असल,
बैठा कोई विश्वास से, करके प्रीति समूल,[5]
तोड़े कल्पित शूल,[6] 'सामी' सम शीतल बने।

---

1 अहकार, 2 दोष पूर्ण, जिसमे गलती हो, व्यर्थ 3 दीवाना, पागल
4 अभिन्नता, एकत्व 5 जड़ सहित 6 कांटा,

(14)

अवधूती अपरोक्ष,[1] देखे अनुभवी आत्मा,
जाग निकाले मन से, अस्तित्वहीन द्वैत दोष,
जाने सब स्वप्न ज्यों, 'बाभन' बंधन मोक्ष,
कर के सम संतोष, सोता सहज आनन्द में।

(15)

अवधूत असल, खोजे जो घर अपना,
सुखी हुआ 'सामी' कहे, मिटा कर भ्रम कुल,
वाणी कहे असीम की, ऐन[2] अभेद अमूल्य,
ज्यों गुलाब का फूल, देता सुगंध खिल कर।

(16)

अवधूतों को आस, रहे न तिल मात्र कभी,
'सामी' जिनकी सतगुरू, काटे भ्रम फांस,
पूर्ण समझ पिया को,करें एकांत में वास,[3]
बेहद[4] करें विलास,[5] रहें अलेप आकाश ज्यों।

(17)

आश्चर्य, अवधूत, दोनों रहें अनन्त में,
सैर करें बन साक्षी, हों मर कर पूजित पूत,
लगाते संशय बिना, आनन्द का वे कूत,[6]
ताने बाने का सूत, सम समझें 'सामी' कहे।

---

1 समक्ष, प्रत्यक्ष, सामने, 2 ठीक, सटीक, 3 निवास, घर
4 असीम, 5 बहुत सुख भोग, आनन्द, 6 अनुमान, अदाज

(18)

कहते हैं अवधूत, वचन एक विश्वास का,
बिरला गुरूमुख ही उसे, सुनता है मज़बूत,
काया माया कुल से, पावन बने अछूत,[1]
गुप्त गगन में पूत, सैर करे 'सामी' कहे।

(19)

अनुभवी अवधूत, करोड़ों में एक हो,
समझे जो 'सामी' कहे, ताने बाने का सूत,
लगाता संशय बिना, अनन्त का वह कूत,[2]
सर्वदा मज़बूत, रहे स्वतः स्वभाव में।

(20)

जो बनी सो वाह, 'सामी' करे स्वीकार सब,
स्थित रहे आकाश ज्यों, मिटा चिन्ता चाह,
स्वतः सिद्ध स्वरूप की, करता सम सलाह,
यही सच्ची राह, असली अवधूतों की।

(21)

सभी को ठगे, माया सदा ममत्व से,
पड़ाव[3] डाले मन में, कोई अवधूत अगेह,[4]
जहां 'तू' 'मैं' है नहीं, और न लेप लगे,
जग मग ज्योति जगे,[5] 'सामी' सदैव अनुभवी।

---

1 अस्पृश्य, 2 अदाजा, अनुमान, 3 विश्राम हेतु रूकना, 4 जिसका घर न हो, 5 जले, जागे अर्थात् प्रज्वलित हो

साधुजन

(1)

करूं क्या स्तुति, साधु जन की मुख से,
मन बुद्धि वाणी से परे, पहुंच सके न मति,[1]
साधु जन की गति,[2] 'सामी' समझे साधु जन।

(2)

हैं ये निर्मल धन, साधु जन संसार में,
उज्वल आत्म ज्ञान की, वर्षा करें सघन,
अविद्या मैल अंदर की, धोकर करें पावन,
उपजाते लगन, 'सामी' सहज स्वरूप की।

(3)

चलते उलटी चाल, साधु जन संसार में,
पार करें सागर को, क्षण में मार उछाल,[3]
मिटा बैठे मन से, 'सामी' सब ख़याल,[4]
रहते लाल गुलाल, सदैव अपने हाल में।

(4)

माया में उदास, 'सामी' रहते सत्पुरूष,
जन्म मरण दुख सुख की, मन में रखें न आस,
साक्षी जानें सब में, हों दासों के दास,
काट अविद्या फांस, चढ़ें ज्ञान के नभ पर।

---

1 समझ, अकल, बुद्धि 2 दशा, हालत, स्थिति 3 कुदान, 4 विचार

(5)

वही सयाना, साधु जन संसार में,
जो घर द्वार बेच कर, बनाये धन अपना,
'सामी' रखता सिर पर, प्रभु का कहना,
लगा बिछौना, सोता सुषुप्ति सेज पर।

(6)

सदा ही निर्मल, साधु जन संसार में,
लेप न लगे उसको, ज्यों जल में अलेप कमल,
शुद्ध बरते वह सब से,'सामी' बिना ख़लल,[1]
अनुभव रूप अचल, कम ज़्यादा होता नहीं।

(7)

साधु जन सालिस,[2] करोड़ों में एक हो,
जाग चढ़े जो नभ पर, तजे ऊँघ आलस,
रहता माया मोह से, मुक्त वही ख़ालिस,[3]
विश्व का वारिस, 'सामी' समझे प्रभु को।

(8)

हरिजन खोल दुकान, बैठे सौदे सार का,
रखें तराजू सम की, सम का बांट सुजान,
आये जो इच्छुक छोड़कर, झूठ कपट अभिमान,
'सामी' उसे सामान, देते सिर तुल्य तौल कर।

---

1 रूकावट, 2 मध्यस्थ, पच, 3 शुद्ध

(9)

जिस साधु को सुधि, हुई स्वतः स्वरूप की,
उसकी दरस दरिया में, डूब गई बुद्धि,
रहे क्षमा खुमार में, ले 'बाभन' रिद्धि सिद्धि,[1]
जग कर जीते निधि,[2] चढ़ बैठे चहुंडोल पर।

(10)

दीपक से दीपक, जल कर उस जैसा हुआ,
वैसे मिल कर साधु से, साधु बना सेवक,
तिल मात्र भी न रहा, 'सामी' फेर फ़रक,[3]
चाहे कहें अनाअल हक़,[4] चाहे बोलें राम राम।

(11)

माया में उदास, रहे साधुजन सूरमा,
आकर रहस्य मय लगी, जिसको प्रेम प्यास,
'सामी' मिल स्वरूप से, बना एकांती[5] ख़ास,
बेहद करे विलास,[6] चढ़ कर चेतन नभ पर।

(12)

साधु जन सुगम, मार्ग बताते मोक्ष का,
'सामी' बिरला सूरमा, रखे मन में मर्म,
काटे सब कल्पना, जीते अमोलक जनम,
पूर्ण परमात्म, समझे जाननहार[7] को।

---

1 स्मृद्धि और सफलता, 2 खजाना, 3 अंतर, 4 अरबी भाषा का शब्द अर्थात मै ब्रह्म हू, 5 भक्त जो भगवत्प्रेम प्रकट न करता फिरता, 6 आनद, 7 समझने वाला, जानकार, प्रभु

(13)

साधु जन सचियार,[1] झूठ न बोले किसी से,
जिसको देता सतगुरू, ज्ञान की मति अपार,
'सामी' करता सब में, प्रभु का दीदार,
सदा रहे फुलवार,[2] स्वतः ही स्वभाव में।

(14)

साधु जन सुजान, अचानक आकर मिला,
उसने पिला प्रेम रस, किया वेद बखान,
अविद्या तमस नहीं रही, दिखा चेतन भान,
'सामी' सर्व जहान, रहे सहारे जिसके।

(15)

साधु जन सुजान, करते नहीं कल्पना,
जिन को दी सतगुरू ने, पक्की प्रेम पहचान,
'सामी' मिले स्वरूप से, मिटा कर अनुमान,
रहते बीच जहान, सदा अलेप आकाश ज्यों।

(16)

साधु जन सर्राफ़, करोड़ों में एक हो,
जग[3] कर वेद विधि से, छोड़े खोट खिलाफ़,[4]
अन्दर बाहर आत्मा, 'सामी' देखे साफ़,
करे जगत् को माफ़, ख़ुश हो बैठा स्वयं में।

---

1 सच्चा, सत्यवादी, 2 हर्षित, प्रफुल्लित 3 जागकर, 4 विरोध, खिलाफत.

सन्त

(1)

जो भी जिज्ञासी, आवे इस स्थान पर,
उसको अपने देश का, बनवाऊँ वासी,
जहां 'तू' 'मैं' है नहीं, फंद न है फांसी,
अलख अविनासी, वहां रहे 'सामी' कहे।

(2)

सन्तों की स्तुति, कैसे करूं ज़बान से,
ख़ुश हो परमार्थ[1] करें, 'सामी' नाना भांति,
जप तप साधन योग यज्ञ, वैराग्य भक्ति,
पहुंच सके न मति, उन्हीं के उस रूप को।

(3)

ऐसे पुरूष दयाल, 'सामी' हैं ये सन्त जन,
जो मिलवाते प्रभु से, काटें दुख जंजाल,
अविद्या का अन्दर में, रखते नहीं ज़वाल,[2]
हो गये लाल गुलाल, उनसे मिलकर लोग कई।

(4)

बोले सुनाये, सन्त दिखाये समता,
'सामी' बिरला सूरमा, घर में घुस जाये,
चढ़ कर वह चहुंडोल[3] पर, पूर्ण पद पाये,
उसे नज़र आये, चहुं दिश प्रभु सामने।

---

1 दान पुण्य, मोक्ष, 2 अवनति, जंजाल, 3 झूला

(5)

श्रवण और कहन, रीता ये कार्य करे,
'सामी' कहते सन्त जन, पाकर पद पूरन,
मिटे जिसके मन से, भुलावा भटकन,
वही आवागमन, देखे नहीं आकाश में।

(6)

अंग रहित अक्षर, सन्त दिखाते सब को,
समझे कोई 'सामी' कहे, जागृत योगेश्वर,
देखे जो अभेद बन, बेगमपुर नगर,
नहीं भटकता नर, भुलक्कड़ ज्यों पूर्व पश्चिम।

(7)

बेहद बेपरवाह,[1] 'सामी' दिखते सन्त जन,
रखें न तिल मात्र कभी, चित में चिन्ता चाह,
चढ़ते अनुभवी नभ पर, ले सच्ची रहन राह,
डालें जहां निगाह,[2] वहां प्रभु जी सामने।

(8)

भेद बिना भगवान, सन्त दिखाते सब को,
समझ कर, 'सामी' हुए, प्रेमी जन मस्तान,
लीन रहते लक्ष्य में, देखें जाग जहान,
करते अमृत पान, स्थित हुए आकाश ज्यों।

---

1 निश्चिंत, बेफिक्र, 2 दृष्टि

(9)

भारी भूत प्रेत, लोभ लगा है लोगों को,
काया माया कुल से, सदैव रखते हेत,[1]
रहें अलेप आकाश ज्यों, 'सामी' सन्त सचेत,
देखें वे अद्वैत, अंदर बाहर आत्मा।

(10)

भक्ति भागवती, सन्त सिखाते सब को,
समझे कोई 'सामी' कहे, निपुण मुहब्बती,
मिटी जिसके मन से, अविद्या पगली अति,
पाकर प्राण पति, स्थित हुआ आनन्द में।

(11)

आया नागर नट, बेख धर कर बाज़ार में,
खोल बैठा कर्म का, 'सामी' हरकत[2] हट्ट,[3]
सत्पुरूषों ने कर दिया, पटल हटा प्रकट,
तराजू और बट,[4] फेंक दिया प्रवाह में।

(12)

वही सन्त महन्त, जो रखे शांति अंदर में,
'सामी' देखे सब में, बिना भेद भगवन्त,
गावे नित बसन्त,[5] प्रसन्न होकर स्वयं से।

---

1 हेतु, उद्देश्य, मतलब, अभिप्राय, 2 बुरी चाल, 3 हाट, दुकान, 4 बाट, बटखरा, 5 एक राग का नाम, फाग

(13)

अनुभवी अतीत,[1] करोड़ों में एक हो,
मिल कर साधु संग जो, जीते मन अजीत,
सम देखे जो हर जगह, प्रभु अपना मीत,
'सामी' पाक[2] पलीत,[3] सभी सहारे जिसके।

(14)

नाना रूप धरे, सन्त दिखावे सार को,
भय, सांत्वना, भावना, वचन विलास[4] करे,
करोड़ों में एक ही, समझे अजर जरे,
जिसका पटल परे, 'सामी' करता सतगुरू।

(15)

होली खेलें सन्त, 'सामी' सारंगधर[5] से,
डालें रंग रहन का, गावें अनुभवी गीत,
माधव ऊधव साथ में,देखें प्रेमी महंत,[6]
पूछें अलेप अचिंत,[7] मार्ग सुख स्वरूप के।

(16)

होली खेलें सन्त, सदैव सारंगधर से,
डालें रंग रहन का, गावें अनुभवी गीत,
प्रसन्न होकर देखते, 'सामी' जीव जंत,[8]
रहें अलेप अचिंत, पियें पिलावें प्रेम रस।

---

1 सन्यासी, साधु, यति, 2 पवित्र, 3 दुष्ट, पाजी धूर्त 4 आनद, 5 विष्णु भगवान, श्री कृष्ण, आकाश, 6 मठाधीश, श्रेष्ठ, मुखिया, 7 चिता रहित, 8 जंतु

(17)

हमेशा होरी, 'सामी' खेलें सन्त जन,
सुनी जिनने लक्ष्य की, नस नस में लोरी,
निकालते कल्पित की, चित से सब चोरी,
सदैव कटोरी, भर कर पीते प्रेम रस।

(18)

हमेशा होरी, 'सामी' खेलें सन्त जन,
निकाल कल्पित झूठ की, चित से सब चोरी,
जोड़ बैठे लक्ष्य से, सम सूक्ष्म डोरी,
अनुभवी अघोरी,[1] पल पल पीते प्रेम रस।

(19)

झूठे करें करार,[2] कभी बैठते हैं नहीं,
सत्य समझ संसार को, खप कर[3] होते ख़्वार,[4]
स्थित रहें आकाश ज्यों, 'सामी' सन्त सचियार,[5]
अन्दर बाहर यार, प्रत्यक्ष देखें अपना।

(20)

बल होते निर्बल, 'सामी' दिखते सन्त जन,
मारें मन मवासी को, जीतें पांचों दल,
पृथ्वी और आकाश का,ज्ञान रखें व्याकुल,
निकाल सब ख़लल,[6] नम्र दिखते नीर ज्यों।

1 अघोर पंथी, औघड़, 2 आराम, 3 समाप्त होकर, 4 तिरस्कृत, 5 सत्यवादी, सच्चे, 6 रूकावट

(21)

सन्त शुभ कर्म, करते सोच समझ कर,
शील संतोष निर्बैरता, सेवा दया धर्म
तप तीर्थ यज्ञ हवन व्रत, 'सामी' प्रेम मर्म,
मिटा भुलावा भ्रम, करें कृतार्थ सबको।

(22)

सन्त दया धारे,[1] सार दिखावे सब को,
शोधन करे कोई सूरमा, विधि से विचारे,
प्रत्यक्ष पूर्ण आत्मा, दीप जला निहारे,[2]
संशय निवारे,[3] सुखी हो 'सामी' कहे।

(23)

सन्त कहें शाबास, 'सामी' उसी शूर को,
जो लगा पट भ्रम को, पलट चढ़े आकास,
आनन्द ले दर्शन का, सम बन सांसों सांस,
कार्य पूर्ण कर दास, सोवे सुषुप्ति सेज पर।

(24)

फैला जगत् न्यारा, सब है कारण सन्त के,
बहे आत्म राम की, भक्ति रस धारा,
समझे अपनी देह से, प्रियतम प्यारा,
बता दिया सारा, 'सामी' हाल हरिजन[4] को।

---

1 धारण करे, 2 ताके, देखे, 3 निवारण करे,मुक्त करे, 4 प्रभु के भक्त

(25)

आत्मा अंदर, सन्त दिखाते सब को,
मूर्ख ढूंढे बुद्धि बिन, दुविधा से बाहर,
आती अनुभवी रोशनी,[1] प्रेमी को नज़र,
सदैव तर–बतर,[2] 'सामी' रहे स्वभाव में।

(26)

अगम्य पद सुगम, सन्त दिखाते सब को,
समझे कोई 'सामी' कहे, प्रेमी जन मर्म,[3]
निकाले अस्तित्व से, दीवाने ज्यों दम,[4]
चाहे करे कर्म, स्थित रहे आकाश ज्यों।

(27)

ऐन[5] देख अधिकार, सन्त दिखाते समता,
'सामी' सिर को काट कर, पीते प्याला सार,
मूर्ख बुद्धि मर्म बिन, दर दर होते ख़्वार,[6]
अंधों को एतबार,[7] कभी भी आता नहीं।

(28)

ज्ञात रूप गोपाल, सन्त दिखाते सब को,
समझे कोई 'सामी' कहे, आचरण रसाल,
जिसको किया गुरू ने, नज़र से निहाल,[8]
काट कल्पित काल, आनन्द लेता मुक्ति का।

---

1 प्रकाश, उजाला, 2 भीगा हुआ, सराबोर, 3 तत्व, रहस्य, सार, 4 श्वास,
5 ठीक, सटीक, 6 तिरस्कृत, 7 विश्वास, 8 संतृष्ट, तृप्त,

(29)

पल पल पुकारे, बुला दिखाये सम सन्त,
समझे कोई 'सामी' कहे, हृदय में धारे,[1]
जग कर देखे सपना, संशय निवारे,[2]
चढ़कर चौबारे,[3] दस दिश देखे प्रभु को।

(30)

सदैव सन्त अचाह, चाह न रखते चित में,
पाकर सुख स्वरूप का, हों 'बाभन' बेपरवाह,
उन से सच्चे प्रेम से, लो सेवक बन सलाह,
बता अनुभवी राह, पहुंचायेंगे पद में।

(31)

सर्वदा शीतल, रहते सन्त स्वभाव में,
तपते[4] खपते[5] हैं नहीं, देख माया छल,
'सामी' खाते खुशी से, बोध[6] वृक्ष का फल,
आठों प्रहर अचल, प्रभु देखते सब में।

(32)

सदा ही बैराग, रखते सन्त अंदर में,
साफ़ करते दिल को, धोकर जग के दाग़,[7]
'सामी' अविद्या नींद से, जाते हैं वे जाग,
सहज खेलते फाग,[8] चढ़ कर नूर महल[9] पर।

---

1 धारण करे, 2 मुक्त करे, निवारण करे, 3 कोठे के ऊपर की खुली कोठरी, 4 गर्म होते, 5 समाप्त होते, 6 ज्ञान, धैर्य, 7 निशान, 8 होली का खेल, 9 प्रकाश महल,

(33)

समझते हैं अर्थ, सन्त सही परमार्थ का,
मैल मिटा कर मन की, 'सामी' हुए समर्थ,
लेप न लगे उनको, चाहे बतायें अकथ,[1]
सब को देकर हत्थ,[2] पार लगाते मांझी बन।

(34)

अस्तित्वहीन अज्ञान, खेल रचाता रंग भरा,
सत्य समझ 'सामी'कहे, निरति[3] करें नादान,
हो जाते निःस्पंद[4] वे, देख सन्त सुजान,
रहते बीच जहान, सदा अलेप आकाश ज्यों।

(35)

विचित्र गवाह, दिखते संत स्वरूप के,
साक्ष्य देकर सत्य का, 'सामी' दिखाते राह,
जोडें अपने आप से, निकाल चिन्ता चाह,
क्या मैं करूं सराह,[5] करूं परन्तु न कर सकूं।

(36)

शिव से पार्वती, पूछे समाचार संतों के,
'सामी' उनका हाल कह, जिनको रहन रती,
प्रसन्न रहते स्वयं में, पाकर प्राण पति,
भ्रम चिन्ता कुमति, मिटे जिनके मन से।

---

1 जिसे कहा न जा सके, 2 हाथ, 3 अप्रेम, 4 स्पंद रहित, शांत,
5 सराहना, बड़ाई, प्रशंसा,

(37)

बिक गये अज्ञानी, हत्थे चढ़ शत्रुओं के,
सदा करते चाह वश, सम्मुख सलामी,
करोड़ों में एक ही, सन्त बचा 'सामी'
जिसको आरामी, करें रीझकर प्रभु जी।

(38)

सब से सन्त दक्ष, बांटें सार उदार बन,
करोड़ों में एक ही, दिखाता है देख,
सुखी हुआ 'सामी' कहे, चेतन रस को चख,
जैसे अनल[1] पख,[2] पलट चढ़े आकाश पर।

(39)

सन्तों ने छिपाया, ज्ञान पदार्थ मूर्ख से,
सेवक को 'सामी' कहे, लक्ष्य दिखाया,
न्याय कर अधिकार से, सब को समझाया,
समझ कर घर आया, प्रत्यक्ष देखा सामने।

(40)

आत्मा पद सुभर, सन्त न छोड़ें एक क्षण,
मोती खाता मुक्त जन, मिटा दुख और डर,
क्षण क्षण झूले प्रेम से, समझ अपना घर,
'सामी' अजर अमर, पुरूष देखे परमात्मा।

---

1 चिडिया विशेष, कहते हैं कि वह सदा आकाश में उडा करती है और वही अंडे देती है, 2 पक्षी,

(41)

हार जीत हरिजन,[1] सोचे नहीं अंदर में,
देखा जिसने गगन ज्यों, परमेश्वर पूरन,
पिये पिलावे प्रेम रस, मिटा कर मनन,[2]
'सामी' तन मन धन, करे निछावर[3] सुख पर।

(42)

हरिजन हठीला, आकर अचानक मिला,
कृपा कर जिसने किया, रंग कर रंगीला,[4]
सुखी हुआ 'सामी' कहे, कुटुंब कबीला,
बीच में वसीला,[5] बचा नहीं भ्रम का।

(43)

जो भी भक्ति करे, संतो सत्पुरूषों की,
'सामी' श्रधा प्रीति से, तन मऩ भेंट धरे,
भुला अपने आप को, अनुभवी अजर जरे,
सहज सिन्धु तरे,[6] अविद्या के अहंकार का।

(44)

सन्त शरण आया, 'सामी' कई दर[7] भटक कर,
देख प्यास उस जीव की, गले लगाया,
कर के कृपा उस पर, की सम शीतल छाया,
सहज ही समाया, लवण घुल कर सिंधु में।

---

1 प्रभु भक्त, 2 चिंतन, अध्ययन, 3 कुर्बान, न्योच्छावर 4 रसिक, मौजी, सुंदर,
5 संबंध, लगाव, ज़रिया, 6 तैर कर पार हो, 7 द्वार

(45)

सन्त मिला सालिस,[1] ज्ञान का सूर्य उदय हुआ,[2]
तिल मात्र भी न रहा, अंधेरा आलस,
पाया नूर महल से, ख़ज़ाना ख़ालिस,[3]
बन गया वारिस, 'सामी' अपने घर का।

(46)

दिखते सब दुखी, शान्ति छोड़ जगत् में,
ज्ञानी ध्यानी गृहस्थी, सब हैं माया मुखी,
किसी को नहीं छोड़ती, चिन्ता चाह भूखी,
होता सन्त सुखी, संशय बिन 'सामी' कहे।

(47)

हुआ शीतल मन, सहज मिलकर सन्त से,
'सामी' देते घर की, निकाल कील सज्जन,
असली निधि ज्ञान की, घुस कर पाते रतन,
भगी छुड़ा दामन, अविद्या रांड डर कर।

(48)

'सामी' सत्पुरख,[4] रहता वेद विचार से,
दया रखता दिल में, सबका मिटाये दुख,
पिये पिलावे प्रेम रस, ले समता का सुख,
सर्वदा सन्मुख, रहे शुद्ध स्वरूप के।

---

1 मध्यस्थ, 2 निकला, उगा, 3 विशुद्ध, 4 सत्पुरुष

(49)

जिसको लात लगी, सच्ची साधु संग की,
सहज उसके मन से, 'सामी' भ्रांति भगी,
देखा उसने आंखों से, अनुभव ज्योति जगी,
करता नहीं ठगी, किसी से तिल मात्र भी।

(50)

हरिजन हरि धाती,[1] खेलें सभी ख़याल[2] में,
रहें अलेप कमल ज्यों, 'सामी' सजाति,[3]
सुन कर बातें उनकी, शीतल हुई छाती,[4]
पाते वहां कांति,[5] जहां न कहता कोई कुछ।

(51)

सदा रहते प्रसन्न, हरिजन अपने हाल में,
स्थित हुए अगम्य में, पाकर राम रतन,
सार देखते सब में, विचित्र अनन्य जन,
'सामी' उनका मन, अचल चलता है नहीं।

(52)

कितनी बड़ाई, करूं मैं सत्पुरूषों की,
समदर्शी शीतल सदा, सब के सुखदाई,
ममता मैल अंदर में, रखते नहीं राई,[6]
'सामी' सदा ही, करें उपकार अचाह बन।

---

1 विधाता, ब्रह्मा, पालक, 2 विचार, 3 एक ही जाति के, 4 सीना, 5 आभा, सौंदर्य, 6 सरसों का छोटा दाना, बहुत कम मात्रा,

(53)

जागे बिना जगत्, नहीं भूलता भ्रम का,
यूं कहते हैं अनुभवी, प्यारे सन्त सुपत,[1]
मिटा जिनके मन से, 'सामी' है ममत्व,
सर्वदा उपरत,[2] रहते नित आकाश ज्यों।

(54)

हरिजन खेलें फाग, सदैव मिल कर हरि से,
लगा रंग रहन का, गावें अनहद[3] राग,
धोकर दुविधा दाग़, 'सामी' पीते राम रस।

(55)

'सामी' जाता जाग, करोड़ों में एक ही,
मिटा जिसके मन से, ग्रहण और त्याग,
खेले अनुभवी फाग, सदैव अपने आप से।

(56)

भक्ति योग कर्म, क्यों कहते हैं सन्त जन,
युक्ति से वे जोड़ कर, मन को देते मर्म,
छोड़ भुलावा भ्रम, 'सामी' चढ़ते नभ पर।

(57)

द्वैत में अद्वैत, सन्त दिखाते सब को,
करोड़ों में एक ही, बनता शिष्य सचेत,
समझे अनुभवी खेत, 'सामी' मानुष देह को।

---

1 इज्ज़त वाले, ईमानदार, सच्चे, 2 उदासीन, विरक्त, 3 सचेत, चेतना युक्त, चेतन,



10 जून 1944 ई को सिंध के एक छोटे से गाँव दर्स (तहसील मोरो, जिला नोशहरो फिरोज) में जन्मे खीमन यू. मूलाणी, सिंधी भाषा के प्रतिष्ठित कवि, कहानीकार एवं अनुवादक हैं। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर इनकी कहानियां तथा आलेख प्रसारित होते रहे हैं। वे भारत तथा विदेश की प्रतिष्ठित सिंधी एवं हिन्दी पत्र पत्रिकाओं में नियमित रूप से योगदान देते रहे हैं।

खीमन यू. मूलाणी को उनकी पुस्तकों पर एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली तथा राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद्, बडोदा (भारत सरकार के उपक्रमों) द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है। वे म.प्र. सिंधी साहित्य अकादमी (म.प्र. शासन का उपक्रम) द्वारा भी सम्मानित हो चुके हैं।

खीमन यू. मूलाणी राईटर्स एवं आर्टिस्ट्स वेल फेयर फाउंडेशन मुम्बइ एवं साहित्य कलश, इन्दौर द्वारा भी आजीवन साहित्यक योगदान के लिये पुरस्कृत एवं सम्मानित हो चुके हैं।

खीमन यू. मूलाणी प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय स्तर के कई साहित्यक तथ सांस्कृतिक संगठनों से जुड़े हुए हैं। अभी तक इनकी कई सिंधी पुस्तकें तथ हिन्दी अनुवाद की तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

लक्ष्मी पब्लिकेशन

न्यू-ए 14/134, बैरागढ़, भोपाल - 462 030

मोबाईल : 098273 43735